सत्यमेव जयते

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

जनवरी–मार्च, 2020

कुम्भलगढ़ किला, राजस्थान
विश्व की दूसरी सबसे लम्बी दीवार

सत्यमेव जयते

वर्ष 5 • अंक–19 जनवरी–मार्च, 2020

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

अतुल्य भारत

(पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका)

संरक्षक
श्री योगेन्द्र त्रिपाठी
सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता
श्री ज्ञान भूषण
आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक
श्रीमती संतोष सिल्पोकर
संयुक्त निदेशक (रा.भा.), पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रबंध–संपादक
श्री मोहन सिंह
कंसल्टेंट, पर्यटन मंत्रालय

अन्य सहयोगी
श्री राज कुमार
निजी सचिव

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें

संपादक,
अतुल्य भारत
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली – 110001. दूरभाष : 011–23724155
ई–मेल– editor.atulybharat@gmail.com

डिजाइनिंग एवं प्रिंटिंग
करंट प्रिन्ट प्रोडक्शन्स् (प्रा.) लि.

सूचनाओं के प्रचार हेतु नि:शुल्क वितरण

इस बार पढ़िए...

वर्ष 5 • अंक–19 जनवरी–मार्च, 2020

05 संपादक की कलम से

07 कोरोना : सतर्कता जरूरी

11 चंदेरी

27 कोविड-19 महामारी और योग व आयुर्वेद

33 पर्यटकों के लिए विभिन्न आकर्षण - आंध्रप्रदेश

40 छुई-मुई

44 कोरोना महामारी और पर्यटन प्रभाव और चुनौतियां

52

कोरोना से कांप रहे शब्दकोष

56

जवाई हिल्स

66

प्राकृतिक की गोद में राजसी सुन्दरता

74 पर्यटन = H3 + NAC

76 कैसे कैसे दीवाने फिल्म वालों के

81

कोरोना – 102 वर्ष पुराना दर्द

कविताएं

51. राजेश सिंह
55. सुशांत सुप्रिय तथा डा. विश्वरंजन
83 गुलजार

84

भारतीय संस्कृति में वृक्ष-पूजा

आइए याद इन्हें भी कर लें

88

92 पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार

परामर्शदाता व प्रधान संपादक
ज्ञान भूषण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान सम्पादक की कलम से...

विश्व में एक ऐसी महामारी का प्रसार हो रहा है जिसकी अभी तक दवा उपलब्ध नहीं है। इस महामारी को हम सभी कोरोना वायरस के नाम से जानते हैं। अतुल्य भारत के 19वें अंक में लेखकों ने अपने विचारों के माध्यम से कोरोना वायरस के कुप्रभावों पर जानकारियां देते हुए हमें इससे सावधान रहने के लिए आगाह किया है। इस कड़ी में श्री क्षेत्रपाल शर्मा का आलेख 'कोरोना – सतर्कता जरूरी', डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ का आलेख 'कोविड–19 : महामारी और योग व आयुर्वेद, श्री बाबू लाल का लेख 'कोरोना महामारी और पर्यटन – प्रभाव और चुनौतियां', श्री बालकृष्ण दाधिच का आलेख 'कोराना से कांपते शब्दकोश' तथा श्री नीरज त्यागी ने '102 वर्ष पुराना दर्द' के माध्यम से सुधि पाठकों को कोरोना के बारे मे जानकारी देते हुए इस महामारी के काल में सतर्क रहने के बारे में जानकारी दी है।

हमेशा की तरह इस बार भी अतुल्य भारत में कुछ ऐसे पर्यटन गंतव्यों की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है जिनके विषय में हमने बहुत कम सुना है। अज्ञात और छोटे होने पर भी ऐसे पर्यटन स्थल हमारे घूमने के आनंद को कई गुणा बढ़ा देते हैं।

मध्य प्रदेश के पर्यटन गंतव्यों की अपनी एक अलग पहचान है फिर भी कुछ स्थान ऐसे हैं जिनके बारे में पर्यटकों को बहुत ही कम जानकारी है। एक ऐसा ही गंतव्य है, चन्देरी। अधिकतर लोगों को चन्देरी की साड़ियों के बारे में ही पता होगा, लेकिन यहां विरासत और धार्मिक स्थानों की भरमार है। श्रीमती बीना सबलोक पाठक ने अपने आलेख में चन्देरी साड़ियों के साथ ही साथ चंदेरी के इतिहास तथा समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को रेखांकित किया है।

आंध्र प्रदेश अपनी परंपरा, समृद्ध संस्कृति और विरासत के लिए जाना जाता है। हरे भरे प्राकृतिक नजारों के साथ एक समृद्ध वास्तुकला को समेटे असंख्य प्राचीन मंदिर इस प्रदेश को पर्यटन का एक दिलचस्प स्थान बनाते हैं। संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव श्री राजेश कुमार सिंह ने आंध्र प्रदेश के पर्यटन के बारे में जानकारी दी है।

यदि आप वन्य जीवों को खुले में अपने आस पास देखना चाहें तो चलिए आपको जवाई ले चलते हैं। श्री राम सिंह लाखोटिया ने राजस्थान के वन्य जीवन की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए इस क्षेत्र के इतिहास, ग्रामीण संस्कृति तथा आसपास पर्यटकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्रदान की है। हम कह सकते हैं कि ऐसे पर्यटन स्थल निश्चित रूप से हमारे घूमने के आनंद को कई गुणा बढ़ा देते हैं।

इसके अलावा श्री सुशान्त सुप्रिय की एक मार्मिक कहानी 'छुई मुई' दी जा रही है। कोरोना पर जाने माने कवियों की कविताओं के साथ ही कुछ अन्य कविताएं भी प्रस्तुत की गई हैं। साथ ही, हर बार की तरह, पर्यटन मंत्रालय की गतिविधियां और समाचार भी प्रस्तुत किए गए हैं।

पर्यटन मंत्रालय द्वारा देश में पर्यटन के संवर्धन के लिए किए जा रहे सतत प्रयासों में ''अतुल्य भारत'' पत्रिका भी एक कड़ी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी है। इस प्रयास में कई जाने माने लेखक तथा ब्लॉगर भी इस पत्रिका से जुड़ कर भारतीय पर्यटन को एक नई दिशा प्रदान करने में अपना योगदान कर रहे हैं। इसके अलावा हम मंत्रालय के उन अधिकारियों तथा कर्मचारियों के भी आभारी हैं जो इस क्षेत्र में भारतीय पर्यटन के बारे में जानकारी प्रदान करते हुए अपनी लेखन प्रतिभा प्रस्तुत कर रहे हैं।

हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं जिनके प्रोत्साहन और विचारों से हमें हर बार एक नई उर्जा मिलती है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।

मैं उन सभी लेखकों, सुधि पाठकों के सहयोग तथा गणमान्य व्यक्तियों को धन्यवाद करते हुए उनके प्रोत्साहन के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं। मुझे आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा।

ज्ञान भूषण

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

कोरोना : सतर्कता जरूरी

–क्षेत्रपाल शर्मा

कोराना संक्रमितों की बढती संख्या अब डराने लगी है। अनलॉक–1 में छूट के साथ संक्रमण में जिस प्रकार अचानक तेजी आई है वह चिंता का विषय है। सक्रिय और नए मरीजों की सूची में भारत पूरे विश्व में तीसरे नम्बर पर आ चुका है। कोरोना से मृत्यु दर में थोड़ी कमी आई है लेकिन इससे सबसे अधिक मौते होने वाले देशों में अब भारत का भी नाम आने लगा है। अफसोस की बात यह है कि आज भी बहुत से लोग, यह जानते हुए भी कि थोड़ी सी भी लापरवाही से यह वायरस मनुष्य को अपनी चपेट में लेता है, सरकार द्वारा बताई जा रही 'सोशल डिस्टेंसिंग' की धज्जियां उड़ाते हुए लोग सड़कों और बाजारों में घूम रहे हैं। आज भी लोग लॉक डाउन को एक मजबूरी समझ रहे हैं, यही कारण है कि जैसे ही थोड़ी छुट मिलती है कि सड़कों पर भीड़ लगने लगती है। इसे देखकर उत्पन्न हुई भयावह स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है।

कोविड वायरस की जांच का परिणाम देर से आना, सीमित संख्या में जांच होना जैसी अनेक कमियां अब भी मौजूद हैं। इससे आज तक संक्रमण की सही दिशा का पता नहीं चल पाया है। इतने दिनों से लोगों को सीख मिल गई होगी कि दूरी रखना ही एकमात्र उपाय है।

*सेवानिवृत संयुक्त निदेशक,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली

छपते–छपते :

आर्थिक समस्याओं और लोगों की परेशानियों को ध्यान में रखकर सरकार ने लॉक डाउन हटाने का निर्णय लिया है। पर आज भी सबसे बड़ा प्रश्न है कि कहीं यह अनलॉक देश पर भारी न पड़ जाए। पॉजिटिव मामलों की संख्या लगातार बढ़ना एक गम्भीर समस्या बन रहा है। हम देख रहे है कि जहां कोरोना के मामले नहीं थे वहां भी संक्रमण के समाचार आ रहे हैं। कोराना का संकट अब गांवों को भी पैर पसार रहा है और बहुत से लोग इससे प्रभावित होने लगे हैं।

ताजा अध्ययनों से संकेत मिले हैं कि कोरोना महामारी के लंबे समय तक बने रहने के आसार हैं बल्कि इसमें इजाफा होने के संकेत भी मिलने लगे हैं। ऐसी स्थिति में हमें इससे मुकाबले के लिए पहले से ही तैयार रहने की जरूरत है। शोधकर्ताओं का कहना है कि दुनिया भर में सिर्फ एक दौर की सामाजिक दूरी से काम नहीं चलेगा। हमें अगले दो साल तक बचाव के इंतजाम करने होंगे। उनका अनुमान है कि भौगोलिक स्थिति, रोकथाम की नीतियां, सामाजिक दूरी और हर्ड इम्युनिटी जैसे अलग–अलग कारकों के साथ ही मौसम पर भी संक्रमण का भविष्य निर्भर करेगा।

लिहाजा, निकट भविष्य में संक्रमितों की संख्या कम होने मात्र से निश्चिंत होकर नहीं बैठना चाहिए। आगे भी संक्रमण रह–रहकर सामने आने का खतरा हो सकता है।

एक अध्ययन में यह भी दावा किया गया है कि कोरोना वायरस के संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए एक–दूसरे से छह फीट की दूरी बनाने का नियम नाकाफी है। क्योंकि यह जानलेवा वायरस छींकने या खांसने से करीब 10 फीट की दूरी तक जा सकता है। वैज्ञानिकों ने विभिन्न वातावरणीय परिस्थितियों में खांसने, छींकने और सांस छोड़ने के दौरान निकलने वाली संक्रामक बूंदों के प्रसार का मॉडल तैयार किया है और पाया कि कोरोना वायरस सर्दी और नमी वाले मौसम में तीन गुना तक फैल सकता है।

कोविड–19 को रोकने के लिए रोजमर्रा के कार्यों में अपने और सामने वाले व्यक्ति के बीच जगह बनाए रखना एक सबसे अच्छा साधन है। हमें खुद को इस वायरस के संपर्क में आने से बचाना होगा और स्थानीय और देश और दुनिया में इसके प्रसार को धीमा करना होगा। चूंकि किसी भी व्यक्ति से वायरस फैल सकता है, इसलिए घर के बाहर दूसरों के साथ निकट संपर्क सीमित करें।

ऐसे में एक खास बात पर हमें ध्यान देना होगा कि कोविड–19 से गंभीर बीमारी के नामित उच्च जोखिम वाले क्षेत्र (Red Zone) में जाने से परहेज करें। ऐसे क्षेत्र के लोगों के लिए भी सामने वाले व्यक्ति से सामाजिक दूरी रखना बहुत जरूरी और महत्वपूर्ण है। यदि हमें पहले से ही पता हो कि हमारे आसपास कोई व्यक्ति संक्रमित है, तो उससे दूर रहना ही बेहतर है।

सामाजिक दूरी वास्तव में ''शारीरिक दूरी'' है। इसका अर्थ अपने और किसी अन्य व्यक्ति के बीच एक दूरी बनाए रखना है। शारीरिक दूरी बनाए रखने के लिए:

- अन्य लोगों से कम से कम छः फीट (लगभग दो हाथ लंबाई) की दूरी पर रहें।
- समूहों में इकट्ठा होने से बचें।
- भीड़ भरे स्थानों से बाहर रहें और फिलहाल सामूहिक समारोहों आदि में जाने से बचें।

बेशक लॉक डाउन समाप्त हो गया है, मगर अब भी हमें यह सावधानियां बरतनी आवश्य हैं।

1. मास्क का उपयोग करें, जब भी घर से बाहर जाएं मास्क जरूर पहनें।
2. दिन में कई बार साबुन से हाथ धोएं या हैंड सैनेटाइजर का उपयोग करें।
3. अति आवश्यक होने पर ही घर से बाहर जाएं।
4. घर से बाहर बाजार में, कार्यालय में सामाजिक दूरी का ध्यान रखें
5. किसी से हाथ मिलाकर अभिवादन नहीं करें।
6. फिलहाल कुछ समय तक शेविंग कराने या बालों की कटिंग कराने सैलून में नहीं जाएं। घर पर स्वयं ही शेव करें (दाढ़ी बनाएं) और नाई को घर पर बुलाना हो तो कैंची, कंघी, ब्लेड आदि अपना ही उपयोग करें।
7. सेनेटाइजर और टिश्यु पेपर साथ रखें और जब जरूरी हो इस्तेमाल करें।
8. यदि सार्वजनिक परिवहन का उपयोग करते हैं, तो ऐसे वाहन में सफर करते समय सरकार/प्रशासन द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करें, कम व्यस्त समय के दौरान यात्रा करने का प्रयास करें।

समय समय पर साबुन से हाथ धोते रहें

9. बाहर से घर में आने पर तुरन्त पहले हाथ–पैर धोएं, यदि संभव हो तो घर के बाहर ही धोएं।
10. यदि किसी व्यक्ति से सम्पर्क में आने पर आपको अनमना सा महसूस हो, पूरा स्नान करे और भांप लें। यदि हो सके तो काढ़ा भी पीएं।

लॉक डाउन हो या नहीं हो, पर अगले छः से 12 महीने तक हमें यह सारी सावधानियां बरतनी जरूरी हैं।

कोरोना से बचाव : शीशे की दीवार लगे काउंटर

मास्क के बारे में कुछ विशेषज्ञों की राय है कि ऐसे मास्क का उपयोग करें, जिसे एकबार यानि घर से बाहर निकलने और वापस घर आने के बाद तुरन्त ही नष्ट किया जा सके। प्रायः अधिक महंगे मास्क को लोग नष्ट नहीं करते हैं। इससे भी संक्रमण का खतरा बने रहने की सम्भावना रहती है। इसलिए कपड़े के रुमाल का उपयोग करें और या तो उसे नष्ट कर दें अथवा कुछ देर गरम पानी में डाल कर रखें और डिटर्जेंट पावडर से धो कर धूप में सुखा कर ही पुनः उपयोग में लाएं। घर में बनाए गए मास्क का उपयोग भी किया जा सकता है। भारतीय संस्कृति में गमछे का उपयोग सदा से होता आया है, इसलिए नाक–मुंह ढकने के लिए गमछे का इस्तेमाल भी किया जा सकता है। लेकिन शर्त वही है कि गरम पानी में डिटर्जेंट पावडर से धो कर धूप में सुखा कर ही पुनः उपयोग किया जाए।

देश दुनिया में ऐसे भी लोग हैं जिनके पास कोई घर नहीं है। ऐसे बेघर इस महामारी से कैसे अपना बचाव करें? इन में से कुछ तो सड़कों पर ही रहते हैं। कुछ रात के समय स्थानीय प्रशासन द्वारा बनवाए गए रैन बसेरों में और कुछ आश्रमों आदि में रहते हैं। सरकारें भी कोविड –19 से बेघर लोगों की सुरक्षा को लेकर चिन्तित हैं। ऐसे भीड़ भरे स्थानों (रैन बसेरा और जन आश्रय) पर लोगों से सामाजिक दूरी की अपेक्षा सम्भव नहीं हो सकती है। फिर भी सरकार ने इन्हें बचाने के लिए कई सिफारिशें की थी जिनमें मास्क पहनना, भीड़–भाड़ वाली जगहों से बचने की कोशिश, अन्य लोगों से छः फीट की दूरी बनाए रखना, भोजन लेने के लिए दूर के विकल्पों का उपयोग करना और कम से कम 20 सेकंड के लिए अपने हाथों को साबुन और पानी से धोना आदि शामिल किए गए थे। यदि इन जगहों पर लोगों में बुखार, खांसी या सांस लेने में तकलीफ जैसी कोई शिकायत हो तो उन्हें अपने रैन बसेरे के प्रबंधक, आश्रय कर्मचारी या उस स्थान की देखभाल करने वाले अन्य कर्मचारी को इस बारे में बताना चाहिए। यह कर्मचारी आवश्यकतानुसार व्यक्ति की चिकित्सा आदि की व्यवस्था करेंगे।

अंत में यही कहना चाहता हूं कि देश में कोरोना के मामले हर रोज लगातार बढ़ने के समाचार आ रहे हैं। इससे निजात दिलाने के लिए कोई दवा या टीका बनने के फिलहाल आसार नहीं दिखाई दे रहे हैं। हां, कुछ सकारात्मक बातें जरूर सुनने में आ रही हैं जैसे कि विशेषज्ञों का मत है कि कोराना का असर कम भी हो रहा है। कोरोना हमारे देश में उतना मारक नहीं रहा जितना कि कुछ दूसरे, विशेषकर यूरोप के, देशों में देखा गया है। लेकिन अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है। ऐसे में एक ही चीज हमारे सामने है वह है संकल्प और व पक्का इरादा कोरोना को हराने का।

"कोरोना से डरें नहीं"

***

भूले बिसरे पर्यटन स्थल

मध्य प्रदेश

चंदेरी

–वीणा सबलोक पाठक

मध्यप्रदेश अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं और ऐतिहासिक विरासत के लिए देश विदेश में जाना जाता है। मध्य प्रदेश अनेक ऐतिहासिक घटनाओं और परम्पराओं का साक्षी रहा है। यहां के शहरों और कस्बों ने इतिहास को संजो और सहेज कर रखा है ऐसी ही प्राचीन सांस्कृतिक और ऐतिहासिक नगरी है चंदेरी।

'चंदेरी साड़ियों के लिए देश विदेश में पहचान स्थापित करने वाले इस शहर और उससे जुड़ा चंदेरी साड़ियों का इतिहास भी कम दिलचस्प नहीं है।

विंध्य पर्वत श्रृखला के चंद्राकार पर्वतों की गोद में बसा चंदेरी, मालवा और बुंदेलखंड का प्रवेश द्वार है और यही वजह है कि यहां इन दोनों संस्कृतियों की झलक देखी जा सकती है। भले ही इस नगरी की ऐतिहासिक घटनाओं के अब कुछ ही भग्नावेश बचे हों परन्तु यहां का ऐतिहासिक पारंपरिक हथकरघा उद्योग अब भी जीवित है, चंदेरी साड़ियों के रूप में। इस बात के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं कि चंदेरी में हथकरघा उद्योग की शुरुआत 13वीं शताब्दी में हुई थी। साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि शुरू में ढाका से आए कारीगरों ने चंदेरी में एक बस्ती बसाई और अपने रोजगार के लिए यहां हथकरघे लगा लिए थे। शायद यही वजह है कि चंदेरी के कपड़ों में ढाका के प्रसिद्ध मलमल की झलक दिखाई देती है। बाद में, कोष्टी बुनकर भी यहां आकर बसे और उन्होंने इस कला को अपना लिया। कहा जाता है चंदेरी का कपडा इतना महीन, मुलायम और लचीला होता था कि एक बार बांस के छोटे से टुकड़े में रख कर एक कपड़ा, अकबर को भेट स्वरूप भेज गया तो वह इतना बड़ा निकला कि उससे एक हाथी ढक गया।

जहांगीर के समय भी चंदेरी वस्त्र उद्योग के प्रमाण मिलते हैं। इस उद्योग ने मुगलकाल के दौरान जहां नई उंचाईयों को छुआ तो, वहीं इस कला का पतन भी मुगलकाल में ही हुआ। यहां जिस राजा या रजवाड़ों का शासन रहा, उन्होंने अपनी पसंद और रूचि के मुताबिक चंदेरी के हथकरघा उद्योग में बदलाव करा कर उसका विकास ही किया था।

इस बात के प्रमाण मिले हैं कि मराठा राजाओं की आन–बान और शान की प्रतीक पगडियो में भी इस कला को निखार मिला। कुछ समय बाद ही चंदेरी कपड़े में पगड़ियों के साथ साथ महारानियों के लिए साड़ियां भी बुनी जाने लगीं। यहां की पगड़ियों की खास बात यह होती थी इन्हें छः इंच के करघे पर बुना जाता था। किवदंतियों के अनुसार, इन पगड़ियों की लम्बाई 120 गज तक होती थी। उस समय में पगड़ी के सामने की ओर तुर्रा या कलगी और पीछे की ओर लहर यानि

*सम्प्रति : जानी मानी लेखिका, अतुल्य भारत में निरंतर योगदान

चंदेरी पगड़ी

लम्बा कपड़ा, जो राजसी आन–बान माना जाता था, यहां की पगड़ियों की विशेषता थी। शायद इसीलिए ग्वालियर, बड़ौदा, इंदौर, नागपुर सहित राजस्थान के कई राजघरानों में शाही पगड़ियों और साड़ियों की मांग बराबर बनी रहती थी।

समय बदला, राजा–रजवाड़ों का शासन समाप्त हो गया, फिर ब्रिटिश हुकूमत का भी अंत हुआ, परन्तु अनेक ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रही चंदेरी साड़ियां और हथकरघा उद्योग निरन्तर संघर्ष करते हुए आज भी अपने वजूद को बचाए हुए है। समय के साथ साथ इसके रंग रूप आकर –प्रकार डिजाईनों में जरूर बदलाव आए हैं।

आधुनिक फैशन से प्रतिस्पर्धा करते हुए अब चंदेरी साड़ियों के पारंपरिक गिन्नी अशर्फी डिजाईन के साथ पाइपिंग, स्कर्ट, चेटी, महेंदी रचे हाथ, जालीदार, पेड़दार, उगता सूरज, गंगा जमुना आदि बॉर्डर बन रहे हैं। अब सोने चांदी के तारों का स्थान रंगीन रेशमी धागों ने ले लिया है। लेकिन अगर इस साड़ी की बनावट में अगर कुछ नही बदला है तो वह है इसका आकर्षक बॉर्डर जिसे आज भी साड़ी के साथ नही बल्कि अलग से बुनकर लगाया जाता है। शुरुआती दौर में चंदेरी में सूती कपडे सफेद अथवा क्रीम कलर में बनाए जाते थे। फिर जब रंग बिरंगे कपड़ो की मांग बढ़ी तब इन पर 'वेजिटेबल कलर्स' चढ़ाए जाने लगे। इन रंगों को सब्जियों, फूल पत्तियों, फलों के छिलकों आदि से बनाया जाता था। धीरे–धीरे इनकी जगह केमिकल रंगों ने ले ली।

चंदेरी के कपड़ों ने जहां एक लंबा सफर तय किया है वहीं जिन करघों (लूम) पर इन्हें बनाया जाता है, वह भी सुविधा और तकनीक के हिसाब से बदलते रहे हैं। पहले शटल वाले लूम पर एक ही रंग की साड़ी बनती थी, फिर फ्लाई शटल लूम का उपयोग होने लगा, जिस पर दोनों साइड से बुनाई होती थी। आजकल ''थ्री शटल लूम'' का उपयोग किया जाता है। चंदेरी की 'रिवर्सेबल' साड़ियों की भी खूब मांग बनी रहती है। एक 'रिवर्सेबल' साड़ी लगभग 45 दिनों में बनकर

तैयार होती है। साड़ियों के साथ साथ अब सूट मैटिरियल में भी चंदेरी कपड़ों की बाजार में बड़ी मांग है। चंदेरी साड़ियों की खास बात यह है कि यह हर रंग डिजाईन और कीमत में उपलब्ध है, 500 रुपए से 50,000 रुपए तक।

करीना साड़ी

फिल्मों में भी चंदेरी...

फिल्मी दुनिया के सितारे भी चंदेरी की चटख और हलके रंगों की पारंपरिक साड़ियों का मोह नहीं छोड़ पाए और चंदेरी साड़ियों को खूब पसंद करते रहे है। 'थ्री इडियट्स'' फिल्म के निदेशक राज कुमार हिरानी और अभिनेता आमीर खान भी चंदेरी का मोह नहीं छोड़ पाए। इस फिल्म के कुछ हिस्सों की शूटिंग चंदेरी में की गई थी। इस फिल्म की शूटिंग के दौरान आमिर खान और करीना कपूर चंदेरी आए तो इस छोटे से कस्बे ने खूब सुर्खियां बटोरी। शूटिंग के दौरान ही करीना कपूर ने ताहिर मुजाबिर नामक बुनकर को अपनी पसंद का एक डिजाइन देकर अपने लिए काले रेश्मी धागों से एक खास साड़ी बनवाई थी। ताहिर ने 25 हजार रुपए लिए थे और यह साड़ी बनाने में उसे तीन दिन लगे थे। करीना कपूर की काले रेशम की साड़ी ने ताहिर को अचानक ही प्रसिद्ध कर दिया और करीना की उस खास साड़ी की अचानक इतनी मांग हो गई कि ताहिर ने उस डिजाइन का नाम ही ''करीना साड़ी'' रख दिया, जिसे करीना कपूर ने बनवाया था। अब तक इस ब्रांड की सैकड़ों साडियां बिक चुकी हैं। इससे पहले ताहिर ने अभिनेत्री विद्या बालन के लिए भी 'अफरोजा' नाम से एक साड़ी बनाई थी।

स्त्री– 2018 हॉरर–कॉमेडी फिल्म स्त्री एक चुड़ैल की कहानी है। इसके बहुत से हिस्सों की शूटिंग चंदेरी के किले में की गई थी। चुडैल को गोली मारने का दृश्य खूनी दरवाजे के पास फिल्माया गया था।

सुई धागा – इस अनुष्का शर्मा और वरुण धवन अभिनीत फिल्म के कुछ हिस्सों की शूटिंग चंदेरी में हुई थी।

गुडिया हमारी सब पे भारी नामक सीरियल की शूटिंग चंदेरी में हुई, जिसकी शुरुआत चंदेरी बस स्टैंड से होती है जिसे सीरियल में ललितपुर बस अडडा कहा गया था और किले को कोठी के रूप में दिखाया गया है।

ब्रिटेन की महारानी और चंदेरी

ब्रिटिश शासन काल के दौरान अंग्रेजों के साथ यह कपडा इंग्लैंण्ड भी पहुंच गया। कहा जाता है कि इंग्लैण्ड की महारानी भी चंदेरी कपड़े बहुत पसंद करती थी। एक ब्रिटिश जानकार आर.सी. स्टेंड्रल के मुताबिक ''चंदेरी में महीन कपड़ा बुना जाता है। चंदेरी के बने कपडे हिंदुस्तान की रानियों की खास पसंद है। यह कपड़े बहुत महंगे होते हैं क्योंकि इनके किनारों पर सोने के धागों का प्रयोग किया जाता है। चंदेरी के कपड़ों की पहचान इसके महीन पारदर्शी और कोमलता है, जिसे केवल अनुभव किया जा सकता है।''

जैन धर्मावलम्बियों के लिए भी चंदेरी का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इनके धर्मग्रंथो में चंदेरी के साथ–साथ, चंदेरी कपड़ो के भी प्रमाण मिलते हैं। एक ग्रन्थ के अनुसार, 1436 से 1440 के बीच होने वाले गजरथ समारोह में चंदेरी में बनी पगड़ियां पहनी गईं थी।

चंदेरी मध्य प्रदेश के अशोक नगर जिले में मालवा और बुन्देलखंड की सीमा पर बसा एक छोटा ऐतिहासिक नगर है। बेतवा नदी के पास दक्षिण पश्चिम में बसा चंदेरी पहाड़ी, झीलों और वनों से घिरा एक शांत नगर है, जहां सुकून से कुछ समय गुजारने के लिए लोग आते हैं।

खंगार जाटों और मालवा के सुल्तानों द्वारा बनवाई गई अनेक इमारतें यहां देखी जा सकती है। इस ऐतिहासिक नगर का उल्लेख महाभारत में भी मिलता है। शिशुपाल, जिसका श्रीकृष्ण को सौ गालियां देने के बाद श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से सिर काट दिया था, चन्देरी का राजा था। फारसी विद्वान अलबरूनी ने भी 1030 में चंदेरी का उल्लेख किया है।

11वीं शताब्दी में चंदेरी गुजरात के बंदरगाहों से आने वाले मार्ग के साथ–साथ मालवा, मेवाड़ और दक्षिण से पूर्व के प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर होने के कारण यह एक महत्वपूर्ण सैन्य चौकी थी। आइन–ए–अकबरी में इसका एक विशाल व्यापारिक केन्द्र के रूप में उल्लेख मिलता है। वैसे तो चंदेरी साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन यहां और भी बहुत कुछ है जिस पर लोगों का बहुत ही कम ध्यान गया है। उसका कारण शायद यहां आने के लिए आवागमन की सीधी सेवाएं और कम साधन होना हो सकता है।

चन्देरी के बारे में कुछ और ....

यही वजह रही कि इस महत्वपूर्ण स्थान पर अधिकार करने का ख्वाब हर शासक ने देखा तभी तो कभी यह बुन्देली राजाओं के आकर्षण का केन्द्र बना तो कभी मालवा के शासकों का, तो कभी मुगलों, राजपूतों तो कभी मराठों के अधिकार में रहा। चित्तौड़ के राणासांगा ने महमूद खिलजी को हरा कर चंदेरी सहित पूरे क्षेत्र को अपने कब्जे में ले लिया था। खिलजी, बलबन, बाबर, पूरणमल जाट, फिर शेरशाह सूरी से होता हुआ चन्देरी 1857 के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान एक स्वतंत्र राज्य बन गया था। लेकिन 14 मार्च

1858 को ह्यू रोज ने फिर से कब्जा कर लिया और 1861 में यह शहर ग्वालियर के सिंधिया के प्रभुत्व में ग्वालियर राज्य के ईसागढ़ जिले का हिस्सा बन गया। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, ग्वालियर मध्य भारत के नए राज्य का हिस्सा रहा और 1 नवंबर 1956 को मध्य प्रदेश में शामिल कर दिया गया।

चन्देरी दुर्ग

यह किला चन्देरी में पर्यटन का सबसे प्रमुख आकर्षण है। चंदेरी का किला स्थापत्य कला की एक जीवंत मिसाल है। पहाड़ी की एक चोटी पर बना और लगभग पांच कि.मी. लंबाई और डेढ कि.मी. चौड़ाई के क्षेत्र में फैला यह किला यहां का सबसे प्रसिद्ध स्मारक है। इसे देखकर चंदेरी के अतीत और महत्व को समझा जा सकता है इस किले पर कई बार हमले हुए, कई शासकों ने शासन किया और साथ ही कई बार पुनर्निर्माण भी कराया गया। इस किले की शिल्पकला पर अलग–अलग काल के शासकों की छाप देखी जा सकती है। किले के तीन प्रवेश द्वार अपने में इतिहास की कई घटनाओं को समाए हुए हैं। किले का मुख्य द्वार 'खूनी दरवाजा' के नाम से प्रसिद्ध है। इस किले के अंदर कई महल हैं। वहीं इस किले के बाहर ही राजपूत रानियों का एक जौहर स्मारक भी है।

चंदेरी दुर्ग के अवशेष

यह स्थान मालवा तथा बुंदेलखंड की सीमाओं पर स्थित होने के कारण भी महत्वपूर्ण था। 230 फीट ऊंची चट्टान पर बना यह दुर्ग चारो ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ था इसलिए यह बेहद सुरक्षित किला माना जाता था। किले में खुदाई से प्राप्त शिलालेखों के अनुसार, यह किला 11 वीं शताब्दी में प्रतिहार राजा कीर्ति पाल ने बनावाया था। यह शिलालेख वर्तमान में ग्वालियर संग्रहालय में रखा हैं।

चन्देरी के राजा मेदिनी राय का बड़ा नाम था और उन्हें राणा सांगा के बाद राजपूतों का दूसरा प्रमुख माना जाता था। खानवा युद्ध में राजपूतों को हराने के बाद बाबर की नजर चंदेरी के किले पर थी। उसने मेदिनी राय से वह किला मांगा और बदले में अपने जीते हुए क़िलों में से कोई भी क़िला देने की पेशकश की। बाबर के बारबार कहने के बाद भी मेदिनी राय यह किला देने के लिए तैयार नहीं थे। तब बाबर ने लड़ कर क़िला छीनने की धमकी दी।

आखिरकार, बाबर ने किले के नीचे घेरा डाल दिया। दरअसल बाबर की सेना में हाथी तोपें और भारी हथियार थे जिन्हें लेकर उन पहाड़ियों के पार

जाना बहुत ही कठिन कार्य था और पहाड़ियों से नीचे उतरते ही चंदेरी की फौज का सामना होना था। इसलिए मेदनी राय भी आश्वस्त थे कि इतनी कठिन चढ़ाई कर शत्रु सेना नहीं आ सकेगी। कहा जाता है कि बाबर निश्चय पर दृढ था और उसने अपनी सेना को एक ही रात में पहाडी को काट कर रास्ता बनाने को कहा और उसकी सेना ने 24 घंटे में यह अविश्वसनीय कार्य कर डाला और पहाड़ी को ऊपर से नीचे तक काटकर एक ऐसी दरार बना डाली, जिससे होकर उसकी पूरी सेना और साजो–सामान ठीक क़िले के सामने पहुंच गए। मेदनीराय ने जब सुबह अपने किले के सामने पूरी सेना को देखा तो दंग रह गए। लेकिन राजपूत सिपाहियों ने बिना घबराए बाबर की विशाल सेना का सामना किया। कुछ विशेष सैनिकों ने किले के खजाने को गहरी बावड़ियों में फैंक दिया। राजपूत केसरिया बाना पहन मैदान में कूद पड़े और वीरता पूर्वक लड़कर वीरगति को प्राप्त हुए। तब किले में सुरक्षित क्षत्राणियों ने स्वयं को आक्रमणकारी सेना से अपमानित होने की बजाय अपनी जीवनलीला समाप्त करने का निर्णय लिया। एक विशाल चिता का निर्माण किया और सभी स्त्रियां सुहागनों का श्रृंगार धारण कर के उस चिता में कूद गईं।

मध्यकालीन इतिहास में चंदेरी का जौहर अब तक के इतिहास का सबसे बड़ा जौहर माना

चंदेरी के किले में जौहर स्मारक

जाता है। किले पर बाबर का अधिकार हो गया। जब बाबर की सेना किले के अन्दर पहुंची तो उसके हाथ कुछ ना आया। राजपूतों का शौर्य और क्षत्राणियों के इस जौहर से बौखलाए बाबर ने उसी महत्त्वपूर्ण किले का विध्वंस करवा दिया जिसमें रहने की तमन्ना वह बरसों से संजोए था।

कटी घाटी

कटी घाटी वास्तव में, चंदेरी नगर की दक्षिणी पहाड़ी पर जमीनी सतह से 230 फीट पर 80 फीट ऊंचाई, 39 फीट चौड़ाई और 192 फीट लंबाई में काटकर बनाई गई एक सेंध है, जिसे आज फाटक कहा जाता है। इस घाटी के बीच में ही पहाड़ को काटकर मेहराबदार प्रवेश द्वार को बनाया गया है जिसके दोनों ओर दो बुर्ज हैं। उत्खनन में घाटी के उत्तर दिशा में चट्टानों को काटकर बनाया एक सीढ़ीनुमा रास्ता भी देखने में आया है। फाटक की पूर्वी दीवार पर देवनागरी और ब्राह्मी जैसी लिपियों में लगे दो अभिलेखों से ज्ञात होता है कि इस घाटी एवं

द्वार का निर्माण चंदेरी के तत्कालीन हाकिम शेर खां के बेटे जिमान खां ने सन् 1495 ई. में कराया गया था। पूरी चट्टान को काटकर बनाई गई यह संरचना, चंदेरी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है और बुंदेलखंड और मालवा के बीच एक लिंक का काम करती है।

इस फाटक के निर्माण के साथ एक अत्यंत दुखद कथा भी जुड़ी है। कहा जाता है कि मालवा के सुल्तान, ग्यासुद्दीन खिलजी के अचानक, अगले ही दिन, चंदेरी में आने का संदेश मिला था। उसके आने और स्वागत हेतु एक सीधा रास्ता होना चाहिए था और इस निमित्त पहाड़ी को काटना था। जिमान खां ने घोषणा की कि जो भी राजमिस्त्री एक रात में पहाड़ी में दरवाजा बनाएगा उसे बड़ा इनाम देगा। केवल एक राजमिस्त्री ने इस चुनौती को स्वीकार करते हुए, जिमान खां को आश्वासन दिया कि वह अपने दल के साथ इस कार्य को पूरा करेगा। अगली सुबह, जिमान खां इस द्वार को देख कर बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन आगे गौर किया तो पाया कि यहां दरवाजा लगाने के लिए सहारे की कमी थी। चूंकि यह दरवाजा सामरिक रूप से

महत्वपूर्ण स्थान पर था और सुरक्षा कारणों से यह जरूरी था कि वहां एक दरवाजा भी हो। जिमान खां ने इस गलती के लिए राजमिस्त्री को पैसे देने से मना कर दिया और पिटवाकर भगा दिया गया। उसने बड़ी मेहनत से इस असंभव कार्य को पूरा किया था। वह उदास होकर लौट गया। कहा जाता है कि दूसरे दिन उसने आत्महत्या कर ली और आज तक यह कटी घाटी गेट दरवाजे के बिना ही खड़ा है।

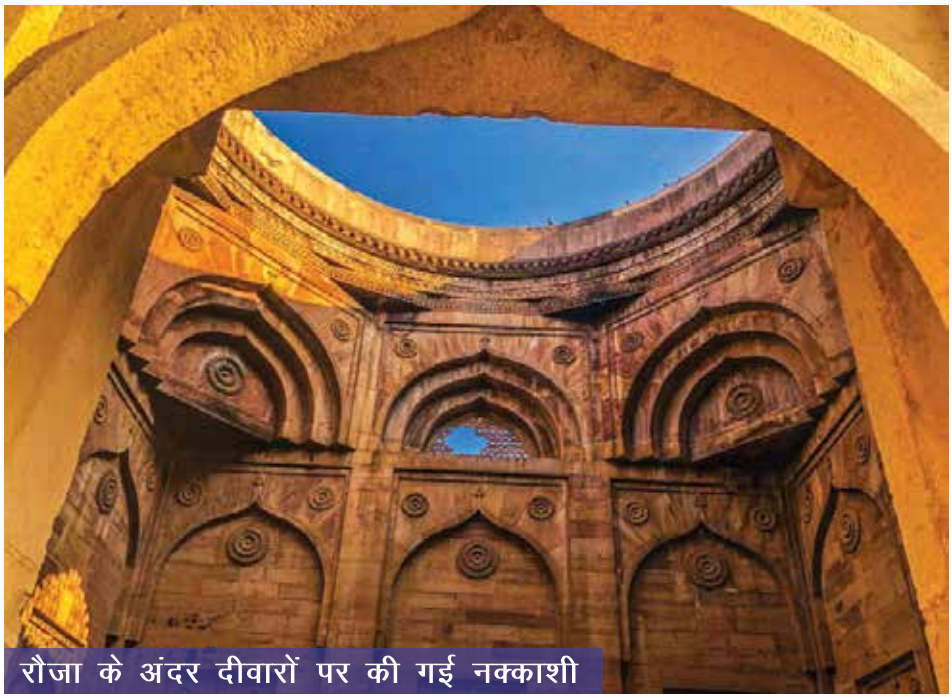
रौजा के अंदर दीवारों पर की गई नक्काशी

परमेश्वर ताल

चन्देरी नगर के उत्तर पश्चिम में लगभग आधे मील की दूरी पर स्थित, इस खूबसूरत ताल को बुन्देला राजपूत राजाओं ने बनवाया था। ताल के निकट ही एक मंदिर बना हुआ है। राजपूत राजाओं के तीन स्मारक भी यहां देखे जा सकते हैं।

शहजादी का रोजा

परमेश्वर तालाब से थोड़ी ही दूरी पर, 15 वीं सदी में बना यह स्मारक एक अनजान राजकुमारी मेहरुन्निसा की याद में बनवाई समाधि है। स्मारक के अंदरूनी हिस्से में शानदार नक्काशी की गई है। स्मारक की संरचना ज्यामितीय से प्रभावित है। इस संरचना को 12 फुट ऊंचे एक चबूतरे पर बनाया गया है। बाहर दीवार पर लंबी पहली मंजिल और थोड़ी कम ऊंची दूसरी मंजिल की संरचना को एक धनुषाकार श्रृंखला में सजाया गया है। स्मारक का सबसे बढिया भाग एक सामान्य, टेढ़ा कोष्ठक है। लेकिन स्मारक के अंदर केवल एक मंजिला एक वर्गाकार कमरा है। मूल संरचना को पांच गुंबद, चार कोनों पर चार और बीच में एक बाड़े से घेर दिया गया था। लेकिन अब इनमें से ज्यादातर टूट–फूट रहे हैं।

मेहरुन्निसा कौन थी...

चंदेरी के तत्कालीन हाकिम की इकलौती बेटी थी मेहरुन्निसा। स्मारक के पीछे की कहानी है कि मेहरुननिसा सेना के एक सिपाही के प्यार में पड़ गई थी। मगर हाकिम पिता इसके खिलाफ था और उसने सेना की उस टुकड़ी को, जिसमें

यह सिपाही था, लड़ाई पर भेज दिया। उसे यकीन था कि वह युद्धभूमि से जिंदा वापस नहीं आएगा। युद्ध में वह सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गया और भाग कर वापस चंदेरी आ गया। लेकिन उसकी ताकत जबाव दे गई। जब मेहरुन्निसा ने इसके बारे में सुना तो वह उसे देखने पहुंची, तब तक वह मर चुका था। इस दुख में मेहरुन्निसा ने भी उसी स्थान पर अपनी जान दे दी।

हाकिम अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था और उसने उन दोनों को एक साथ दफनाने का फैसला किया और एक सुंदर मकबरा बनवाया। जहां दोनों के प्राण निकले थे, यह ठीक वही स्थान है जहां अब स्मारक खड़ा है। मकबरे के चारों ओर तालाब और सामने एक बगीचा बनावाया गया था, जिसे उनके अटूट प्यार का प्रतीक कहा जा सकता है। वह तालाब अब मौजूद नहीं है और मकबरा खेतों से घिरा है। फिर भी पर्यटक इसे देखने जरूर जाते हैं।

बुद्धी यानि बूढ़ी चन्देरी

वर्तमान चंदेरी शहर से 19 कि.मी. दूर, पुराने चंदेरी शहर को बूढ़ी (ओल्ड चन्देरी) नाम से जाना जाता है। आज के अंग्रेजी चलन के कारण, लोग इसे बुद्धी भी कहते हैं। यहां के मुख्य दर्शनीय स्थलों में 9वीं तथा 10वीं शताब्दी में बने जैन मंदिर हैं। जिन्हें देखने हेतु जैन धर्मावलम्बी प्रति वर्ष बड़ी संख्या में आते हैं। बुद्धी चंदेरी उर्वशी नदी के तट पर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि पुराणों में उल्लेखित चैत्य नगर चंदेरी ही है।

कोशक महल

इस महल को 1445 ई. में मालवा के महमूद खिलजी ने बनवाया था। यह महल चार बराबर

कोशक महल, चंदेरी

हिस्सों में बंटा हुआ है। कहा जाता है कि सुल्तान इस महल को सात खंड का बनवाना चाहता था लेकिन मात्र चार खंड का ही बनवा सका। महल के हर खंड में खुले झरोखे (बॉलकनी), खिड़कियों की कतारें और छतों पर शानदार नक्काशी के साथ चन्देरी में अपनी बला की खूबसूरती लिए कोशक महल के खंडहरों के झरोखों से आज भी धुंध छनती हुई आती है और टूटी हुई छतों से बाहर चली जाती है।

बादल महल

बादल महल दरवाजा वास्तव में एक द्वार की एकमात्र संरचना है जो किसी महल में नहीं खुलती। यह ऐतिहासिक दरवाजा चंदेरी के केंद्र में जामा मस्जिद के पास स्थित है। इस दरवाजे का निर्माण मालवा के राजा महमूद शाह खिलजी ने 15 वीं शताब्दी में करवाया था। बादल महल के दरवाजे की ऊंचाई 100 फुट है। इस संरचना में प्रभावशाली नक्काशियां और रूपांकन हैं। द्वार का ऊपरी भाग धनुषाकार है और इसके दोनों ओर ऊंची मीनारें हैं। इस संरचना की विशेषता यह है कि द्वार के धनुषाकार शीर्ष पर एक अंतराल है जिसके बाद एक अन्य मेहराब है जो द्वार के ऊपर अंत तक जाता है। इस द्वार पर विभिन्न राज्यों से आए अतिथियों और राजाओं का भव्य स्वागत किया जाता था। अब भारतीय पुरातत्व विभाग इसकी देखरेख करता है।

अब पुरातत्व विभाग ने बादल महल को देखने आने वाले भारतीय सैलानियों से 25 रुपए प्रति व्यक्ति एवं विदेशी सैलानी के लिए 300 रुपए प्रति व्यक्ति टिकिट निर्धारित कर दिया गया है। लेकिन

उक्त स्थल पर आने वाले पर्यटकों को, आसपास पीने के पानी और प्रसाधन की कोई व्यवस्था न होने के कारण परेशान होना पड़ता है। साथ ही कैंटीन की व्यवस्था भी न होने के कारण भी कई देशी व विदेशी सैलानी परेशान होते रहते हैं।

जामा मस्जिद

चन्देरी में बनी जामा मस्जिद मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी मस्जिदों में एक है। इस मस्जिद में एक समय में दो हजार से अधिक व्यक्ति एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं। यह चंदेरी और शायद बुंदेलखंड क्षेत्र की सबसे पुरानी मस्जिद है। मस्जिद के गुंबद और लंबी वीथिका काफी सुंदर हैं। साक्ष्यों के अनुसार, बलबन ने इस शहर पर कब्जा करके, इसे दिल्ली सल्तनत के अधीन करने के बाद इस स्मारक की आधारशिला रखी थी। इस मस्जिद के प्रवेश द्वार पर फूल व पत्तेदार नक्काशी कर विभिन्न ज्यामितीय पैटर्न के साथ सजाया है। आंगन के भीतर एक वजूचश्मा है जो लोगों के द्वारा नमाज अता करने से पहले अपने हाथ और पैर धोने के काम में लाया जाता था।

मलान खोहः

घने जंगल के बीच स्थित प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर मलान खो, चंदेरी से अशोक नगर मार्ग पर चार कि.मी. पक्की सड़क के बाद चार कि.मी. घने जंगल में कच्चा रास्ता तय कर पर्यटक मलान खो पहुंचते हैं। चारों तरफ हरियाली और जंगल के बीच स्थित छायादार वृक्षों कई झरनों के साथ प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर यह स्थान काफी लोकप्रिय है। यह एक सिद्ध गुफा के लिये भी प्रसिद्ध है जिस गुफा के बारे में कहा जाता है

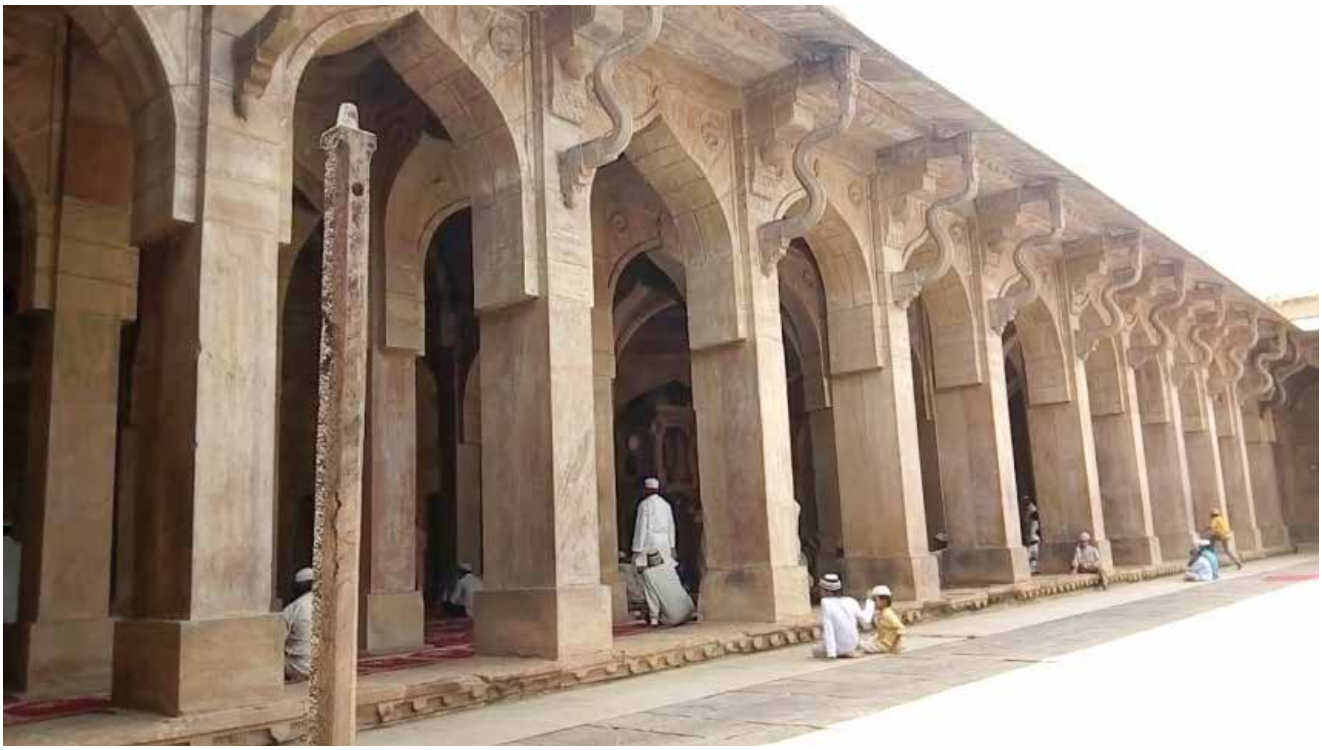

कि एक फकीर रहा करते थे। इस पहाड़ी स्थान में बाहर की ओर से काटकर गुफाएं बनाई गई हैं जिसमें एक विशाल शिवलिंग और हनुमान जी की कई मूर्तियां देखने को मिलती हैं। यहां सिद्धेश्वर हनुमानजी का मंदिर और प्राकृतिक झरनों का आनंद ले सकते हैं। यहां करीब 50 मीटर की ऊंचाई से झर रहे झरने के नीचे लोग नहाने का आनंद लेते हैं। वहीं एक गुफा से तेजी से पानी बह रहा है लेकिन इस गुफा की गहराई का किसी को पता नहीं है। गुफा से होकर गिरते पानी की एक धारा सीधे शिवलिंग पर आती है जो इसे प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही धार्मिक महत्व भी प्रदान करती है। लोग इसे शिवलिंग का बारह महीने जलाभिषेक मानते हैं। इसका आनंद लेने और पिकनिक मनाने के लिए प्रतिदिन बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

बैजू बावरा की समाधि

चंदेरी में ही भारत के एक महान संगीतकार बैजू बावरा की समाधि है। बैजू बावरा के नाम से प्रसिद्ध पं. बैजनाथ का जन्म चंदेरी में 1542 में शरद पूर्णिमा की रात में हुआ था। चंदेरी में ही सन् 1613 ई. में वसन्त पंचमी के दिन 71 वर्ष की आयु में बैजू बावरा का मियादी बुख़ार से निधन हुआ था। इस स्थान पर प्रति वर्ष जनवरी में संगीत समारोह आयोजित किया जाता है जिसमें देश के जानेमाने संगीतकार भाग लेते हैं। इस समारोह को देखने के लिए न सिर्फ जिले बल्कि

मलान खोह जल प्रपात

आसपास के जिलों से भी संगीत प्रेमी पहुंचते हैं और बैजू बावरा को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। प्रशासन की ओर से इस समारोह की अच्छी तैयारियां की जाती हैं।

चंदेरी से कुछ दूरी पर ...

देवगढ़ किला

चन्देरी से 25 कि.मी. दूर दक्षिण पूर्व में देवगढ़ किला है। किले के भीतर 9वीं और 10 वीं शताब्दी में बने जैन मंदिरों का समूह है जिसमें प्राचीन काल की कुछ मूर्तियां देखी जा सकती हैं। किले के निकट ही 5वीं शताब्दी का विष्णु दशावतार मंदिर बना हुआ है, जो अपनी सुंदर मूर्तियों और नक्काशीदार स्तंभों के लिए प्रसिद्ध है।

ईसागढ़

चन्देरी से लगभग 45 कि.मी. दूर ईसागढ़ तहसील के कड़वाया गांव में अनेक खूबसूरत मंदिर बने हुए हैं। इन मंदिरों में एक मंदिर दसवीं

वर्ष 2019 में बैजू बावरा संगीत सम्मेलन में कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए पद्मश्री उस्ताद वसीफुद्दीन डागर

शताब्दी में कच्छप शैली में बना है। मंदिर का गर्भगृह, अंतराल और मंडप मुख्य आकर्षण है। चंदेल मठ यहां का अन्य लोकप्रिय और प्राचीन मंदिर है। इस गांव में एक क्षतिग्रस्त बौद्ध मठ भी देखा जा सकता है।

चंदेरी में जैन धर्म के अवशेष

बुंदेला राजाओं और मालवा सुल्तानों के कई स्मारकों के साथ पहाड़ियों, झीलों और जंगलों से घिरा हुआ चंदेरी प्राचीन जैन मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध है। चंदेरी क्षेत्र जैन संस्कृति का एक प्रसिद्ध स्थान रहा है। यह परवर जैन समुदाय का एक प्रमुख केंद्र था। इसके आसपास में कई जैन स्थानक हैं जिनके दर्शनार्थ प्रतिवर्ष हजारों जैन अनुयायी आते हैं।

श्री चौबीसी बड़ा मंदिर

इस मंदिर के सामने के दो भाग हैं जिन्हें बड़ा मंदिर और पीछे के हिस्से को चौबीस मंदिर के नाम से जाना जाता है। शिलालेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण वर्ष 1293 के आसपास हुआ था। यह मंदिर 18 वीं शताब्दी में पुनर्निर्मित किया गया था। इस मंदिर में 24 तीर्थंकरों की 24 मूर्तियां हैं और इन मूर्तियों को तीर्थंकर के रूप में विभिन्न रंगों के पत्थरों से बनाया गया है। सभी मूर्तियां आयामों में एक समान हैं, जो वास्तव में बहुत कठिन कार्य है। चंदेरी आने वाले जैन तीर्थयात्रियों के लिए शहर में ही चौबीसी मंदिर स्थित है। इसकी अलग ही ख्याति है और प्रति वर्ष लाखों तीर्थयात्री यहां आते हैं। यह मंदिर दो भागों में बंटा है। पहला हिस्सा एक बड़े गुंबददार छत से ढका है और उसके अंदर सभी 24 तीर्थंकरों के प्रतीक चिन्ह हैं। इस हिस्से में बाहुबली की एक विशाल मूर्ति भी है।

दूसरे भाग में सभी 24 तीर्थंकरों की बड़ी–बड़ी मूर्तियाँ हैं, जो कि प्रत्येक एक विशेष रंग के पत्थर से बनी है क्योंकि जैन धर्म की आस्था के अनुसार, प्रत्येक तीर्थंकर एक विशेष रंग के थे। मंदिर में जैन पांडुलिपियाँ व ताड़ के पत्ते पर लिखित पांडुलिपियों का एक बड़ा संग्रह भी हैं जो संस्कृत में है।

श्री पारसनाथ दिगम्बर पुराना जैन मंदिरः यह चंदेरी के सबसे प्राचीन जैन मंदिरों में से एक है। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ को समर्पित, यह मंदिर शहर में ही है। यह जैन तीर्थयात्रियों, जो देश भर से चंदेरी की यात्रा को आते हैं, के बीच लोकप्रिय है। हालांकि मंदिर की नींव की सही तारीख मालूम नहीं है, यह निश्चित रूप से चौबीसी जैन मंदिर से पुरानी है। एक शिलालेख

जो मंदिर के भीतर निहित है, उसमें 13वीं सदी दिनांकित है।

खंडारगिरि जैन मंदिरः यह चंदेरी में सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। यह मंदिर ऋषभनाथ की 45 फीट की नक्काशीदार मूर्ति के लिए प्रसिद्ध है। शिलालेख बताते हैं कि यह प्रतिमा 700 साल से अधिक पुरानी है। इसके अंदर कई जैन संतों की धार्मिक नक्काशीदार सजावट के साथ मूर्तियां मौजूदा हैं। सबसे पुरानी छः गुफाएं हैं जो 1236 की बताई जाती है।

श्री थुवणजी जैन मंदिरः यह मंदिर 9 वीं शताब्दी का है। इस मंदिर में आदिनाथ की 36 फीट 8 इंच ऊंचाई की हल्के नीले रंग की मूर्ति है। इस मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की 13 फीट 4 इंच की और 12 फीट 6 इंच की ऊंचाई की दो अन्य विशाल मूर्तियां भी हैं।

कैसे पहुंचे :

रेल मार्ग : चंदेरी में और इसके आसपास अभी तक रेल सम्पर्क नहीं बन पाया है। 2014 में उत्तर रेलवे के पिपराइगांव–चंदेरी–ललितपुर लाइन के रूप में एक प्रस्तावित रेलवे लाइन बनाई गई थी, जो जल्द ही चालू होगी। चंदेरी के लिए यहां से 37 कि.मी. दूर निकटतम रेलवे स्टेशन उत्तर प्रदेश का ललितपुर है। वहां से बसों के अलावा टैक्सियां मिल जाती है। दूसरा रेलवे स्टेशन, 57 कि.मी. दूर, अशोक नगर है। यहां से नियमित अंतराल से चन्देरी के लिए बसें चलती हैं।

सड़क मार्ग : राज्य के अधिकांश हिस्सों से सड़क मार्ग के द्वारा चन्देरी पहुंचा जा सकता है।

श्री चंद्रप्रभा दिगंबर जैन मंदिरः यह मंदिर जैन धर्म के 8वें तीर्थंकर चंद्रप्रभा को समर्पित है। सबसे पुराना शिलालेख दिनांक 967 ईस्वी पूर्व का है।

बावड़ियों का शहर :

इन सबके अलावा चंदेरी बावड़ियों का शहर हैं। कुछ जंगलों में छिपी हुई और कुछ बीच शहर में टूटे हुए किले की दीवारों की ओर ताकती हुई पुरानी और सुन्दर बावड़ियां 'वॉटर हार्वेसटिंग' का अकल्पनीय नमूना प्रस्तुत करती हैं।

चाकला बावड़ी, चंदेरी

इमारतों के प्रतिबिम्ब इमारतों से भी अधिक

ऐतिहासिक एवं पर्यटन नगर चंदेरी के ग्रामीण क्षेत्र में जल विरासत की प्राकृतिक संपदा को देखना भी एक अनोखा अनुभव है। यही नहीं चंदेरी ग्रामीण क्षेत्र में सैकडों वर्ष पूर्व जल ही जीवन की क्या स्थिति थी इसका उल्लेख करता है ग्राम राखा में लगा प्राचीन शिलालेख, जिसमें जल के महत्व के बारे मे बताया गया है। जल विरासत रूपी प्राचीन कुआं बावड़ी या उनकी बनावट भी ऐसी है जिसका की धार्मिक भावना का प्रकृति करण उनकी दीवारों में जड़ी देवी प्रतिमाएं देखी जा सकती है। यह बावड़िया आज भी अपने गौरवशाली अतीत की दास्तां बयां करते हुए जन कल्याण में लगी हैं।

खूबसूरत दीखते हैं, क्योंकि उनमें शायद उनके 'दोष' छिप जाते हैं। यह बावड़ियां सिर्फ महारानियों के लिए थी, अब चमकती धूप में सिर्फ महारानी का मकबरा चमकता है, जो बावड़ी में घुसते ही सामने दीखता है।

बत्तीसी बावड़ी जंगल के बीच है। वाहन से उतर कर कुछ पैदल जाना होता है। इसका नाम बत्तीसी इसलिए पड़ा क्योंकि इसके बत्तीस तल हैं। वास्तव में ही यह अचंभित कर देने वाली बावड़ी है।

बत्तीसी बावड़ी चंदेरी की सबसे प्रसिद्ध और बड़ी बावड़ी है। इस का निर्माण शेर खान ने 1485 में सुल्तान गियासुद्दीन शाह खिलजी के शासन काल में करवाया था। बावड़ी के बारे में रोचक बात यह है कि पूरे साल इस बावड़ी में पानी का स्तर एक जैसा रहता है। यहां के लोगों का मानना है कि जब तक समुद्र में पानी रहेगा तब तक इस बावड़ी में पानी रहेगा। इस बावड़ी का आकार चौकोर है जिसकी लंबाई और चौड़ाई 60 फुट है और गहराई चार मंजिला है। सीढियां मुख्य द्वार से प्रारंभ होती हैं और बावड़ी के नीचे तक जाती हैं। प्रत्येक मंजिल पर जहां सीढियां समाप्त होती हैं वहां एक सुन्दर मंच या घाट है जो बावड़ी को चारों ओर से घेरता है। बावड़ी में सीढ़ियों के कुल 32 समूह हैं जिसके कारण इसका नाम बत्तीसी बावड़ी पड़ा।

32 तल की बावड़ी

* * *

कोविड-19 महामारी और योग व आयुर्वेद

–डॉ. नीता कुलश्रेष्ठ

कोविड–19 वायरस जो आज पूरे विश्व में भय का पर्याय बन गया है, एक विषाणु है। कोरोना वास्तव में किसी एक वायरस का नाम नहीं बल्कि यह एक पूरे वायरस परिवार का नाम है और कोविड–19 उसी परिवार का एक सदस्य है। इसकी बनावट के कारण ही इसे ''कोरोना'' नाम दिया गया है। कोरोना शब्द इंग्लिश के क्राउन शब्द से लिया गया है तथा इस विषाणु की बाहरी आकृति एक क्रॉउन अर्थात मुकुट के जैसी देखी गई है। कोविड–19 की उत्पत्ति के पीछे विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा अपने– अपने शोध के आधार पर अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए गए हैं। मगर इस पर विषय पर भिन्न मत रखते हुए भी, इस बात पर लगभग सभी वैज्ञानिक एकमत हैं कि यह वायरस चीन के एक शहर वुहान में समुद्री जीवों को बेचने वाले बाजार से निकला है। यहां का बाजार सांप, चूहा, चमगादड़ आदि जैसे जंगली जीवों के अवैध व्यापार के लिए चर्चित रहा है।

यूएस सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) के अनुसार, कोरोना विषाणु कोरोनविर्यूज वायरस का एक समूह है जो आमतौर पर जानवरों के बीच पाया जाता रहा है। यह वायरस जानवरों के साथ रहने से या जानवरों का मांस खाने से मनुष्यों के शरीर में पहुंच कर उसे प्रभावित कर देता है।

*एसोसिएट प्रोफेसर, श्री वार्ष्णेय कॉलेज, अलीगढ (उत्तर प्रदेश)

वुहान शहर में फैलने के पश्चात इस वायरस ने पूरे विश्व के 210 देशों में कहर बरपा दिया है। इसकी भयावहता को देखते हुए ही विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा 11 मार्च 2020 को कोरोना को एक वैश्विक महामारी घोषित कर दिया गया है। 31 मार्च, 2020 तक विश्व में पुष्ट मामलों की संख्या (एक्टिव कैस) सात लाख से अधिक थी और लगभग 36405 लोग असमय ही काल कलवित हो गए थे। जबकि रिकवरी दर कम थी।

> विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, 31 मार्च, 2020 तक विश्व में साढ़े सात लाख से भी अधिक लोग कोरोना–19 ने संक्रमित किया और 36 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु का कारण बना है। भारत में मात्र हजार से अधिक संक्रमित और 29 लोगों की मृत्यु होने के समाचार थे।

भारत सरकार ने 14 मार्च, 2020 को कोविड–19 को राष्ट्रीय स्तर पर अधिसूचित आपदा घोषित कर दिया। इससे बचाव के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा तीन बार एडवाइजरी भी जारी की गई। महामारी के बढ़ते असर को देखते हुए 24 मार्च, 2020 को पूरे देश में सम्पूर्ण बंदी लॉक डाउन किया गया। हम यदि भारत की बात करें तो 31 मार्च, 2020 तक यहां कोराना संक्रमितों की

संख्या भयावह स्थिति में नहीं थी और ऐसा लगता था कि हालात नियंत्रण में थे।

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, कोरोना वायरस परिवार के अन्य सदस्यों के बारे में वैज्ञानिक पूर्व में ही परिचित रहे हैं। कोरोना वायरस सार्स (Severe Acute Respiratory Syndrome) जिसे SARS Corona Virus (SARS&CoV) भी कहते हैं और कोरोना वायरस मार्स (Middle East Respiratory Syndrome) जिसे (MERS&CoV) भी कहते हैं, के बारे में वैज्ञानिक पूर्व में अध्ययन कर चुके हैं। हाल ही में आया कोविड–19 इसी परिवार का हिस्सा है तथा यह तथ्य बहु प्रचलित है कि कोरोना वायरस का संक्रमण चमगादड़, बिल्ली, ऊंट इत्यादि जैसे जानवरों में होता है। यदि यह किसी मानव को संक्रमित करता भी है तो वह मात्र हल्के–फुल्के सर्दी–जुकाम और फ्लू जैसे लक्षणों तक ही सीमित रहता है परंतु नया वायरस जिसे कोविड–19 के नाम से जाना जा रहा है, वह मानव को भी बहुत बुरी तरह प्रभावित कर रहा है तथा इसका संक्रमण कई बार इंसानी जिंदगी के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। इस वायरस का संक्रमण होने के पश्चात मरीज में जुकाम, बुखार, गले में खराश, सांस लेने में परेशानी जैसे लक्षण सामने आ रहे हैं। बाद में गंभीर रूप लेने पर यह बुखार निमोनिया में परिवर्तित हो जाता है और फेफड़ों को इतनी बुरी तरह से प्रभावित करता है कि व्यक्ति की मृत्यु तक हो जाती है। यह वायरस सांस की बूंदों के द्वारा, जो प्रायः खांसी या छींकते समय बाहर आती हैं, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर असर करता है। यह बूंदे यदि किसी सतह पर गिरती हैं तो सतह के संपर्क में आए किसी भी व्यक्ति को भी यह संक्रमित कर सकती हैं।

अभी तक कोरोना वायरस के संक्रमण को समाप्त करने की न तो कोई विशिष्ट औषधि उपलब्ध है और ना ही इसका वैक्सीन तैयार किया गया है। ऐसी स्थिति में इस बीमारी से लड़ने के लिए डॉक्टर दूसरी जरूरी दवाओं का उपयोग अपनी पूर्व में प्राप्त चिकित्सकीय जानकारी के अनुसार कर रहे हैं।

छपते छपते ...

इन आंकड़ों से इस वायरस की भयावहता को पता चलता है। WHO के अनुसार, 20 जून, 2020 तक विश्व में 88 लाख से भी अधिक (8,857,419) लोग कोरोना–19 ने संक्रमित थे और इसके कारण चार लाख से अधिक लोग (464,830) जान गंवा चुके थे। रिकवरी की दर भी अच्छी थी (464,830)। यदि हम भारत की बात करें, तो स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के अनुसार, यहां भी संक्रमितों की संख्या चार लाख से अधिक है। 13 हजार से अधिक लोगों की मृत्यु तथा दो लाख से अधिक मरीजों के ठीक होकर अपने घर जाने के समाचार है।

वायरस नया होने के कारण इस पर शोध अभी प्रारंभ हुआ है अतः इसके बारे में प्रमाणित जानकारी का अभाव है। ऐसे में विभिन्न प्रत्येक देश अपने–अपने ढंग से प्रयोग कर रहे हैं। भारत में कोरोना फैलने के बाद यहां के चिकित्सकों ने कोरोना मरीजों के उपचार हेतु हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन टैबलेट का उपयोग किया तथा यह दवा दूसरी अन्य दवाओं के साथ किसी हद तक कोरोना से लड़ने में सफल भी हुई। हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन टैबलेट भारत में मूल रूप से मलेरिया के उपचार हेतु प्रयोग की जाती है। विश्व में प्रयुक्त कुल हाइड्रोक्सी क्लोरोक्वीन टैबलेट का 70% उत्पादन भारत में किया जाता है। जैसे ही यह तथ्य सामने आया कि इस दवा का प्रयोग कोरोना से लड़ने में सशक्त रूप से किया जा सकता है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी मांग बहुत बढ़ गई। अमेरिका, ब्राजील, फ्रांस जैसे देशों से विशेष अनुरोध मिलने पर भारत से इसका निर्यात किया गया।

दूसरी ओर इस वायरस के लगातार बदल रहे तेवरों ने चिकित्सकों को हैरान कर दिया है। मरीजों में कोरोना जांच बार–बार निगेटिव से पॉजिटिव और पॉजिटिव से निगेटिव हो रही है। इससे इलाज को लेकर भ्रम की स्थिति बन रही है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी और अस्पतालों के डाक्टर कोरोना संक्रमण के नए स्वरूप या पैटर्न को लेकर खासे हलकान हैं। कई ऐसे मरीज मिले हैं जिन्हें क्वारंटाइन के लिए भर्ती करने पर उनकी पहली दो बार रिपोर्ट निगेटिव थीं। जबकि क्वारंटाइन के बाद अस्पताल से छुट्टी देने से पहले, 10वें दिन उनकी रिपोर्ट पॉजिटिव आई। ऐसे में भ्रम की स्थिति गंभीर हो जाती है।

संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ, के मॉलीक्यूलर मेडिसिन एंड बायोटेक्नोलाजी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ. मदन मोहन गोडबोले का अनुमान है कि कोरोना वायरस अपनी कमजोर स्थिति में पहुंच रहा है भले ही इसका प्रकोप और मरीजों की संख्या बढ़ेगी लेकिन मृत्यु दर अधिक नहीं होगी। डॉ. गोडबोले के मुताबिक, अगर हम इवोल्यूशन थ्योरी या वायरस के उत्क्रांति सिद्धांत पर गौर करें तो अधिक परेशान नहीं होना चाहिए।

गुरुग्राम स्थित फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के न्यूरोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. प्रवीण गुप्ता (आज तक को दिए एक साक्षत्कार में) के मुताबिक कोरोना वायरस के तीन प्रकार के वाहक (कैरियर) होते हैं– एसिंप्टोमेटिक, प्री–सिंप्टोमेटिक और सिंप्टोमेटिक। एसिंप्टोमेटिक ऐसे मरीज होते हैं जिनमें कोरोना का संक्रमण होता है लेकिन उनमें कोई लक्षण नहीं दिखता। प्री–सिंप्टोमेटिक वह मरीज होते हैं जिनमें कुछ दिनों बाद इस बीमारी के लक्षण दिखते हैं। सिंप्टोमेटिक मरीजों में कॉमन फ्लू जैसे लक्षण होते हैं। इन मरीजों को बुखार, सर्दी और कफ की शिकायत हो सकती है। शुरू में ऐसा कहा जाता रहा कि एसिंप्टोमेटिक लोग ही कोरोना वायरस के सबसे बड़े स्प्रेडर (बीमारी फैलाने वाले)

हैं। जबकि इस श्रेणी में प्री–सिंप्टोमेटिक स्प्रेडर आते हैं या ऐसे लोग जिनमें कोरोना के हल्के लक्षण हैं। इन लक्षणों में बदन दर्द भी शामिल है। प्री–सिंप्टोमेटिक मरीज में वायरस तुरंत ही प्रभावी हो जाता है और ऐसे मरीज वायरस फैलाना शुरू कर देते हैं। ऐसे मरीज बेहद खतरनाक हैं क्योंकि इनमें कोई लक्षण नहीं होते और ये लोग कोई एहतियात भी नहीं बरतते। इनका घर से बाहर आना–जाना जारी रहता है।

बीमारी के उचित उपचार की उपलब्धता नहीं होने के कारण, बचाव के विभिन्न उपाय के रूप में WHO द्वारा कुछ सावधानियां बताई गई जिन पर अमल करके न सिर्फ स्वयं को बचाया जा सकता है बल्कि कोरोना वायरस को फैलने से भी रोका जा सकता है। सभी देशों की सरकारों ने उन सावधानियों को बरतने के लिए अपने नागरिकों को निर्देश जारी किए है। इन सावधानियों में, अपने हाथों को साबुन और पानी या फिर अल्कॉहॉल बेस्ड सैनिटाइजर से अच्छी तरह से और दिनभर में कई बार धोना, छींकते या खांसते वक्त मुंह को ढंक कर रखना, सार्वजनिक स्थान पर दूसरे लोगों से कम से कम एक मीटर यानी करीब तीन फीट की दूरी पर रहना, बुखार, खांसी या सांस लेने में दिक्कत हो तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करना, पालतु जानवरों को छूने के बाद अपनी सफाई का ध्यान रखना इत्यादि प्रमुख है। लॉक डाउन भी उसी श्रेणी में उठाया गया एक कदम है ताकि लोगों को मिलने के कम अवसर मिलें और बीमारी के प्रसार को रोका जा सके।

जब भी कोई महामारी फैलती है तो एलोपैथिक दवाओं का उपयोग सबसे ज्यादा किया जाता है क्योंकि उन पर विश्व भर में अनुसंधान होते हैं और उनके उपयोग की प्रमाणिकता भी सुनिश्चित मानी जाती है। कोरोना के संदर्भ में दुनिया भर के डॉक्टर पहले ही कह चुके हैं कि इस वायरस की वैक्सीन बनने में कम से कम एक से डेढ़ साल का समय लग सकता है। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठता है कि दुनिया इस बिमारी का सामना कैसे करेगी?

भारत जैसे बड़ी आबादी वाले देश कैसे कोरोना का सामना कर पाएंगे और क्या केवल लॉकडाउन जैसी व्यवस्था से इस बीमारी से उबर पाएंगे? बहुत लंबे समय तक चलाया गया लॉक डाउन क्या देश की अर्थव्यवस्था को चौपट नहीं कर देगा? इन स्थितियों में हमें दूसरे विकल्पों की ओर भी सोचना होगा तथा ऐसे उपाय करने होंगे जिसमें हम कोरोना वायरस के साथ रहना सीख जाएं। इस का मात्र एक ही रास्ता है कि हममें इतनी रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो जाए कि कोरोना का संक्रमण हमारे ऊपर प्रभावी ना हो सके। इस दिशा में प्रयास करने के लिए जैसे ही विचार मन में आता है तो सबसे पहला ध्यान भारतीय आयुर्वेदिक चिकित्सा शास्त्र की ओर जाता है। यह एक समग्र चिकित्सा पद्धति है जिसे प्राचीन काल से भारत के ऋषि मुनियों ने मौखिक रूप से आगे बढ़ाया और 5000 वर्ष पूर्ण एकत्रित कर उसे लिखित ग्रंथों के रूप में स्थापित किया गया। एक तरफ देखें तो आयुर्वेद औषधि केंद्र विश्व भर में फैले हुए हैं, मगर महामारी वाली

स्थिति में लोगों का ध्यान इस तरफ नहीं जाता क्योंकि इस क्षेत्र में उतने अधिक अनुसंधान नहीं होते जितने के एलोपैथिक दवाओं के क्षेत्र में होते हैं।

महामारी के फैलने के दौरान यह तथ्य सामने आया कि यह बीमारी उन लोगों को अधिक संक्रमित नहीं कर पाती जिन की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी है। आयुर्वेद में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने हेतु अनेक जड़ी बूटियां है। गिलोय या गुडूची एवं तुलसी इन जड़ी–बूटियों में मुख्य हैं। सीएसआईआर के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. एस के रावत ने बताया कि इन जड़ी–बूटियों के उपयोग से शरीर में विषाणु अवरोधकतत्व (इंटरफेरॉन) और एंटीबॉडी की उत्पत्ति होती है जिससे व्यक्ति के शरीर में वायरस के खिलाफ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

भारतीय चिकित्सा पद्धति में योग का भी अपना महत्व है। कपालभाति, भ्रामरी, उदगीथ, भस्त्रिका, और अनुलोम–विलोम जैसे प्राणायाम हमारे श्वसन तंत्र को मजबूत बनाते हैं वह हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करते हैं। प्राणायाम एक विशेष प्रकार से सांस लेने की प्रक्रिया है जिसके सही अभ्यास करने से शरीर में ऑक्सीजन ग्रहण करने की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है जिसके फलस्वरूप हम रोगों से अच्छी तरह से लड़ पाते हैं। सूर्य नमस्कार तथा अन्य योगासनों से हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। प्राणायाम और अन्य योगासनों के निरंतर अभ्यास से हमारी श्वेत रक्त कणिकाएं मजबूत तथा अधिक संख्या में हो जाती हैं और किसी भी बाहरी विषाणु के प्रभाव से हमारे शरीर की रक्षा करती हैं। इस प्रकार योग हमें रोग की चपेट में आने से बचाता है। इसलिए योग एक ऐसा उपाय है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। योग के लाभ को देखते हुए हार्वर्ड मेडिकल स्कूल ने कोरोनावायरस मरीजों की एंजाइटी से लड़ने हेतु योग व ध्यान की सलाह दी है। उन्होंने माना कि यह व्यक्ति को रिलेक्स करने के सही उपाय हैं।

निसंदेह कुछ आयुर्वेदिक औषधियां कोरोनावायरस से लड़ने में सक्षम हो सकती हैं। परंतु अभी ऐसा दावा करना उचित प्रतीत नहीं होता क्योंकि उन पर अभी आवश्यक शोध नहीं हुआ है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात में यह कहा कि भारत के युवाओं को इस क्षेत्र में आगे आकर शोध करना होगा और जैसे विश्व ने योग को स्वीकार किया है, आयुर्वेद को भी स्वीकार करेगा। उन्होंने इसे दुर्भाग्य माना कि अपने ही देश के लोग अपनी शक्तियों और वैभवशाली धरोहर को नहीं पहचान पाते परंतु जब वही चीज शोध के उपरांत प्रामाणिकता के आधार पर दूसरे देश हमें सिखाते व बताते हैं तो हम तुरंत उसे स्वीकार कर लेते हैं। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों पर अधिक से अधिक शोध हो और ऐसे फार्मूले निकाले जाएं जो आगामी जीवन में भी विभिन्न बीमारियों से लड़ने में कारगर हो सकें।

देश दुनिया में कोरोना संक्रमितों की संख्या काफी तेजी से बढ़ी है। कोरोना से ठीक होने वाले मरीजों की संख्या भी काफी ज्यादा है। लगभग 49 प्रतिशत लोग कोरोना से ठीक होकर घर वापस जा चुके हैं। मगर कुछ पश्चिमी देशों में एक प्रश्न उठ रहा है कि जो लोग कोरोना से ठीक होकर घर जा चुके हैं क्या उन्हें भविष्य में स्वास्थ्य संबंधी दूसरी परेशानियां हो सकती है? जैसा कि कुछ देशों में देखने में आया है।

कोरोना से ठीक होने वाले मरीजों को आगे भी परेशानी आ सकती है?

इस सवाल के उत्तर में अलग–अलग विशेषज्ञ की अलग–अलग राय है। उदाहरण के लिए जैसे कोरोना संक्रमित कोई व्यक्ति कैंसर से पीड़ित है और वह कोरोना से रिकवरी कर लेता है तो आगे चलकर उसे हृदय और गुर्दे (किडनी) से संबंधित बीमारी होने का खतरा हो सकता है। फिर भी अधिकतर विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना के जो मरीज 15 से ज्यादा दिन तक आईसीयू में भर्ती रहे, उनको मानसिक या फिर फेफड़ों की क्षमता (लंग कैपेसिटी) की समस्याएं आ सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य लाभ (रिकवरी) के कई महीनों बाद भी मरीजों के लिए मनोचिकित्सक के संपर्क में रहना जरूरी है।

सम्पर्क ईमेल : neeta.kulshreshtha@gmail.com

***

"घर में रहें, सुरक्षित रहें"

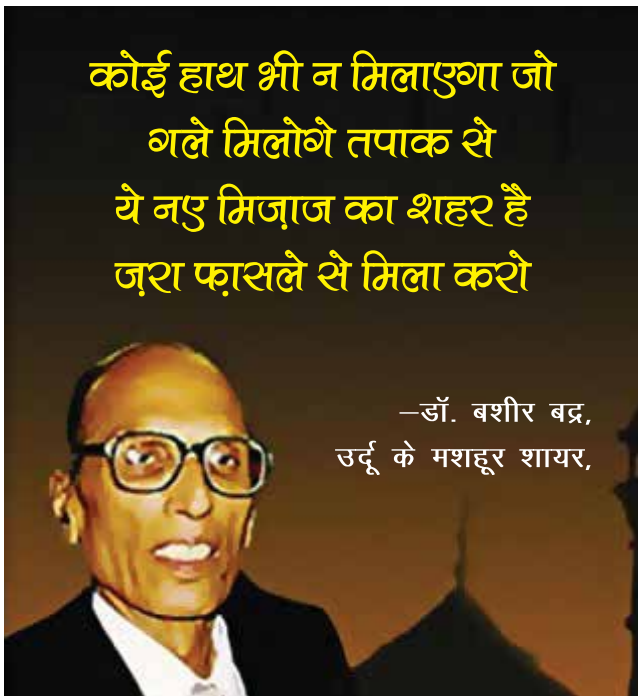

उर्दू के वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. बशीर बद्र की तीन दशक पहले कही गई पंक्तियां आज कोरोना काल में सटीक लगती हैं।

गुजर जाएगा ये दौर भी 'गालिब'
जरा इत्मीनान तो रख,
जब खुशी ही ना ठहरी
तो गम की क्या औकात है..!

आंध्र प्रदेश

पर्यटकों के लिए विभिन्न आकर्षण

–राजेश कुमार सिंह

आंध्र प्रदेश राज्य में शामिल क्षेत्र को प्राचीन काल में अनेक नामों जैसे कि आंध्रपथ, आंध्रक्षेत्र इत्यादि से जाना जाता था।

सातवाहन एवं इक्ष्वाकु वंश के राजाओं के करीब 400 साल के शासन काल के दौरान आंध्र–क्षेत्र, बौद्ध संस्कृति का एक प्रसिद्ध केंद्र बना। भारतवर्ष के कई हिस्सों में प्राचीन काल में शिलाओं को काटकर अनेक स्तूप, चैत्य एवं विहार तराशे गए। इसी परम्परा के अंतर्गत, बौद्ध संस्कृति के प्रारंभिक चरण में, आंध्र में भी कई स्थानों पर पहाड़ियों को काटकर तराशा गया। इनमे बोजनकोंडा एवं गुंटुपल्ली प्रसिद्द हैं। गुंटुपल्ली में एक शैल – गुफा बाहर से देखने पर बिहार राज्य के जहानाबाद के नागर्जुनी–लोमश ऋषि गुफा की याद दिलाती है। शैल गुफा मंदिरों की परम्परा में, चौथी–पांचवी शताब्दी के दौरान, राज्य में कई हिन्दू मंदिर भी पहाड़ियों को तराश कर बनाए गए। गुंटूर जिले के उंडावल्ली में विजयवाड़ा शहर के निकट, एक बहुमंजिली गुफा मंदिर तराशी गई है। इसमें अनेक हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियां हैं। इस मंदिर के दूसरे तल के पश्चिमी प्रकोष्ठ में शेषशायी विष्णु की लेटी हुयी मनोहारी प्रतिमा उकेरी गयी है। ऐसी प्रतिमा केवल उदयगिरी (मध्यप्रदेश) एवं महाबलीपुरम (तमिलनाडु) की शैल गुफाओं में देखने को मिलती हैं।

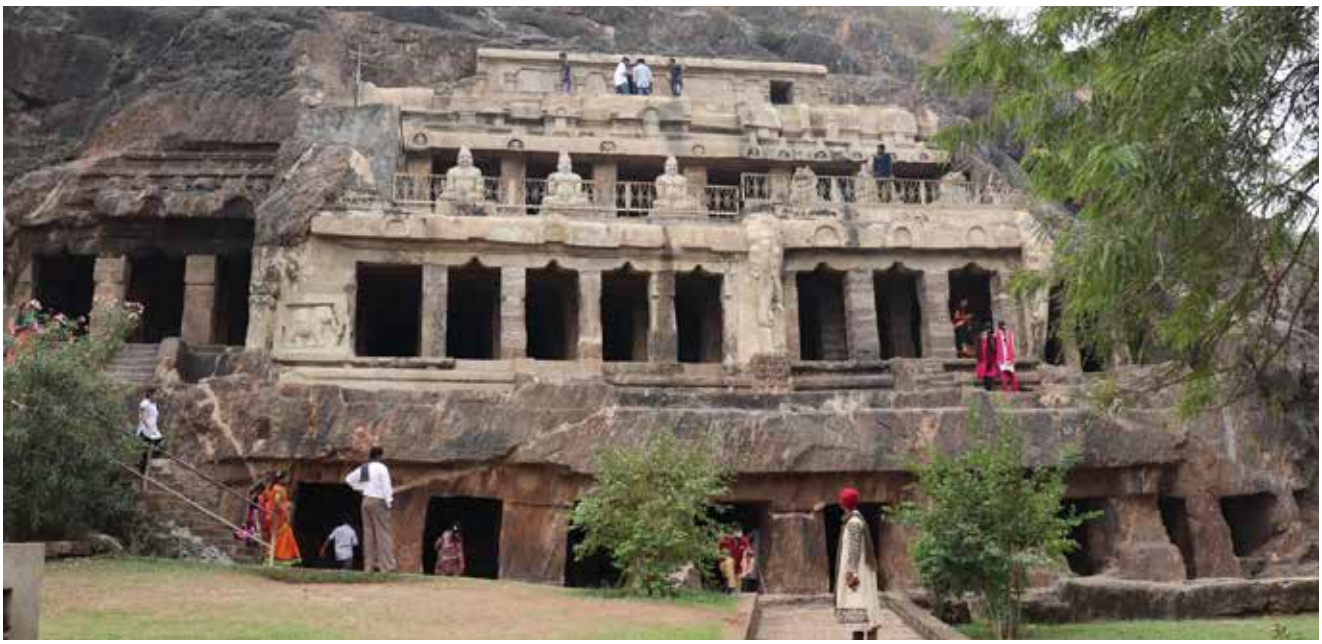

*संयुक्त सचिव, भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली

इसी काल में आंध्र–क्षेत्र में ईंट–पत्थरों का प्रयोग करके भी अनेक स्तूपों एवं विहारों का निर्माण हुआ। अमरावती, नागार्जुनकोंडा, भट्टीप्रोलु, घंटशाला, गोली, जग्गयापेट, दन्तपुरम, बाविकोंडा, तोट्लकोंडा, चांदवरम, गुड़ीवाड़ा डिब्बा, सलिहुण्डम इत्यादि स्थानों में बने स्तूपों के ध्वंशावशेष अभी भी देखे जा सकतें हैं। मध्यप्रदेश राज्य के भरहूत एवं सांची के महास्तूपों की तरह आंध्रप्रदेश भी अमरावती, नागार्जुन–कोंडा एवं भट्टीप्रोलु भी महास्तूपों के लिए प्रसिद्ध हैं।

आंध्र के स्तूपों की विशेषता यह है कि जहां मध्यभारत के स्तूपों की बाह्य सतह सादी होती थी, वहीं आंध्र के स्तूपों के बाहरी आवरण पर सुंदर मूर्तियों से सज्जित शिलापट्ट पाए गए हैं। कई विद्वानों का मानना है कि आंध्र की यही कलाधारा कालांतर में गुप्तकाल की स्वर्णिम कला के रूप में प्रस्फुटित हुई। यह सहज स्वाभाविक ही है कि प्रगति के पथ पर अग्रसर आंध्रप्रदेश राज्य ने अपनी नई राजधानी का नाम "अमरावती" चुना है। उल्लेखनीय यह भी है कि अमरावती के नाम से आंध्र–क्षेत्र के शिल्प कला की एक विशिष्ट शैली प्रचलन में आई, जो उस समय के गंधार एवं मथुरा शैली के साथ–साथ प्राचीन भारत के वास्तु एवं शिल्पकला की एक गौरवान्वित धरोहर है।

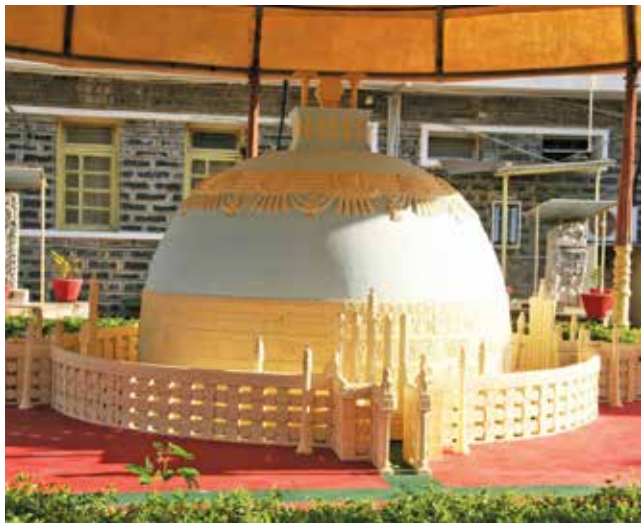

अब इन स्थानों पर स्तूपों के कुछ अवशेष ही दिखते हैं पर सौभाग्य से इन स्तूपों के बाहरी सतह पर सज्जित शिलापट्टों के कई हिस्से देश–विदेश के अनेक संग्रहालयों में सुरक्षित एवं प्रदर्शित हैं। इनमे आंध्रप्रदेश में अमरावती एवं घंटशाला के संग्रहालय प्रमुख है।

अदुरू स्थित स्तूप

राज्य के विजयवाड़ा एवं विशाखापट्नम में भी बड़े संग्राहलय स्थापित किये गए हैं। विशाखापट्नम का विशाखा संग्राहलय डच पुनर्वास बंगले में स्थित है, जिसमें मद्रास प्रेसिडेंसी का इतिहास प्रदर्शित है। प्राचीन मूर्तियों, चित्र, हथियार, शिलालेख इत्यादि का एक अच्छा संग्रह, विजयवाड़ा के विक्टोरिया जुबिली संग्रहलय में प्रदर्शित है।

इक्ष्वाकु वंश के राजाओं के शासन काल के दौरान नागार्जुनसागरकोंडा में ईटों एवं पत्थरों का प्रयोग करते हुए अनेक हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण हुआ था। इसी कड़ी में आंध्र–क्षेत्र में प्रथम शताब्दी से लेकर आधुनिक युग तक अनेक मंदिरों का निर्माण किया गया था। मंदिर निर्माण के प्रौढ़–चरण में वास्तुकला की भव्य रूपरेखा बनाई गई थी। अनेक प्रसिद्ध मंदिरों के कारण, आंध्र के कई तीर्थ स्थल देश–विदेश के श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं, जिनसे राज्य में 'आध्यात्मिक पर्यटन' की संभावनाएं अत्यंत प्रबल हैं। चित्तूर जिले के तिरुपति में श्रीवैंकटेश्वर स्वामी का और उससे कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर श्री काल हस्ती भगवान शिव का प्रसिद्ध मंदिर है। कर्नूल जिले के श्रीशैलम में श्री ब्रह्मारम्भ–मल्लिकार्जुन

मंदिर है। यह शिव–पार्वती मंदिर जहां देश के पवित्र ज्योतिर्लिंगों में से एक है वहीं शक्तिपीठों में भी एक विशेष स्थान रखता है। अनन्तपुरम के लेपाक्षी में वीरभद्र मंदिर प्रांगण में शिव के वाहन नंदी की, पूरे देश भर की विशालतम मूर्ति है। पूर्वी गोदावरी के अन्नावरम में श्री वीरवेंकट सत्यनारायण स्वामी, विशाखापट्नम के सिंहाचलम में श्री वराह नरसिम्हा स्वामी, विजयवाड़ा में कनकदुर्गा, कालहस्ती में श्री शिव, द्राक्षाराम में भीमेश्वर स्वामी मंदिर इत्यादि राज्य के अन्य प्रमुख मंदिर तीर्थ स्थल हैं।

इन सभी तीर्थ स्थानों से कई प्रचलित धार्मिक कथाएं जुड़ी हैं। यद्यपि आंध्र के ज्यादातर मंदिर द्रविड़ शैली में बनाए गए हैं, पर राज्य के उत्तरी जिले श्रीकाकुलम में नागरा शैली में बने मंदिर भी दृष्टिगोचर होते हैं।

राज्य में यात्रा के दौरान अनेक स्थानों पर छोटे–छोटे गिरिजाघर, ईदगाह और मंदिरों के दर्शन होते हैं जो राज्य की सांझी संस्कृति को प्रकाशित करते हैं। विशाखापट्नम में बंदरगाह के समीप तीन निकटवर्ती पहाड़ियों यानि रास–हिल, दरगाहकोण्डा एवं श्री श्रृंगमणिकोंडा पर क्रमशः कैथोलिक चर्च, पीर इशाक मदीना की मजार एवं श्री वेंकटेश्वर मंदिर का निर्माण भारतीय संस्कृति के इसी पक्ष को रेखांकित करते हैं। डच एवं ब्रिटिश लोगों के प्रभाव से मचिलिपट्नम एवं विशाखापट्नम जैसे बंदरगाह–नगरों में, ऐतिहासिक दृष्टि से चिन्हित आधुनिक काल में, कई गिरिजाघरों का निर्माण हुआ था।

राज्य, तेलुगु संस्कृति के अनेक आयामों, यथा भाषा–साहित्य, नृत्य शैली, हस्तकलाओं इत्यादि के लिए भी जाना जाता है। कृष्णा जिले के कोण्डापल्ली ग्राम (विजयवाड़ा) में हस्तशिल्पकार मुलायम लकड़ियों का प्रयोग करके अनेक प्रकार के रंग–बिरंगे खिलौने तैयार करतें हैं। ये खिलौने जहाँ एक ओर नित्य–प्रतिदिन के ग्रामीण जीवन की घटनाओं को दर्शाते हैं वहीं दूसरी और अनेक देवी–देवताओं को। विशाखापट्नम के पास इतिकोपक्का में भी लकड़ियाँ के रंग–बिरंगे खिलौने बनाए जाते हैं, जिन पर चटख लाख के रंग चढ़ाये जाते हैं।

कलमकारी की कला, जिसमे वस्त्रों पर कलम एवं स्याही का प्रयोग करके चित्र अंकित किये जाते हैं, आंध्रप्रदेश के दो नगरों, मचिलीपट्नम और कालाहस्ती में बहुत प्रचलित है।

राज्य के कृष्णा जिले में कुचिपुड़ी ग्राम, इसी नाम के शास्त्रीय नृत्य के लिए अब देश विदेश में प्रसिद्ध है। यह नृत्य "संगीत कला अकादमी" द्वारा, शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता प्राप्त आठ

नृत्यों में से एक है तथा अपने अद्वितीय शैली एवं भाव–अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है। भरत मुनि द्वारा रचित नाट्य–शास्त्र से प्रेरित इस नृत्य में "तांडव" एवं "लास्य" तत्वों का प्रदर्शन होता है, जो क्रमशः पुरुष एवं स्त्री के गुणों को परिलक्षित करतें हैं। राज्य में अनेक लोक–नृत्यों का वर्णन भी मिलता है यथा चेंचु भागोत्तम, भामाकलापम, वीरनाट्यम, बुट्ट बोम्मलु, कोलाट्टम इत्यादि।

तेलंगाना की तरह आंध्र प्रदेश में भी कथा सुनाने की लोकशैली प्रचलित है। इसे बुर्र कथा कहते हैं। तटीय आंध्र में इसे जंगम–कथा तो रायलसीमा में तंदना–कथा या सुडुलु के नाम से जाना जाता है। टोली में कहानी सुनाने वाला मुख्य वाचक "कथा कुडु" कहलाता है। कथा वाचक धार्मिक और सामाजिक दोनों तरह के विषयों की चर्चा करते हैं एवं अपनी बात कहने के लिए वाचन के अनेक रूपों यथा प्रार्थना, एकल नाटक, नृत्य, गीत, कविता और चुटकुलों का भी प्रयोग करते हैं। मुख्य वाचक वाद्य के रूप में तम्बूरे का प्रयोग करता है जबकि सह कलाकार छोटे–छोटे ढोल बजाते हैं।

राज्य में विभिन्न धर्म के अनुयायी अनेक पर्व मनाते हैं। यहाँ मनाये जाने वाले त्याहारों में संक्रांति, दशहरा, कुनुमा, महा–शिवरात्रि, होली, युगादी (तेलगु नववर्ष), श्री राम नवमी, वरलक्ष्मी–व्रतम, क्रिसमस, ईद आदि प्रमुख हैं। संक्रांति के अवसर पर रंगोली की परंपरा को संजोए रखने के लिए अनेक स्थानों पर स्पर्धाएं आयोजित की जाती हैं।

विजयवाड़ा के गुंडिचा की पहाड़ी पर मदर मैरी चर्च के परिसर में फरवरी में हर वर्ष मेले का आयोजन होता है। महाशिवरात्रि, पुष्करालु एवं पीरों के उर्स के अवसर पर कई स्थानों पर मेले लगते हैं। जैसे उत्तर भारत में गंगा एवं यमुना नदियों को देवी–रूप में पूजा जाता है ठीक वैसे ही यहां के श्रद्धालु कृष्णा और गोदावरी नदियों को जीवनदायिनी नदियों के रूप में पूजते हैं। जहां

एक ओर इब्राहिमपट्नम के पास "पवित्र–संगमम" पर कृष्णा एवं गोदावरी का संगम होता है वहीं दूसरी ओर हंसलदीवि के निकट "सागर संगमम" में कृष्णा नदी बंगाल की खाड़ी में मिलती है। पुष्करालु के अवसर पर श्रद्धालु, गोदावरी एवं कृष्णा नदियों के किनारे बने घाटों पर स्नान करते हैं।

इन नदियों पर विजयवाड़ा एवं राजमुन्दरी में आधुनिक काल में निर्मित विशाल पुल भी सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करतें है। सायंकाल में जहां एक ओर डूबते सूर्य की रोशनी में ये पुल अद्भुत लगते हैं वहीं नदियों के किनारे बने मंदिरों के घंटों एवं पूजा, अर्चना की आवाजें एक पवित्र वातावरण बनाते हैं।

इस प्रकार प्राचीन परम्पराओं एवं आधुनिक विकास का अदभुत संगम – आंध्र प्रदेश–पर्यटकों के लिए विभिन्न आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आकर्षण प्रदान करता है।

नोटः सभी चित्र लेखक के सौजन्य से

***

मौलिक व अप्रकाशित कहानी

छुई-मुई

–सुशांत सुप्रिय

उस गांव में एक घर है जिसमें मैं रहता था। इस घर के पुरुष जनेऊ पहनते थे। उस गांव के बिना इमारत, बिना छत वाले स्कूल में एक मास्टरजी पढ़ाते हैं जिन्हें हम सुकुल मास्टर जी कहते हैं। मैं उस स्कूल में पढ़ता था पर उनके सोटे से मुझे बहुत डर लगता था। गांव के कुएं के चबूतरे पर खेलता हूँ। गांव के मंदिर में पिताजी के साथ पूजा करता हूँ। लेकिन गांव में ऐसे बच्चे भी हैं जो इस स्कूल में नहीं पढ़ सकते। जो कुएं के चबूतरे पर कदम नहीं धर सकते। जो गांव के मंदिर की सीढ़ियां नहीं चढ़ सकते। जो उस मंदिर में पूजा नहीं कर सकते।

एक दिन स्कूल के बाद मैं खेलता–खेलता मुसहर टोले की तरफ चला गया, हालाँकि उधर जाना मना था। वहां एक नौ–दस साल की लड़की तालाब के किनारे मछली पकड़ रही थी। न जाने क्यों वह मुझे अच्छी लगी उससे बात करने को मन हुआ।

"ऐ लड़की, तुम्हारा नाम क्या है? हमसे दोस्ती करोगी? हमको मछली पकड़ना सिखाओगी ?" मैंने धड़कते दिल से पूछा।

"धनिया।" फिर कुछ रुक कर मेरे कंधे पर लटके बस्ते को देखकर उसने कहा। "हमें भी अपने साथ इस्कूल ले चलोगे ? "

"हां हां क्यों नहीं ?" मैंने बिना कुछ सोचे समझे जल्दी से हाँ तो कर दी पर बाद में सोचने लगा कि स्कूल में इसका साथ अच्छा रहेगा। तभी मुझे माँ–पिताजी की बात याद आई कि मुसहर टोले में गंदे लोग रहते हैं, उधर नहीं जाना चाहिए। यह सोचकर कि मैंने मुसहर टोले की एक लड़की को अपना दोस्त बना लिया है, मुझे मन ही मन एक डर भी लगने लगा था। कहीं भैया या दीदी ने देख लिया तो ? माँ–पिताजी को पता चल गया तो ? लेकिन धनिया से दोस्ती का आकर्षण उस डर से बड़ा था।

कभी आप बड़े आदमी हो जाते हैं, कार में चलते हैं, एक सम्भ्रांत घर की पढ़ी– लिखी लड़की से आपका विवाह हो जाता है। विमान से देश–विदेश की यात्राएं करते हैं। बड़े बड़े सम्मेलनों के दौरान पंच–सितारा होटलों में ठहरते हैं। फिर भी कुछ स्मृतियां ऐसी भी होती हैं जिनकी जड़ें अन्यों से अलग कहीं अधिक गहरी होती हैं। आप अपनी उन स्मृतियों का क्या करेंगे? जहां कभी आपका एक अंश पीछे छूट गया था। समय और स्थान की दूरी भी उन्हें आपसे कभी अलग नहीं कर सकी। अक्सर आपका मन आपको वहीं अतीत में लौटा ले जाना चाहता है जैसे

*सम्प्रतिः लोकसभा में अधिकारी

काली रात में आकाश में बिजली कौंधने पर पल भर के लिए उजाला हो जाता है और आपको क्षणिक ही सही, सब कुछ साफ–साफ दिखाई देने लगता है ...पर आप बेबस...कुछ नहीं कर पाते...

फिर क्या था। मैं रोज स्कूल से लौटते समय कुछ देर के लिए मुसहर टोले के आगे गांव के बाहर उगे जंगल में धनिया से मिलने के लिए जाने लगा। कुछ ही दिनों में मुसहर टोले के कई और बच्चे भी मेरे अच्छे दोस्त बन गए। कलुआ, बिसेसरा, गनेसी, रमुआ नाम के लड़के – कलजुई और घन्सारी नाम की लड़कियां –– सब धनिया के साथ वहीं जंगल में घूमते मिल जाते थे। उनके कपड़े फटे हुए और गंदे होते थे, उनकी नाक बह रही होती थी। फिर भी वे मुझे अच्छे लगते थे। वे शहद के छत्ते में आग लगा कर शहद निकाल लेते थे, गुलेल से निशाना लगा कर उड़ती चिड़िया गिरा लेते थे। एक दिन मैंने जिद की।

''हमको भी गुलेल चलाना सिखाओ न ?'' मेरे कहने पर घन्सारी बोली, ''तुम्हारे बाबू को पता चला कि तुम हम लोगों के साथ घूमते हो तो तुमको बड़ी मार पड़ेगी।''

''क्यों ?'' यह तो मैं भी यह जानता था फिर भी मैंने बड़ी मासूमियत से पूछा।

''हम लोगों के साथ घूमने–फिरने से, हमारा छुआ खाने–पीने से तुम्हारा धर्म जो नष्ट हो जाएगा।'' धनिया ने कहा।

''मैं इन बकवास बातों को नहीं मानता।''

एक बारह साल के बच्चे के लिए तालाब के पानी में चपटे पत्थर से 'छिछली' खेलना सीखना, आम के पेड़ पर चढ़ना सीखना, गुलेल चलाना सीखना और मछली पकड़ना सीखना जैसे काम 'धरम' के बारे में सोचने से ज्यादा जरूरी थे। यूँ भी मुझे उनका साथ अच्छा लगता था। इसलिए घर पर पता चल जाने पर मार पड़ने का डर होते हुए भी मैंने उन सबका साथ नहीं छोड़ा।

एक दिन मैंने उनसे पूछा– '' अच्छा, बताओ, मुझे तुम सब लोग क्यों अच्छे लगते हो ?'' इससे पहले कि बाकी कुछ कह पाते, धनिया तपाक से बोली, ''पिछले जन्म में तुम भी मुसहर रहे होगे, और का!'' न जाने क्यों यह सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। एक दिन मुझे एक छोटा सा पर अजीब सा छोटा सा पौधा दिखाई दिया, जिसे हाथ लगाते ही वह सिकुड़ कर सिमट सा जाता था, उसकी पत्तियां जैसे शरमा कर खुद में ही बंद हो रही हों।

छुई मुई का पौधा, जो हाथ लगाते ही मुर्झा जाता है।

एक दिन तालाब के किनारे घूमते हुए मैंने पूछा।

''यह कौन–सा पौधा है?''... ''यह तो छूने से पहले ही मुरझा रहा है ?''

''इ छुई–मुई है।'' धनिया ने बताया। ''हां...इ छूने से पहले ही मुरझा जाती है।''

''मगर कोई इसे पकड़ कर मसल दे तो...है?''

''तो इ बिचारी का कर सकती है ?... नागफनी की तरह कांटें तो लगे नहीं, इसमें..जो पकड़ने वाले के हाथ चीर दे...मासूम सी बेबस है।'' में धनिया की बात पर चुपचाप हंस कर रह गया था।

अगले दिन शरारत में ही मैंने धनिया के पेट में उंगली से गुदगुदी कर दी। वह हँसते–हँसते जमीन पर गिरकर लोट–पोट होने लगी। मैं भी उसके साथ जमीन पर बैठकर उसकी देह पर अपनी उंगलियों से गुदगुदी करता रहा। इस सब के बीच मेरा मुँह उसके मुँह के करीब आ गया ....। उसका चेहरा शर्म से लाल हो गया। लाज से उसकी देह ऐसे सिमट गई जैसे वह छुई–मुई की पत्ती हो।

''अरे, तुम तो बिलकुल छुई–मुई जैसा करती हो।'' मैंने कहा।

'' धत् ! '' यह कहकर वह वहां से भाग गई।

'' आज से हमने तुम्हारा नाम छुई–मुई रख दिया है।'' मैं चिल्लाया।

इसी तरह दिन बीतते रहे। एक दिन स्कूल के बाद जब मैं छुई–मुई और दूसरे दोस्तों से मिलने गया तो उन्होंने मुझे मेरा वादा याद दिलाया कि मैं उन सबको भी अपने साथ स्कूल ले जाऊंगा। अगले दिन के लिए बात तय हो गई। अगली सुबह छुई–मुई और मेरे दूसरे साथी स्कूल के पास मेरा इंतजार कर रहे थे। उन्हें लेकर मैं सुकुल मास्टरजी के पास पहुंचा। उन्हें देखकर सुकुल मास्टरजी के माथे पर बल पड़ गए।

''क्या है रे ? आज देर से क्यों आया है?''

''मास्साब, यह सब हमारे दोस्त हैं। यह भी हमारी तरह स्कूल में पढ़ना चाहते हैं।'' उनके सवाल का जवाब दिए बगैर मैंने कहा।

मास्टर साहब शायद उन सब के बारे में पहले से जानते थे। उन सबको जोर से डाँटते हुए बोले – ''भागो यहां से, ससुरो ! अब मुसहर लोग भी स्कूल में पढ़ेंगे !''

यह सुनकर छुई–मुई की आँखों में आँसू आ गए। मुझे बहुत बुरा लग रहा था। पर मैं मास्टर साहब के सोटे से बहुत डरता था। कलुआ, बिसेसर वगैरह मास्टर साहब को गाली देते हुए वहां से भाग गए। छुई–मुई भी रोते–रोते वहां से चली गई। उनके जाने के बाद मुझे सोटे से मारते हुए मास्टर साहब बोले, ''कुल का नाम खूब रोशन कर रहे हो, बबुआ !''

उसी दिन उन्होंने मेरे पिताजी को सारी बात बता दी। उस रात घर पर मेरी खूब कस कर पिटाई हुई और छुई–मुई और मुसहर टोले के दूसरे दोस्तों से मेरा मिलना–जुलना बंद करवा दिया गया। इस घटना के लगभग महीने में ही पिताजी ने मेरा नाम शहर के स्कूल में लिखवा दिया और आगे की पढ़ाई के लिए मुझे चाचाजी के पास शहर भेज दिया गया। मुझे शहर में छोड़ने आए पिताजी चाचाजी से कह रहे थे।

''गांव में रहकर यह बुरी संगत में बिगड़ रहा था।''

अब मैं साल में एकाध बार ही गांव आ पाता। वहां भी मुझ पर कड़ी नजर रखी जाती। मेरा मन छुई–मुई और दूसरे दोस्तों से मिलने के लिए छटपटाता रहता। समय कब बीत जाता है, पता ही नहीं चलता। फिर स्कूल की पढ़ाई खत्म करके मैंने किसी दूसरे शहर में कॉलेज में दाखिला ले लिया। गांव में गए हुए मुझे कई साल हो गए, लेकिन छुई–मुई की वह छवि मेरे भीतर अब भी सुरक्षित थी। अब मैं बड़ा हो गया था। मेरी दाढ़ी–मूँछें निकल आई थीं। मैं शेव करने लगा था। मेरे भीतर छुई–मुई से मिलने की इच्छा बलवती होती जा रही थी। फिर मेरी नौकरी लग गई और मैं एक अधिकारी बनकर काम में व्यस्त हो गया।

कई साल बाद पिताजी की मृत्यु के मौके पर जब मैं गांव में गया तो मैंने देखा कि मेरा गांव अब पहले वाला गांव नहीं रह गया था। वह बहुत बदल चुका था। पिताजी के दाह–संस्कार के बाद मैं छुई–मुई और दूसरे साथियों के बारे में पता करने मुसहर टोले की तरफ जा पहुँचा। अब मैं एक बड़ा अधिकारी था और उस ओर जाने से रोकने की न तो किसी में हिम्मत थी और न ही कोई रोकने वाला था। आस पास कोई जान पहचान वाला नहीं मिला। कुछ देर बाद एक बूढ़ा व्यक्ति मेरी ओर आया और उसने पूछा,''किस से मिलना है?''

A-5001, गौड़ ग्रीन सिटी, वैभव खंड, इंदिरापुरम,गाजियाबाद – 201014 (उ.प्र.) ई–मेल : sushant1968@gmail.com

''बाबा, यहां धनिया नाम की एक लड़की रहती थी।'

''हां साहिब रहती थी। ''वह अब कहां हैं?''

''तुम कौन हो बेटा ?'' मेरे अपना परिचय देने पर वह बताने लगा, ''धनिया के साथ बहुत बुरा हुआ, बेटा। पैसा–रुतबा वाला लोगन का लड़िका सब ऊ के साथ मुँह काला कर के ऊ का गला घोंट दिया और लास को तालाब में फेंक दिया।'' मुसहर टोले के एक बुजुर्ग ने दुखी मन से बताया। यह सुनकर मेरी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। मेरा गला सूखने लगा और मुझे साँस लेने में तकलीफ होने लगी। मुझे लगा जैसे मेरी उड़ान का आकाश हमेशा के लिए खो गया हो।

''और बिसेसर, कलुआ वगैरह कहाँ हैं ? '' मैंने किसी तरह खुद को सम्भालते हुए पूछा।

'' बेटा, ऊ लोग धनिया की मौत का बदला लेने गए थे। पर हत्यारा सब ने हमार सब बचवा को गोली मार दी। उसी रात बहुत से गुंडा लोग आए और मुसहर टोला में आग लगा दिया। '' बुजुर्ग की आँखों में अंधेरा सा भरा हुआ था।

''और धनिया के माँ–बाप का क्या हुआ ?'' मैंने डरते–डरते पूछा।

''वो बेचारे भी हमार टोला में लगी आग में जल के....वह बरबस रोने लगा..और मैं क्या करता ?'' बस ....चुपचाप सुनता रहा और सोचने लगा आज हमारे देश ने कितनी तरक्की कर ली है ?'' मगर आज भी यहा मुसहर टोले हैं। आज भी छुई मुई बस छुई मुई ही है और धनिया के शब्दों में नागफणी नहीं बन पाई है ?

***

कोरोना महामारी और पर्यटन-प्रभाव और चुनौतियां

–बाबू लाल

भारत अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक, भाषायी और स्थापत्य कला में विविधता के कारण पर्यटकों को आकर्षित करने की अद्भुत क्षमता रखता है। भारत में हिमालय, अरावली, सतपुड़ा, पश्चिमी घाट आदि पर्वतों के कारण प्राकृतिक, वानस्पतिक, वन्यजीवों की विविधता के साथ साथ विशाल आकार के कारण जलवायु विविधता भी पर्यटकों को आकर्षित करती है। इस विविधता के साथ– साथ स्वत्रंता के पूर्व राजा–महाराजाओं द्वारा बनवाए गए किले, भवन तथा विभिन्न धर्मों के तीर्थ– स्थल, मंदिर– मस्जिद तथा अन्य धार्मिक मेले व उत्सव आदि पर्यटकों को अपनी ओर खींचते हैं। इसके अलावा भी भारत की लंबी समुद्र तट रेखा, विभिन्न नदिया व झीलें आकर्षण का केंद्र हैं।

लोग स्वास्थ्य लाभ, पृथ्वी की विविधता व सौन्दर्य को निहारने तथा उनके बारे में जानने की जिज्ञासा के कारण देश व विदेश में भ्रमण करते है। वर्तमान के पर्यटन उद्योग एक सुदृढ़ व्यवसाय बन चुका है जो रोजगार और विदेशी मुद्रा प्राप्ति का बेहतर स्रोत है।

यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता रिपोर्ट– 2019 में भारत ने एक बड़ा सुधार दर्ज करते हुए, वर्ष 2017 में 40वें स्थान (रैंक) से उछलकर 2019 में 34 वां स्थान हासिल किया है। विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा प्रकाशित उक्त रिपोर्ट में कहा गया था कि इसमें भारत की संस्कृति, विरासत और प्राकृतिक सुन्दरता के साथ पर्यटन क्षेत्र में अवसंरचनात्मक सुधारों का सराहनीय योगदान है।

> भारत को विश्व के पर्यटन और यात्रा क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक में 34 वां स्थान प्राप्त है। भारत के सकल घरेलु उत्पाद (जीडीपी) में पर्यटन उद्योग का योगदान 2018–19 में 9.2 प्रतिशत रहा है।

पर्यटन के विभिन्न पक्षों पर आंकड़ों के शोधन के बाद हम इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि भारत में विदेशी पर्यटक आगमन 1981 में 1.28 मिलियन से बढ़कर 1991 में 1.68 मिलियन, 2001 में

*सम्प्रतिः शोधार्थी, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

2.54 मिलियन और 2018 में 10.56 मिलियन तक पहुंच गया। वर्ष 2019–20 में भारत में विदेशी पर्यटक आगमन 10.7 मिलियन था। (23, अप्रैल, 2020 तक) दूसरे शब्दों में भारत में पर्यटक आगमन में निरंतर वृद्धि हो रही है।

वर्तमान में कोरोना महामारी के चलते विश्व के सभी देशों ने जैसे जैसे देश में महामारी फैली वैसे ही अपने देश में सम्पूर्ण लॉक डाउन करना शुरू कर दिया था। जिसमें सभी उद्योग, व्यवसाय, परिवहन सहित सभी सेवाएं सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए बंद कर दिए गए ताकि महामारी का प्रसार न हो सके। यही स्थिति भारत की भी रही, यद्यपि कोरोना का डर फरवरी माह से ही हो गया था। अब की बार देश में कोरोना के डर और बचाव के कारण, हिचकते हुए लोगों की होली भी फीकी ही रही। 21 मार्च को माननीय प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कोरोना संकट के प्रति चेताया और रविवार 22 मार्च, 2020 को एक दिन का जनता कर्फ्यु लगाने को कहा, जिसका पूरे देश में पालन किए जाने के समाचार मिले थे। कोरोना के बढ़ते प्रभाव के कारण सोमवार, 23 मार्च, 2020 को प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को सम्बोधित करते हुए कोरोना के संकट से बचाव के लिए देश में 15 दिन का लॉक डाउन घोषित करना पड़ा। जिसमें 24 मार्च 2020 से जो जहां था वहीं रूक गया। इस लॉक डाउन के कारण पूरे देश में सभी उद्योग, व्यवसाय, परिवहन सहित सभी सेवाएं सामाजिक दूरी बनाए रखने के लिए बंद कर दी गई ताकि महामारी ज्यादा नहीं फैल पाए। महामारी के भय से लोगों का बाहर निकलना तथा सार्वजनिक स्थानों पर जाना बंद कर हो गया। हवाई–सेवाएं, रेल तथा परिवहन के अन्य सभी साधनों पर रोक लगा दी गई, साथ ही सभी बाजार और सभी निजी तथा सरकारी कार्यालय भी बंद कर दिए गए। इस लॉक डाउन के कारण सभी भ्रमण स्थलों और होटलों की बुकिंग, रेल तथा हवाई यात्राओं की बुकिंग रद्द कर देनी पड़ी, कारण एक ही था कोराना के प्रसार से बचाव। इससे लोगों को अपने जीवनयापन के लिए मुश्किलें खड़ी हो गईं, जिसके पास जो कुछ जमा–पूंजी थी उसी से काम चलाया। सरकार ने भी लोगों की मदद करने की घोषणाएं की, तो वहीं कुछ संगठन भी गरीब लोगों की सहायता के लिए सामने आए। इस बंद और भय से आम जनता को तो परेशानियों का सामना करना ही पड़ा, मगर रोज कमाकर खाने वाले मजदूर तबके भी कठिनाईयों से घिर गए, उन्हें अथक प्रयास करने पड़े।

वैसे तो सभी छोटे बड़े उद्योग इस महामारी के कारण हुए लॉक डाउन से बुरी तरह से प्रभावित हुए है। इसमें कार, इलैक्ट्रोनिक्स, हीरे–जवाहरात ही नहीं, खाने–पीने के सामान का थोक व्यापार और छोटे–बड़े किसान तक प्रभावित हुए और रही सही कसर कामगारों के पलायन ने पूरी कर दी है। अब जब अधिकतर बड़े उद्योग दोबारा अपना काम काज शुरू कर रहे हैं तो कुशल कामगारों की कमी की समस्या मुंह फाड़े उनके सामने है। परिस्थितियां चाहे कुछ भी हों, लेकिन यह एक सर्वविदित तथ्य है कि इससे पर्यटन और होटल व्यवसाय बुरी तरह से प्रभावित हुआ है।

कोरोना महामारी का पर्यटन पर प्रभाव

आर्थिक प्रभाव

इस महामारी के चलते सम्पूर्ण विश्व में लॉक डाउन किया गया जिससे पर्यटन की सभी गतिविधियां ठप हो गई और पूरे विश्व में ही पर्यटन उद्योग और इसके सहायक व्यवसाय जिसमें होटल, परिवहन, टूर एजेंसी, टूर एजेंट और गाइड बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा है।

लगभग सभी आर्थिक गतिविधियां बंद होने के कारण पूरे विश्व में लोगों की आय के स्रोत बंद हो गए, साथ ही लोगों ने अपनी बचतें भी अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने और चिकित्सा एवं स्वास्थ्य खर्चों में लगा दी। अब उनके पास नकदी की कमी है। आदमी को घूमने–फिरने का विचार तभी आता है जब लोगों के पास पर्याप्त पैसा हो।

इस कारक ने खासकर पर्यटन, होटल और परिवहन उद्योग को अधिक प्रभावित किया है। चूंकि पर्यटन क्षेत्र की सभी गतिविधियां बंद हैं और अधिकांश व्यवसायी पैसे की कमी के कारण कर्मचारियों का वेतन, बैंक का ऋण और ब्याज नहीं चुका पा रहे हैं। जबकि आय नहीं होने के बाद भी, उन्हें कुछ स्थायी व्यय (इस दौरान बेशक कुछ कम हो सकते हों) जैसे बिजली–पानी, स्थानीय निकायों को देय कर आदि के भुगतान तो करने ही होंगे।

इसका प्रभाव सरकार पर भी पड़ा देश में चिकित्सा सुविधाओं में पर्याप्त सुधार, लोगो को महामारी से बचाने और उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने पर सम्पूर्ण ध्यान लगाया और नकदी का प्रयोग किया। अतः सरकारों के पास बैंक उधार के अलावा आय को कोई साधन नही है।

राजनैतिक प्रभाव

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि पर्यटक स्थानीय नहीं होते हैं। वह या तो विदेशी या बाहरी यानि दूसरे प्रदेशों से आए होते हैं। महामारी के चलते स्थानीय प्रशासनों द्वारा बाहरी व्यक्तियों के आने पर रोक लगा दी ताकि बाहर से कोई संक्रमित व्यक्ति आकर वह बीमारी का कारण नही बनें। इसके साथ ही बाहरी मरीजों के कारण स्थानीय चिकित्सा संसाधनों तथा दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की आपूर्ति पर अधिक दबाव नही बढ़े। यह हाल केवल हमारे देश का ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के सभी राष्ट्रों के भी है। शायद इसी कारण ऐसी खबरें भी आईं जिनसे लगा कि स्थानीय प्रशासनों द्वारा प्रवासी लोगों की मदद करने में हिकिचाहट दिखाई दे रही थी। स्थानीय लोग महामारी के भय के कारण रक्षात्मक मोड में आते हुए, बाहरी लोगों के प्रवेश पर हिचकिचाने लगे हैं।

सामाजिक प्रभाव

इस महामारी के समय जहां एक ओर समाज में एक प्रकार का भय फैला है जिससे लोग एक दूसरे के नजदीक जाने से बचते हैं, वही दूसरी ओर सरकारों ने भी 'सोशल डिस्टेंसिंग' यानि सामाजिक दूरी बनाए रखने की अपील की है। साथ ही लोगों के आवागमन पर प्रतिबंध लगा दिया गया है ताकि स्थानीय स्तर पर महामारी को फैलने से रोक जा सके। लेकिन इसे समाज के लोग किसी भी बाहरी आदमी को विषाणु वाहक के रूप में देखते हैं। वहीं जो स्थानीय लोग प्रवास पर गए थे उनके वापस आने पर आस पड़ौस के लोग उनसे दूरी ही रख रहे हैं। यह भी सुनने

शीशे की दीवार लगे काउंटर

में आ रहा है कि यदि कोई कोरोना संक्रमित अस्पताल से ठीक होकर घर आया है तो उस कालोनी/सोसायटी के लोग उनके घर की तरफ से गुजरने मे भी परहेज कर रहे हैं, सामाजिक मेलजोल तो बहुत बाद की बात हो गई है।

परिवहन और होटल व्यवसाय पर प्रभाव

कोरोना के कारण सम्पूर्ण विश्व में लॉकडाउन किया गया जिससे सभी प्रकार के परिवहन रेल, बस और हवाई–मार्ग बंद हो गए वही होटलों की बुकिंग भी रद्द हो गई। इससे यह उद्योग आर्थिक संकट में आ गए और इससे जुड़े अधिकतर लोग बेरोजगार हो गए। परिवहन बंद होने के कारण लोग जहां थे वही फंस गए। आर्थिक संकट के कारण व्यवसायी चिंतित हैं। वही परिवहन व होटल उद्योग को दोबारा शुरू करने में भी कई समस्याएं है।

आशंकाएं : लोगों को भय बना हुआ है कि परिवहन के साधन तथा होटल जब खुलेंगे तो वह कहीं कोरोना के वाहक न बन जाएं इसलिए लोग अभी से इनका उपयोग करने से डर रहे हैं। राज्य सरकारों द्वारा कुछ होटलों को 'क्वारंटीन रूम' के रूप में इस्तेमाल करने से भी लोगों में भय का

माहौल है। कुछ क्षेत्रों में इस बात की आशंका जताई जा रही है कि जब स्थिति सामान्य होगी तो कुछ न कुछ अति सतर्क पर्यटक ऐसे होटलों में रुकने से परहेज कर सकते हैं।

वर्तमान चुनौतियां

वर्तमान महामारी के कारण बंद पड़े पर्यटन व्यवसाय की पुनः शुरू करना सब से बड़ी चुनौती है जिसने निम्नलिखित बिंदु को शामिल करना बहुत जरूरी होगाः

- पर्यटन स्थलों, परिवहन साधनों, होटल और इस उद्योग से जुड़े सभी स्थलों को सेनेटाइज करना तथा उन्हें पुनःशुरू कराना।
- पर्यटकों को पुनः आकर्षित करने के लिए बड़ी मात्रा में प्रचार करना होगा।
- पर्यटकों को भयमुक्त कर उन्हें विश्वास दिलाना कि उन्हें कोई असुविधा या दुविधा नहीं होगी और आवश्यकता होने पर सभी चिकित्सा सुविधाएं दी जाएंगी।
- स्थानीय लोगों को भी विश्वास में लेना होगा कि बाहरी व्यक्ति वायरस–वाहक नही हैं।
- विभिन्न स्थलों पर चेक पॉइन्ट बना कर चिकित्सा जांच की व्यवस्था करना।
- पर्यटकों की आर्थिक समस्या का समाधान कर तरलता की व्यवस्था करना।
- पर्यटन की नीतियों और योजनाओं का पुनर्मूल्यांकन करना, उन्हें और सुविधाजनक बनाना।

कुछ सुझाव...

- व्यापक स्तर पर सेनेटाइज का कार्य शुरू करके सभी पर्यटन स्थलों, सार्वजनिक वाहनों और होटलों आदि को वायरस मुक्त करना जिससे महामारी फैलाने का खतरा नहीं हो। इस कार्य में सार्वजनिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने की जरूरत है।
- टेलीविजन, रेडियो, समाचार पत्रों और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि के सहयोग से जनता को जागरूक करना कि सामाजिक दूरी बनाये रखने, मुंह पर मास्क लगाने तथा बार बार हाथों को सेनेटाइज करने से महामारी नहीं फैलती है इससे लोगों में मन में बैठा भय समाप्त होगा और वे दोबारा शुरुआत करेंगे।
- होटल व परिवहन उद्योग को आर्थिक मदद मुहैया कराना ताकि वह अपनी तरलता की आवश्यकताओ की पूरा कर के अपने व्यवसाय को दोबारा से शुरू कर सकें।
- बस, रेल, हवाई यात्रा स्थलों और सभी सार्वजनिक स्थलों पर स्वास्थ्य परीक्षण की सुविधाएं उपलब्ध करवाना ताकि किसी व्यक्ति को वाहक बनकर बीमारी फैलाने से रोका जा सके। साथ ही पर्यटकों को भरोसा दिलाना की उनके स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रखा जाएगा और त्वरित गति से सभी सेवाएं उपलब्ध करवाई जाएगी।
- सबसे पहले रेस्तरान आदि से शुरुआत की जाए। आध्यात्मिक पर्यटकों से भी शुरूआत

कर सकते हैं ताकि तीर्थ स्थल खुल सकें और उद्योग पुनः अपने दैनिक चक्र को आरम्भ कर कुछ आय शुरू कर सके।

- स्थानीय लोगों में भी विश्वास बहाली करना और उन्हें समझाना कि बाहरी लोगों को जांच के बाद ही प्रवेश दिया जा रहा है और उन्हें भी बताया जाए कि सामाजिक दूरी और मास्क से संक्रमण नही फैलता।
- महामारी को कारण लोगों की आय रुक गयी है। अत्यधिक स्वास्थ सेवाओं में खर्च के कारण बचत भी लगभग खत्म होने के कगार पर हैं अतः घूमने के लिए पर्याप्त नकदी की कमी को दूर करने के लिए विभिन्न पर्यटन स्थलों पर होटलों, बसों, हवाई सेवाओं आदि में विशेष छूट के प्रावधान और आकर्षक नीतियाँ भी लागू की जा सकती है।
- सरकार और निजी क्षेत्र के साथ साथ सार्वजनिक–निजी भागीदारी मॉडल (पीपीपी) के आधार पर आकर्षक टूर पैकेज की घोषणाएं की जा सकती हैं ताकि पर्यटकों को पुनः आकर्षित किया जा सके।
- सरकार द्वारा पर्यटन नीति की समीक्षा कर उसे वर्तमान समय की मांग के और अनुरूप बनाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

शीशे की दीवार लगा काउंटर – कोरोना से सावधानी

कुछ निजी होटलों में ऐसे काउंटरों का निर्माण किया गया है जिनमें कार्मिक और पर्यटन यात्री सीधे/आमने–सामने सम्पर्क में नहीं आते। होटलों में भी ऐसे काउंटरों का उपयोग किया जाए।

आतिथ्य इकाइयों के लिए कोविद–पश्चात् प्रोटोकॉल

इन बातों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत होगी

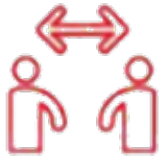

सामाजिक दूरी का पालन

शून्य स्पर्श ठहराव
न्यूनतम सम्पर्क

स्टाफ के लिए स्वच्छता प्रशिक्षण

हाथ शुद्धिकरण या हाथ धोने की सुविधा

नियमित रूप से कीटाणुरहित करना

होटल स्टाफ द्वारा मास्क तथा सेनिटाइजर्स का अनिवार्य उपयोग

इसके अलावा, कोविद–पश्चात् होटल आतिथ्य इकाइयों में इन सुविधाओं पर भी ध्यान देना जरूरी होगा

हैंड सैनिटाइजर्स

निजी सुरक्षा उपकरण (पीपीई)

मुखपट्टी / मास्क

गाउन

कचरा बैग

थर्मल गन

डीप क्लीनिंग के लिए रसायन

दस्ताने

रुम सर्विस के समय विशेष सतर्कता

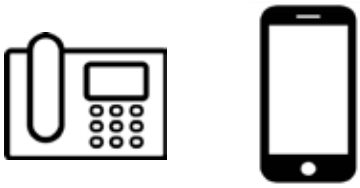

अतिथियों और इन–हाउस स्टाफ के बीच संवाद केवल इंटरकॉम या मोबाइल फोन के माध्यम से ही हो।

अतिथियों को कोई वस्तु, पानी की बोतल, प्रसाधन/चिकित्सा सामग्री या चादरें– तौलिए आदि देते समय एक मीटर की दूरी बनाए रखी जाए तथा हाथ के संपर्क से बचने के लिए ट्रे का उपयोग किया जाना चाहिए।

टीवी के रिमोट, गीजर आदि जैसे सामान्य मामलों के निवारण के लिए कर्मचारियों को फिर से प्रशिक्षित करना होगा ताकि वे फोन पर ही अतिथियों को सूचित कर उनका समाधान कर सकें।

क्या सोचा था कभी, कोरोना आएगा !

– राजेश सिंह

कभी सोचा नही था, ऐसे भी दिन आएंगे।
छुट्टियाँ तो होंगी पर, मना नहीं पाएंगे।।
आइसक्रीम का मौसम होगा, पर! खा नहीं पाएंगे।
रास्ते खुले होंगे पर! कहीं जा नही पाएंगे।।
जो दूर रह गए उन्हे, बुला भी न पाएंगे।
और सो पास हैं उनसे, हाथ मिला नही पाएंगे।।
जो घर लौटने की राह देखते, वह घर में ही बंद हो जाएंगे।
साफ हो जाएगी हवा पर! चौन की साँस न ले पाएंगे।।
नही दिखेगी कोई मुस्कुराहट, चेहरे मास्क से ढक जाएंगे।
खुद को समझते थे बादशाह, वो भी मदद को हाथ फलाएंगे।।
क्या सोचा था कभी, ऐसे दिन भी आएंगे।

**सम्प्रति : पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली में कार्यरत*

कोरोना से कांप रहे शब्दकोष

–बालेन्दु दाधीच

दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित शब्द कोषों को अपनी शब्दावली में विशेष अपडेट के लिए बाध्य होना पड़ा है। वजह है कोरानो वायरस से पैदा हुआ मौजूदा संकट। महामारी ने बहुत सारे नए शब्द पैदा किए है। ऐसे ही शब्द जब करीब करीब हर इंसान के दैनिक जीवन में जगह बना लें तो उन तक पहुंचना शब्दकोशों की पहली जिम्मेदारी बन जाती है। नतीजतन मरियम वेब्स्टर शब्दकोश ने अपने इतिहास का सबसे तेज अपडेट किया है जबकि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने भी तिमाही अपडेट करने का इंतजार किए बिना कोराना वायरस से जुड़े 14 नए शब्द जोड़े हैं।

कोरोना की महामारी ने गढ़े कई नए शब्द और बदल डाले पुराने शब्दों के अर्थ ।

दिलचस्प बात यह है कि दोनों के बीच बहुत कम शब्द साझा है। उम्मीद करनी चहिए कि हिन्दी शब्द शब्दकोश निर्माता भी जल्दी ही इन हालात की सुध लेंगे। मरियम वेब्स्टर शब्दकोश में शब्दों को तेजी से शामिल किए जाने का यह दूसरा मामला है। पिछली बार ऐसा 1984 में हुआ था जब एड्स की बीमारी ने दुनिया को भयभीत कर दिया था। हालांकि, किसी नए शब्द को इस शब्दकोश में शामिल होने के एक कड़े मापदंड से गुजरना पड़ता है। वह मापदंड है– उस शब्द का एक दशक तक चलन में रहना। लेकिन जब एड्स की महामारी आई तो पूरी दुनिया में उसका बहुत खौफ था और इस सूचना को विश्व स्तर पर फैलाना भी बहुत ज्यादा जरूरी था।

तब पहली बार एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए इस शब्दकोश में 'एड्स' शब्द जोड़ा गया। एड्स यानि एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिसिऐंसी सिंड्रोम। लेकिन तब तक इस शब्द को इस्तेमाल होते हुए दो साल बीत चुके थे। बहरहाल, अब मरियम वेब्स्टर डिक्शनरी ने अपना स्पेशल अपडेट जारी किया है, जिसमें कोराना वायरस महामारी से जुड़े हुए करीब एक दर्जन शब्द शामिल किए गए है। यह शब्द महज 34 दिन के भीतर यहां आ पहुंचे हैं तो जाहिर है कि इनके पीछे छिपी अवधारणाओं की अहमियत को शब्दकोश ने मान्यता दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 फरवरी, 2020 को जिनेवा में एक प्रैस कान्फ्रेंस में ऐसे कुछ शब्दों का जिक्र किया गया था। इसके अलावा पहले से मौजूद कुछ शब्दों को भी नए संदर्भो और अर्थों के साथ अपडेट किया गया है।

नए शब्द हैं – कोरोना वायरस डिजीज 2019, कोविड–19, कम्यूनिटी स्प्रैड, (सामुदायिक प्रसार), कांट्रेक्ट ट्रेसिंग (सम्पर्क खोज), सोशल डिस्टेंसिंग (सामाजिक अंतराल), सुपर स्प्रैडर (महाप्रसारक), इंडैक्स केस(प्रथम प्रकरण), इंडैक्स पेशेंट (प्रथम रोगी), पेशेंट जीरो (मूल रोगी), और सैल्फ क्वेरंटीन

सम्प्रति : वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक

(निज एकान्तवास)। आक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश ने मरियम वेब्स्टर के अपनाए शब्दों में से सिर्फ तीन चुने हैं– कोविड19, सोशल डिस्टेंसिंग और सैल्फ क्वेरंटीन। बाकी 11 शब्द हैं– एल्बो बंप (कोहनी उभार), टु फ्लैटन द कर्व (प्रसार समतलन), इन्फोडेमिक(सूचना महामारी), पीपीई (निजी सुरक्षा उपकरण), आर0 या आरनॉट (किसी एक संक्रमित से संक्रमण पाने वाले लोगों की औसत संख्या), सेल्फ आइसोलेट (स्व–पृथकवास या स्वेकांत), शेल्टर इन प्लेस (अपने स्थान में सीमित), सेल्फ आइसोलेशन (सामाजिक दूरी/अलगाव) और WHF यानि वक्र फ्रॉम होम (घर से काम)।

अभी कुछ शब्द इन डिक्शनरियों को प्रभावित नहीं कर रहे हैं। शायद किसी अगले अपडेट में इनकी भी बारी आ जाए। ये शब्द हैं कोवोडियट (कोरोअहमक), कोबीडियंट (कोज्ञापालक या कोसहमत), लॉक डाउन (घरबंदी, गृहसीमितता, सर्वत्र शून्यता या तालाबंदी), पैंडेमिक(वैश्विक महामारी) हर्ड इम्यूनिटी (सामुहिक रोग प्रतिरोधकता), कोरोनियल्स (कोरो पीढ़ी) आदि आदि। दावेदार शब्द और भी हैं – मिसाल के तौर पर गौर फरमाइए–पेशेंट जीरो (मूल रोगी या शून्य रोगी), जूनोटिक(जन्तु प्रसारित)। वह व्यक्ति रोग का सुपर स्प्रैडर (महाप्रसारक) बन जाएगा, अगर वह सेनिटाइजेंशन (शुद्धिकरण) में नहीं रहेगा ओर फेस मास्क (मुख पट्टी) का इस्तेमाल नहीं करेगा। ऐसे रोगी अमुनन वंटिलेटर (सांस संयंत्र या श्वसन संयत्र) तक अपनी पहुंच चाहते हैं। कोरो उपसर्ग का प्रयोग करके बने शब्द अनुठे हैं और अलग पहचान बनाते जा रहे हैं, जैसे – कोवोडियट, कोबोडियंट।

एक मिसाल देखिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

ने लोगों से आग्रह किया कि वह कोरोना से लड़ रहे लोगों के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए ताली–थाली, शंख वगैरह बजाएं। लेकिन बहुत से कोरोअहमक (कोरोइडियट) थालियां, शंख, ढोलक और मंजीरे आदि लेकर भारी भीड़ के रूप में गलियों में निकल गए। उधर कोज्ञापालकों (कोबोडियंट) की भी कमी नहीं थी। जैसे कचरे से कागज, पॉलीथीन आदि इकट्ठा करने वाला इंसान, जो ठीक पांच बजे ही अकेला खड़ा होकर ताली बजा रहा था।

पूर्ण लॉकडाउन

महामारी ने कुछ पुराने शब्दों और पहले से मौजूद शब्दों को भी नई जिंदगी के साथ साथ नए अर्थ दे दिए हैं। मिसाल के तौर पर लॉक डाउन का इस्तेमाल अब तक केवल हड़तालों आदि के लिए ही सुनने में आता था। लेकिन आज वह सामाजिक संदर्भ में इस्तेमाल हो रहा है। सोशल डिस्टेंसिंग अब तक उन लोगों के संदर्भ में लिए इस्तेमाल होता था जो समाज से अलग थलग बने रहते थे। यह उन लोगों के संदर्भ में भी उपयोग किया जाता था जिन्हें किसी कारण से समाज से अलग थलग कर दिया जाता था। हमारे यहां पर बुरी ही सही लेकिन गांव–बाहर, जात–बाहर या हुक्का पानी बंद करने जैसी अवधारणाएं प्रचलित हैं जो इसकी पारम्परिक परिभाषा के दायरे में आती थीं। लेकिन अब सोशल डिस्टेंसिंग एक सकारात्मक संदर्भ में सामने आया है। लोग खुद को सुरक्षित रखने के लिए एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर चल रहे है।

क्वारंटाइन शब्द भारतीयों के लिए कुछ हद तक अनसुना सा है। क्वारंटाइन हमारे यहां यह अवधारणा तो प्रचलित रही है (कुष्ठ, चेचक, तपेदिक जैसे रोगों तथा मृत्यु–उपरान्त कुछ दिन एकांत जैसे संदर्भों में) लेकिन ऐसे शब्द इतनी प्रचुरता से शायद ही कभी इस्तेमाल किए गए हों। इसी से जुड़ा शब्द है – आाइसोलेशन (पृथकवास) जो कभी नकारात्मक संदर्भ में ही इस्तेमाल होता था। लेकिन अभी तो ऐसा लगता है कि कोई आाइसोलेशन में है तो वह समाज पर कितना बड़ा उपकार कर रहा है। श्री दाधीच का विशेष आभार व्यक्त करते हुए नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली से साभार।

***

घर में पड़े हुए महीना हो रहा है। इस बीच श्रीमती जी को कई बार कहते सुना,

भगवान जाने कब ये बिमारी जाएगी। मैं नहीं समझ पा रहा हूं कि वह कोराना को कह रही है या फिर....।

कविताएं

कबीर

—सुशांत सुप्रिय

एक दिन आप
घर से बाहर निकलेंगे
और सड़क किनारे
फुटपाथ पर
चिथडों में लिपटा
बैठा होगा कबीर
' भाईजान ,
आप इस युग में
कैसे ? ' ——
यदि आप उसे
पहचान कर
पूछेंगे उससे
तो वह शायद
मध्य–काल में
पाई जाने वाली
आज–कल खो गई
उजली हँसी हँसेगा
उसके हाथों में
पड़ा होगा
किसी फटे हुए
अखबार का टुकड़ा
जिस में बची हुई होगी
एक बासी रोटी
जिसे निगलने के बाद
वह अखबार के
उसी टुकड़े पर छपी
दंगे–फसादों की
दर्दनाक खबरें पढ़ेगा
और बिलख–बिलख कर
रो देगा

एकता की लहर

—डॉ. विश्वरंजन

मैं वो सागर हूं।
जो किनारों पर मोती बिछाता हूं।
उदास नदी में उमंग की लहरें दौड़ाता हूं।
कोई इस लहर में आये तो सही।
गमों के भंवर से चुटकियों में निकलता हूं।
कोई मन ही मन से बतलाए तो सही।
सिसकियां निकलने लगी इस बहती धारा की।
जो दूर हैं किनारे पर, तुम रोक लो उसे.....
लहरों संग आया पास तुम्हारे संभाल लो उसे....
पग पग एकता का जोश जगाए वो सागर हूं मैं।
कुदरत ने तुम पर बरसाया मैं वो धार हूं मैं ।

जुगनुओं की चमक

यह उठा सवाल है ?
कल–कल, एहसास की धारा,
बहती है किस ओर।
पग देखो, मुड़ा हैं जिस ओर।
तमन्नाओं की झड़ी लगी थी।
न जाने जुगनुओं की तरह,
चमक उठी है अँधेरे की ओर।
वो इबादत के लिए,
आयातों को हवा में घुमाने लगे।
जिन्दगी हो खुशहाल,
परवरदिगार से मिन्नते लगाने लगे।
वो मिले आज मुझसे, जो कलम के कलाकार है।
कलम से उकेरी आकृति, कहती वो फनकार है।

कंसल्टेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग, नई दिल्ली

टाईगर: राष्ट्र का गौरव

जवाई हिल्स

–राम सिंह लाखोटिया

राजस्थान में लगभग 37 वन्यजीव अभ्यारण्य हैं, जिनमें से बेरा – जवाई तेंदुओं का अभय प्रक्षेत्र है। दरअसल बेरा और जवाई एक ही वन्यजीव गंतव्य के दो नाम हैं। बेरा एक गांव है जहां लोग रहते हैं और जवाई नदी उस पर बने बांध और वह पूरा क्षेत्र है जहां जंगली जानवर रहते हैं, पक्षी रहते हैं और इनके साथ ही इंसान भी रहते हैं। बेरा जवाई क्षेत्र में आता है लेकिन बेरा से जवाई बांध की दूरी 18 कि.मी.है।

पाली जिले में पश्चिमी राजस्थान की अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा यह सुरम्य स्थान जवाई बांध, घास के मैदान, नदी और चरागाहों से घिरा हुआ है। ग्रेनाइट से बनी जवाई की पहाड़ियों को हजारों साल पहले लावा द्वारा आकार दिया गया था और आज जवाई हिल्स की प्राकृतिक गुफाएं या रॉक शेल्टर तेंदुओं और धारीदार लकड़बग्घों (हाइना) का डेरा हैं। यह क्षेत्र ऐसा अभ्यारण्य है जो एक अलग ही तरह के इको–सिस्टम को पोषित करता है। यदि आप जवाई या बेरा की यात्रा करते हैं,तो हम आपको बताते हैं कि आप जवाई में क्या आनंद ले सकते हैं।

राजस्थान के पाली जिले में स्थित जवाई पहाड़ियां एक ऐसा दुर्लभ स्थान है जहां तेंदुए खुले आकाश के नीचे घूमते देखे जा सकते हैं। अरावली पर्वतमाला से घिरी इस वन्यभूमि को तेंदुए की पहाड़ी के रूप में जाना जाता। यह क्षेत्र कम ज्ञात पर्यटन स्थलों में से एक है।

*सम्प्रति : सेवानिवृत्त निदेशक, रक्षा मंत्रालय

जवाई पहाड़ियों से घिरा हुआ है। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि हजारों साल पहले लावा पिघलने से इन पहाड़ियों तथा प्राकृतिक गुफाओं को आकार मिला होगा। मगर आजकल यह प्राकृतिक गुफाएं तेंदुए और क्षेत्र के अन्य जंगली जानवरों का घर बन गईं हैं। जवाई में तेंदुओं की संख्या दुनिया के किसी भी अन्य अभ्यारण्य की तुलना में अधिक ही है।

यह तथ्य है कि तेंदुआ एकान्तवासी जंगली जानवर हैं और माना जाता है कि दो तेंदुए कभी एक साथ नहीं रहते हैं। लेकिन जवाई में तेंदुओं की इस विरोधाभासी स्थिति को देखकर उनके बारे में आपकी राय बदल जाएगी। जवाई ऐसा अनोखा तथा रहस्यमय स्थान है जहां जानवरों और इंसानों के बीच सामंजस्य और खुद तेंदुओं के आपसी, एकदम अलग, व्यवहार को देखकर हैरान रह जाएंगे।

डिस्कवरी चैनल ने पिछले वर्ष ही राजस्थान के पाली जिले में जवाई की पहाड़ियों पर जंगली तेंदुए और मनुष्यों की आकर्षक कहानी का प्रसारण किया था जिसमें बताया गया कि राजस्थान के पाली जिले में जवाई की पहाड़ियां उन कुछ जगहों में से एक है, जहां तेंदुए आसानी से देखे जा सकते हैं और जवाई बांध और पहाड़ियां जंगली जानवरों तथा प्रवासी पक्षियों का घर होने के साथ साथ पर्यटकों के लिए भी एक सुन्दर स्थान है। मगर उस प्रसारण से मन में खुशी नहीं हुई क्योंकि उसमें बहुत से तथ्यों की सूचना नहीं दी गई थी। बेरा मेरा पैतृक घर होने और मेरे परिवार के लोगों का बेरा में पर्यटक परिवहन के पेशेवर ऑपरेटर होने के नाते, मैं इस क्षेत्र के बारे में किसी अन्य से बेहतर बता सकता हूं। मैं कोई पेशेवर लेखक नहीं हूं फिर भी मेरा प्रयास आपके सामने है। मेरा अतुल्य भारत के माध्यम से इस क्षेत्र का इतिहास लिखने का भी कोई इरादा नहीं है। कुछ खास तथ्यों तक ही सीमित रहूंगा।

जवाई के समृद्ध इतिहास पर एक नजर ..

राजस्थान सरकार के दस्तावेजों में जवाई का सबसे पहला उल्लेख 1946 में महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा यहां बांध बनवाने से मिलता है। इससे पहले, यहां की ग्रेनाइट पहाड़ियां और विशाल नदी न तो सरकार का और न ही पर्यटकों का ध्यान खींच पाईं। कहा जाता है कि ग्रेनाइट की यह पहाड़ियां लाखों वर्ष पुरानी हो सकती हैं, लेकिन पुरातत्वविदों को इस सुदूर ग्रामीण क्षेत्र में कुछ भी दिलचस्प नहीं लगा कि इस पर अनुसंधान करते।

यदि आप किसी लाइब्रेरी में जाकर जवाई के बारे में कुछ जानना चाहे तो शायद आपको यही पता लगेगा कि यह राजस्थान के पाली जिले में जवाई नदी पर बांध है। बेरा का तो कहीं जिक्र ही नहीं मिलता है। आजकल सूचना तकनीक का समय है और इंटरनेट पर जवाई के बारे में जानने की कोशिश करते हैं, तो इस क्षेत्र में बांध, तेंदुओं तथा पक्षियों के बारे में आधे–अधूरे आलेख और फोटोग्राफ्स से भी ज्यादा सूचना इस क्षेत्र में कार्यरत रिसार्ट्स और होटलों के बारे में ही मिलती है, लेकिन जवाई के इतिहास आदि का कोई उल्लेख नहीं है।

ऐसा माना जाता है कि प्राग्ऐतिहासिक काल में पाली को पल्लिका और पल्ली के रूप में जाना जाता था। वैदिक काल में, इस क्षेत्र में जाबलि नामक ऋषि के आश्रम का उल्लेख मिलता है जिसमें उनके द्वारा तपस्या, योग ध्यान साधना के अलावा वेदों की व्याख्या हेतु प्रशिक्षण दिया जाता था। प्रसिद्ध महाकाव्य ''महाभारत'' के अनुसार, माना जाता है कि पांडवों ने निर्वासन काल के दौरान जाबलि नामक एक ऋषि के आश्रम के निकट भी कुछ समय व्यतीत किया था। आज के राजस्थान के इन हिस्सों पर 7वीं शताब्दी के अंत तक राजा हर्षवर्धन ने शासन किया। 16 वीं और 17 वीं शताब्दी के अंत तक, पाली और आसपास के सभी क्षेत्र मारवाड़ के राठौड़ के शासन में आ गए थे। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम के समय, पाली के ठाकुरों ने अंग्रेजों के खिलाफ हथियार उठाए और कई दिनों तक संघर्ष किया था।

इस क्षेत्र में रहने वाले आदिवासियों को 'रबारी' के नाम से जाना जाता है और वे राजस्थान के कई हिस्सों में पाए जाते हैं। मिथकों से पता चलता है कि वे आज भी में खानाबदोश जीवन जीते हैं और मवेशी जरूर पालते हैं। यहां के लोगों का जानवरों के प्रति प्रेम और सहनशील स्वभाव भारत की संस्कृति और जीवन के प्रति सकारात्मक पक्ष को उजागर करता है। इसी तालमेल के कारण, इस क्षेत्र में तेंदुए पनप गए और उनकी आबादी तेजी से बढ़ी है। यह तेंदुए कभी कभार उनकी भेड़–बकरी भी उठा ले जाते/ मार देते हैं लेकिन इससे लोगों को कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि वे तेंदुओं को देवी माता की पवित्र सवारी मानते हैं। इन लोगों के जानवरों के साथ एक अनोखे संबंध के कारण अब तेंदुए भी इन्हें हानि नहीं पहूंचाते है। इसी कारणवश, जवाई राजस्थान में एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में उभरा है।

बेरा पाली जिले में एक बड़ा गांव है। राजस्थान के सुदूर में छिपे इस स्थान पर तेंदुओं की बड़ी संख्या के कारण इस क्षेत्र को तेंदुए का देश भी कहा जाता था। लगभग 20 कि. मी. में फैले इस क्षेत्र में बलवाणा, बीसलपुर, दूदणी, बीजापुर, भटूंड, जीवड़ा, सेन, बरावल, मोरी, बेड़ा जूना बेडा बेरडी, कोठर, पेरवा जैसे गांव होते थे। जिनके निवासी इन वन्यजीवों के बीच मुश्किल से जीवन यापन करते थे। मुझे अपना बचपन याद है जब इन्हें दूर रखने के लिए गांवों के लोग घरों

के बाहर तेंदुओं के कैलेण्डर जैसी बड़ी तस्वीरें या कोई बड़ा आईना लगाते थे। इससे जंगली जानवर, खासकर तेंदुए, दूर रहते थे। शायद वह ऐसी तस्वीरों को दूसरा तेंदुए समझकर चले जाते होंगे। इसके अलावा, हम मान सकते हैं कि ग्रामीणों द्वारा अपने मवेशियों की रक्षा और दूर दूर तक कोई बसावट न होने से जंगलीजीवों को भूख मिटाने के लिए गांव के लोगों द्वारा डाली गई रोटियां खाने पर विवश होना पड़ा होगा कि धीरे धीरे ग्रामीणों और इन जीवों के बीच एक सामंजस्य बन गया है।

राजस्थान सरकार ने 1960 के आसपास ही इस क्षेत्र में शिकार पर रोक लगा दी थी। किन्तु राजस्व भूमि होने की वजह से इसे वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित नहीं किया जा सकता था। भारत सरकार ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत वन्यजीवों के शिकार पर पूर्ण प्रतबिंध लगा दिया है। राजस्थान सरकार ने, विशेष रूप से तेंदुओं को संरक्षण देने के लिए, इस क्षेत्र को 2010 में ''तेंदुआ वन्यजीव अभ्यारण्य'' घोषित किया है।

इन पहाड़ियों की भू–आकृति क्लासिक रही है। ग्रेनाइट की चट्टानों में मौजूद गुफाएं तेंदुओं के घर बन गई हैं। इनके बाहर कैक्टस, कीकर जैसी झाड़–झंखाड़ वाली वनस्पतियां हैं। गांव के करीब, जवाई नदी, पहाड़ी और जवाई बांध, इन संरचनाओं का परिणाम एक जलाश्य है। अब इन खूबसूरत पहाड़ियों के बीच तेंदुओं और प्रवासी पक्षियों के अलावा मगरमच्छ भी रहते हैं।

इस पर सरकार और पर्यटन कारोबारियों की नजर देर से पड़ी और अब यह लोकप्रियता की ओर अग्रसर है। लेकिन अभी पर्यटक बहुत कम हैं और जो हैं तो उनमें विदेशी ही ज्यादा हैं। जहां तक मैं समझता हूं उसके दो कारण हो सकते हैं पहला तो नगरों के पर्यटक इतनी दूर या पिछड़े इलाके में जाना नहीं चाहते और दूसरा अभी भी पर्यटकों में वन्य पर्यटन में अधिक रूचि न होना, जो कुछ है भी तो वह गिर (गुजरात) जाना पसंद करते हैं।

और बस तेंदुए...

यदि कहा जाए कि जवाई पहाड़ियों की सुंदरता का राज ही सुंदर तेंदुए हैं तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। तेंदुओं को निकट से देखने के लिए भारत में यही सबसे अच्छी जगह है। भारत ही नहीं शायद विश्व में भी जवाई की पहाड़ियां ही ऐसा स्थान है जहां तेंदुए गांवों के आसपास मुक्त घूमते दिख जाते हैं। यहां चार पांच तेंदुए एक साथ बैठे – सोते मिल जाएंगे। कभी कभी दो चार मिलकर गांव में घूम आते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो मनुष्यों के साथ शांति से रह रहे हैं। यह सबसे अच्छी जगहों में से एक है जहां आपको दिन के समय में तेंदुए के दर्शन आसानी से हो सकते हैं। जवाई की ग्रेनाइट की पहाड़ियों में तेंदुएं किसी परिवार की तरह रहते और दोपहर के बाद मंदिर की सीढ़ियों पर आ जाते हैं। उन्हें इतने निकट से देखने का अलग ही आनंद है।

देवगिरी गुफा मंदिर

तेंदुए को देखने का एक और स्थान है, गुफाओं में बना कालका देवी का मंदिर जिसे देवगिरि,

सीढ़ियों पर बैठे तेंदुए

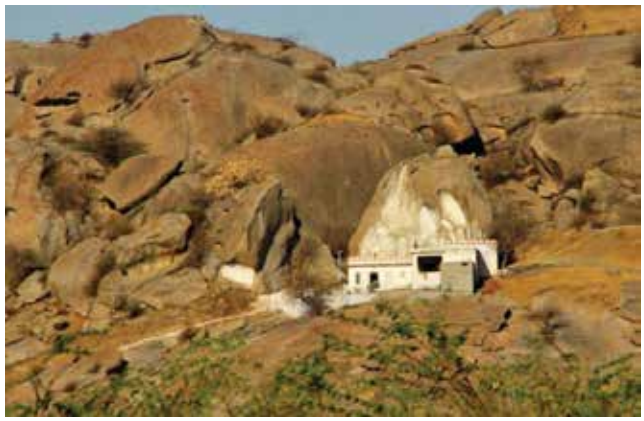

आशापूर्णा या आशापुरा माता मंदिर भी कहा जाता है। यह एक पहाड़ी खोह में एकान्त में स्थित है। मंदिर की सीढ़ियों पर दो चार तेंदुए बैठे हुए मिलेंगे, मगर लोगों के आने पर एक ओर हट जाते हैं। तेंदुओं को अक्सर मंदिर की सीढ़ियों पर और गुफाओं के आसपास घूमते हुए देखा जा सकता है। इन्हें अपने कैमरे में कैद करने का एक दुर्लभ दृश्य है।

यहां के लोगों का मानना है कि देवी मां पूरे गांव की रक्षा करती हैं। जवाई आने वाले हरेक व्यक्ति को आशापुरा माता के दर्शन जरूर करने चाहिए।

लेकिन आप इन वन्यजीवों को देखने के लिए

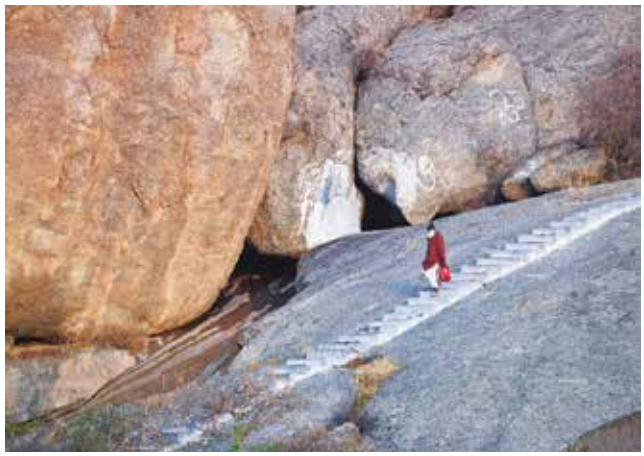

सीढ़ियों से आता आदमी

जंगल सफारी यानि जीप से ही जा सकते हैं।

जवाई बांध, पक्षी तथा मगरमच्छ पार्क, जवाई हिल्स, कंबेश्वर जी तेंदुआ अभ्यारण्य और जवाई बांध, सभी जवाई के आसपास स्थित हैं। यहां के जंगलों में तेंदुए ही नहीं लकड़बग्घा, काला भालू, हिरण, जंगली सूअर, चिंकारा (हिरण की एक प्रजाति), सियार, जंगली बिलाव जैसे दूसरे वन्यजीव देखे जा सकते हैं। अगर आपकी किस्मत अच्छी हो तो इस सफारी में भेड़िया भी आपके सामने हाजिर हो सकता है।

जवाई बांध...

पाली जिले में सुमेरपुर गांव (जो अब एक छोटा शहर बन चुका है) के पास जवाई बांध को जोधपुर के महाराजा उम्मेद सिंह ने बनवाया गया

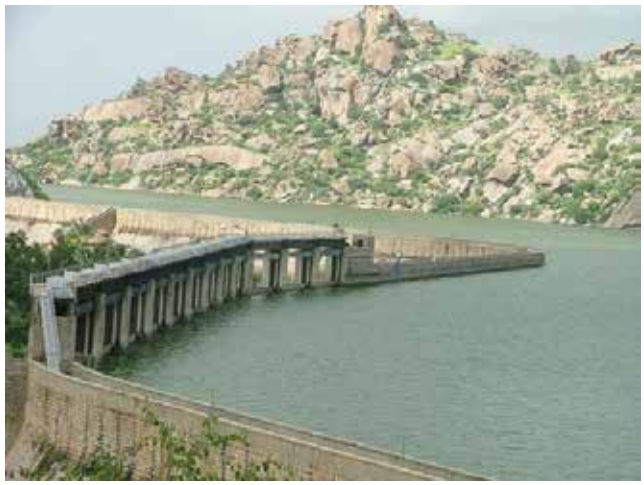

था। इस पर 12 मई 1946 को काम शुरू होकर 1957 में पूरा हुआ और निर्माण पर कुल दो करोड़ सात लाख रुपए खर्च हुए थे। इस बांध को बनाने का मुख्य उद्देश्य लगभग 500 वर्ग कि.मी. में कृषि योग्य कमांड क्षेत्र को सिंचाई की सुविधा देना था। यह बांध जोधपुर शहर और पाली जिले के कुछ हिस्सों के लिए जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत है। बांध में अधिक पानी होने पर जालोर जिले और

पाली जिले के कुछ और गांवों को सिंचाई के लिए पानी दिया जाता है। बांध की ऊंचाई लगभग 62 फीट और क्षमता करीबन 7887 मिलियन क्यूबिक फीट है। जलाशय की गहराई 54 फीट है। इसके 13 चैनल गेटों से बांध का पानी बहने पर इसका खूबसूरत नजारा दिखता है। 2013 में जवाई बांध मगरमच्छ अभ्यारण्य की आधिकारिक घोषणा के बाद जवाई बांध पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बन गया है। पर्यटन विभाग ने बांध के जलग्रहण क्षेत्र में सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए एक स्थान निर्धारित किया है।

कपासी (ब्लैक विंग काइट) का एक चित्र

वैसे तो बेरा–जवाई के आसपास लगभग 20 वर्ग कि.मी. में फैला क्षेत्र तेंदुआ अभ्यारण्य है, मगर इसके अलावा भी इस क्षेत्र में आने के दो और बड़े कारण हैं एक प्रवासी पक्षी पार्क और दूसरा है मगरमच्छ पार्क।

प्रवासी पक्षी प्रेक्षण...

तेंदुओं के अलावा, यह स्थान प्रवासी पक्षियों का डेरा भी है। सुन्दर पहाड़ियों और जवाई नदी की नमी के कारण यहां अनेक प्रजातियों के पक्षी

देखे जाते हैं। जिनमें हंस, राजहंस, कपासी (ब्लैक विंग काइट), जैसे प्रवासी पक्षियों के अलावा सारस, रूडशेल बतख, बाज, गिद्ध, उल्लू, बगुले की प्रजातियां, कैकर या समुद्री बाज, लालमुंही चिड़िया, नीलकंठ, पैराकेट, टिटहरी,गौरैया, कोयल, पेलिकन, रूडी शेल्डक, भूरे पैर वाले हंस, एशियन ओपनबिल स्टॉर्क, ब्लैक आइबिस जैसे अन्य स्थायी पक्षियों का अवलोकन किया जा सकता है । बहुत से पर्यटक तो केवल इन पक्षियों को देखने के लिए ही आते हैं। सर्दियों के मौसम में (नवंबर से मार्च) दिन के समय यहां आना सुखद रहेगा। बर्डलाइफ सफारी का संचालन किया जाता है। जिसकी अग्रिम बुकिंग की जा सकती है। पक्षी प्रेमियों और पक्षी फोटोग्राफरों के लिए यहां की यात्रा एक सुखद अनुभव देती है।

मग्गर पार्क

जवाई अभ्यारण्य में विभिन्न प्रजातियों के 300 से अधिक मगरमच्छ रखे गए हैं। यह पार्क मगरमच्छ के प्रदर्शन के अलावा उनके लिए आरक्षित आश्रयस्थल है। भारतीय मगरमच्छों की

एक प्रजाति के नाम पर इस पार्क का नाम रखा गया है। यहां मगरमच्छों को दोपहर में देखा जा सकता है जब वे पानी से निकल कर जवाई नदी के किनारे धूप में आते हैं। तेंदुए की सफारी के पर्यटकों के लिए यहां की यात्रा पूरी तरह से निःशुल्क है।

ग्रामीण सफारी

वन्य जीवन के अलावा, यह क्षेत्र राजस्थान के ग्रामीण पक्ष की जीवंत तस्वीर भी प्रस्तुत करता है। जवाई बांध के विशाल जलग्रहण क्षेत्र के आसपास नौ गांव हैं। ऐसे में जो पर्यटक राजस्थानी ग्रामीण संस्कृति, लोगों का रहन–सहन, पहनावा, भोजन, खाना पकाने का ढंग और मवेशी पालन देखना चाहते हैं उनके लिए ग्रामीण सफारी चलाई जाती है ताकि वह उनके पास जाकर जीवन की मुस्कुराहट को अनुभव करते सकें। ध्यान रखें कि यह यात्रा/घुमाई सिर्फ सर्दियों में सुखद होती है क्योंकि अन्य दिनों में यहां पर इतनी गर्मी होती है कि लोग बाहर नहीं निकलते हैं। पर्यटकों को गांवों में घूमाने के लिए खुली जीपों में ले जाया जाता है ताकि पर्यटक जंगलों में घूमते हुए ही ग्रामीण आबादी, आसपास के खेतों में चरती भेड़–बकरियों के झुंड और सुरम्य स्थान को देख सकें। इन्हें देखना जीवन में एक नया अनुभव है।

पर्याटन मंत्रालय, भारत सरकार के ग्रामीण पर्यटन सहित होमस्टे को बढ़ावा देने के

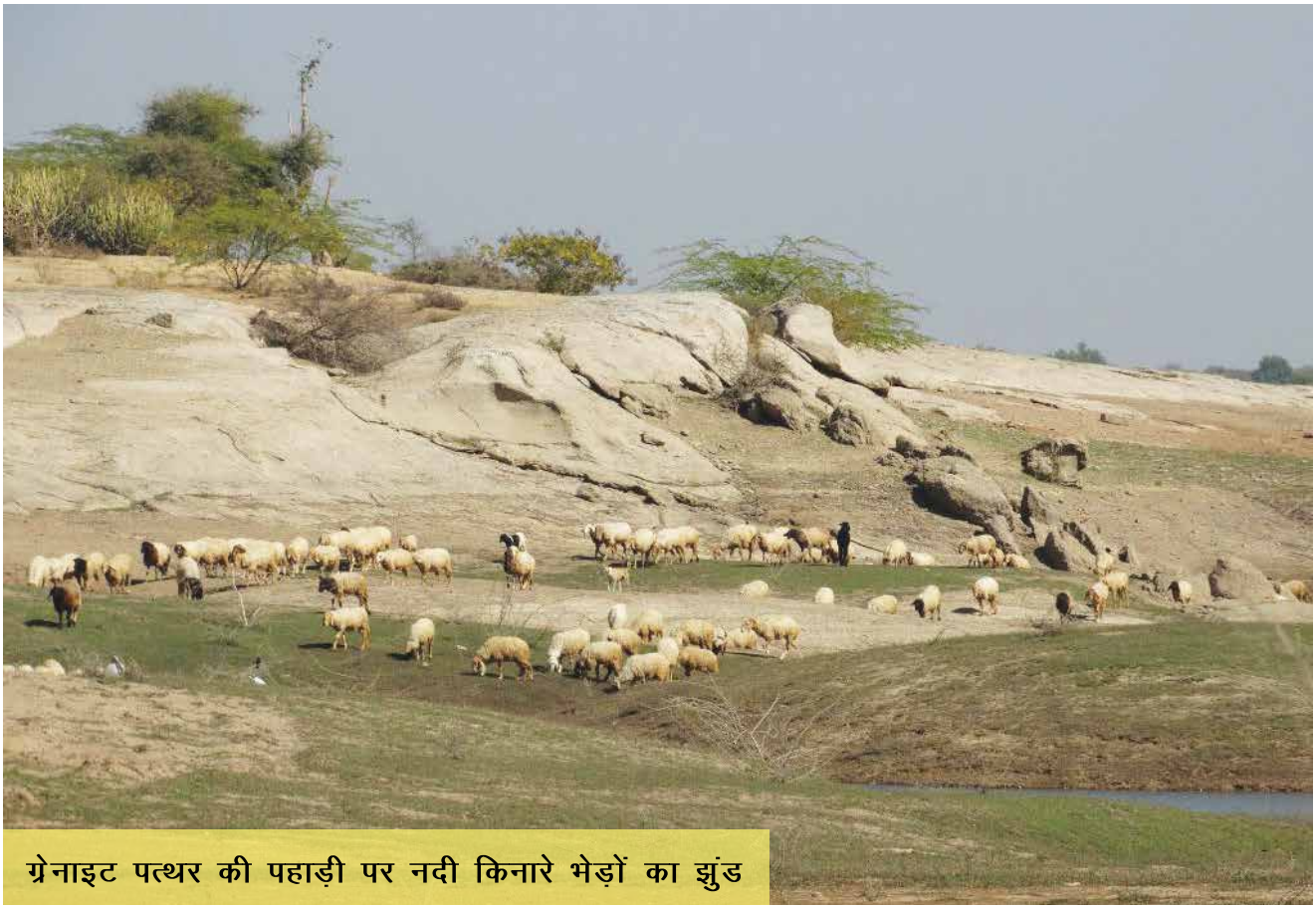

ग्रेनाइट पत्थर की पहाड़ी पर नदी किनारे भेड़ों का झुंड

दिशानिदेशों को राज्य सरकार ने इस क्षेत्र में भी लागू किया है किन्तु यह सुविधा होटल, लॉज और रिसॉर्ट्स के एजेंटों के माध्यम से ही मिल पाती है।

कभी आपका मन जवाई में तेंदुओं और यहां की प्राकृति को देखने का हो तो भूल कर भी कभी अकेले निकलने की कोशिश न करें। आपकों यहां के ऑपरेटरों गाइडों आदि की सेवाएं लेनी ही होंगी। कुछ विशेष मामलों को छोड़कर, बाहर के वाहनों को गांवों के आसपास जंगल में जाने की अनुमति नहीं दी जाती है। पर्यटकों को अपने वाहनों सहित किसी रिसार्ट या होटल में ठहरना होगा और उसके बाद आप सफारी के माध्यम से ही इन मायावी तेंदुओं को निकट से देख सकते हैं।

यहां के ऑपरेटर, आमतौर पर दिन में दो बार यानी सुबह और शाम 4X4 के एक अनुकूलित वाहन में ''लियोपार्ड सफारी'' चलाते हैं, जो 3–4 घंटे में पूरी की जाती है।

''जवाई डैम सफारी'' जिसमें पक्षी तथा मगरमच्छ पार्क भी शामिल हैं, सुबह 8.00 बजे और ''विलेज सफारी'' सुबह 10.00 बजे शुरू होती हैं। इन सभी के लिए प्रति जिप्सी 4500/– रुपए लिए जाते हैं। एक जिप्सी में चार लोगों को बैठाया जाता है।

सुबह और शाम संचालन के कारण आपको इस क्षेत्र में कम से कम एक रात तो रहना ही होगा। इस सुविधा के लिए आवास बुक करना होगा। इसके लिए पूरे जवाई क्षेत्र में नदी की ओर बड़े रिसार्ट्स और होटल हैं।

अगली बार जब आप राजस्थान की यात्रा करें, तो अपनी घूमने की जगहों की सूची में जवाई को जरूर शामिल करें। यह शहरों की कृत्रिम और व्यस्त जीवन शैली से दूर एकांत और प्राकृतिक सुंदरता प्रदान करने वाला एक आदर्श गंतव्य है।

जवाई हिल्स पर आनंद लेने का श्रेष्ठ समय:

आजकल यहां कभी भी आ सकते हैं, मगर नवम्बर से अप्रैल तक यहां आने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इस दौरान ठण्डक होने के कारण मौसम सुहावना रहता है। इस क्षेत्र में सामान्य तापमान 24 से 38 डिग्री रहता है परन्तु गर्मियों में 44 डिग्री तक हो जाता है।

कैसे पहुंचे जवाई बांध

हवाई मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा – उदयपुर (150 कि.मी.) यहां से जवाई बांध के लिए टूरिस्ट टैक्सी मिल जाती हैं।

रेल मार्ग : निकटतम रेलवे स्टेशन–जवाई बांध। जयपुर से जवाई के लिए तीन रेलगाड़ियों सहित सिरोही से सात सीधी ट्रेनें उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग : राजस्थान के प्रमुख शहरों – जोधपुर से 160 कि.मी., पाली से 86 कि.मी. और सिरोही से 57 कि.मी. दूर है। सिरोही से जवाई तक बस या टैक्सी एक अच्छा विकल्प है।

कहां ठहरें :

आपके आराम और प्राकृतिक सुंदरता को महसूस करने का अवसर देने के लिए जवाई बांध क्षेत्र के आसपास के गांवों में दो से चार कि.मी. के अंतराल पर कई जंगल लॉज और रिसॉर्ट्स

है। अधिकतर रिसॉर्ट्स में लक्जरी सुइट टेंट हैं।

लगभग सभी में खाद्य एवं पेय सेवाओं सहित भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय बहु व्यंजन रेस्तरां है। अन्य सेवाओं में ऑन कॉल डॉक्टर, लॉन्ड्री आदि और कार पार्किंग के लिए पर्याप्त स्थान उपलब्ध हैं। पर्यटन सेवाओं में ट्रेकिंग, नेचर वॉक और जीप सफारी हैं। पर्यटकों की संख्या के आधार पर शाम को इनमें राजस्थानी लोकगीत, संगीत के कार्यक्रम भी किए जाते हैं।

कई रिसॉर्ट्स प्रति वर्ष गर्मी और मानसून के दौरान बंद रहते है और जो खुले होते हैं उनकी टैरिफ बहुत ही कम होती है।

इसी प्रकार विभिन्न श्रेणियों के होटल हैं, वह भी कमोबेश उपरोक्त सुविधाएं देते हैं।

जवाई का यह कम ज्ञात वन्यजीव अभ्यारण्य विदेशी पर्यटकों के बीच कहीं अधिक लोकप्रिय हैं।

***

पिंजौर

हरियाणा

प्राकृतिक की गोद में राजसी सुन्दरता

–संतोष सिल्पोकर

आप कभी न कभी, किसी बाग बगीचे में गए ही होंगे। वहां की हरियाली, फूल पौधों ने आपको आकर्षित किया होगा। लेकिन हमारे देश में अंतर्राष्ट्रीय मानकों का एक ऐसा बगीचा भी है जिसका नाम है ''यादवेंद्र गार्डन'' जो आम तौर पर लोगों के बीच ''पिंजौर गार्डन'' के नाम से मशहूर है।

प्राकृतिक सुन्दरता

पिंजौर स्थित बाग की बाहरी दीवारें किसी पुराने किले सी लगती है लेकिन बाग में पहुंचते ही दृश्य बदल जाता है। हरियाली की गोद में इठलाते, उछलते, फव्वारों के साथ कलकल कर ठुमकता बहता पानी, आसपास हरी मखमली घास पर बिखरी बूंदों पर मोतियों सी दमकती धूप, क्यारियों में खुश्बू बिखेरते दर्जनों किस्म के रंग बिरंगे फूल पौधे और उन पर फुदकती नाचती तितलियां और इनके बीच बना राजस्थानी मुगल वास्तु शैली का शीश महल देख कर विश्वास ही नहीं होगा कि आप किसी किले में आए थे। रंगमहल से सामने फैले बाग में ताड़ के अन्य वृक्ष तन मन को सौम्य बना देते हैं। बहते पानी के स्वर में जैसे संगीत प्रवाहित होता है। जल महल कैफे का खाना चाहे आपके स्वाद के अनुकूल न हो, मगर सफेद रंग में पुते क्लासिक आयरन फर्नीचर पर बैठने का भी अलग ही लुत्फ है।

हरियाणा के पंचकूला जिले के पिंजौर शहर में स्थित 17 वीं शताब्दी में बना एक खूबसूरत मुगल गार्डन है। लगभग 100 एकड़ से भी अधिक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ यह बाग प्रकृति के बीच कुछ समय बिताने के लिए एक सुंदर स्थान है। अपनी हरियाली, फव्वारों के लिए प्रसिद्ध; सात तलों में बना यह बाग वास्तुकला का अनूठा नमूना है। दुनिया भर से पर्यटक यहां घूमने आते हैं। पिंजौर गार्डन कौशल्या और झज्जर नदी के पास स्थित है। पंचपुरा से इसका नाम लिए जाने के कारण इसका धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि पंचपुरा को पांडवों के शहर के रूप में भी जाना जाता है।

वास्तुकला का अनूठा नमूना:

पिंजौर गार्डन को मुगल पारंपरिक शैली चारबाग के आधार पर बनाया गया है। 100 एकड़ से अधिक क्षेत्र में फैली यह घाटी लगभग 70 फीट गहरी है। इस प्रकार बगीचे को सात मंजिलों में रखा गया है, जो कुछ दूरी पर नीचे उतरते हुए बनाई गई हैं। मुख्य प्रवेश द्वार को पहला तल

संयुक्त निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, नई दिल्ली

या मंजिल कह सकते हैं और नीचे की ओर जाते हैं। साथ साथ पानी के बहते हुए झरने भी देख सकते हैं। इस तल को राजस्थानी और मुगल शैली में डिजाइन किया गया है। इसके साथ ही शीश महल और एक रोमांटिक हवा महल है। दूसरी तल पर रंग महल देखते हैं।

तीसरे तल पर, मन को मोहित करते सरू के पेड़ों के साथ नीचे वर्गाकार फव्वारा लिए जल महल है। अगले तल पर फव्वारे और पेड़ों, वनस्पतियों में विभिन्न प्रकार के सुगंधित फूलों के पौधे, आम के बाग, झाड़ियां और अन्य पेड़ हैं। रास्ते में चलने वाले पर्यटकों को छाया देने के लिए लम्बे वृक्ष हैं। जिसके बाद सबसे निचले तल पर एक ओपन–एयर थिएटर बनाया गया है।

पिंजौर गार्डन के बारे में ऐतिहासिक तथ्य..

संगीत सी किलकती लहरों के साथ बहने वाली जलधाराओं और उछलते फव्वारों की सुन्दरता लिए इस जगह की नींव एक ऐसे बादशाह के हाथों से रखी गई थी जिसके बारे में कहा जाता है कि वह संगीत से नफरत करता था। वह था बादशाह औरंगजेब। इतिहास के अनुसार बादशाह के चचेरे भाई और फौज के एक सेनापति थे फिदाई खां। एक बार पंचपुरा गांव के बाहर से गुजर रहे थे, तो इस पहाड़ी घाटी की सुंदरता से प्रभावित हुए और कुछ दिन तक यहीं जंगल में रहे।

सेनापति फिदाई खां जब लाहौर जीत कर दिल्ली आया तो औरंगजेब ने उसे कुछ मांगने को कहा, इस पर उसने शिवालिक की पहाड़ियों में जंगल में बसा गांव पंचपुरा देने को कहा। कुछ दस्तावेजों में उल्लेख मिलता है कि फिदाई खां सैनिक से ज्यादा एक दार्शनिक और वास्तुकार थे, सो उसने बगीचे के लिए एक डिजाइन बनाया और जंगल को मनोरम स्थल में बदल दिया। इसके तैयार हो जाने पर सबसे पहले औंरगजेब को

प्रवेश द्वार से बगीचे का नजारा

प्रवेश कराया गया यानि आज हम इसे उद्घाटन कह सकते हैं। फिदाई खां कुछ बरस यहीं रहे। गर्मी के मौसम में बादशाह औरंगजेब और उनकी बेगमें भी यहां आते थे। ऐसा भी वक्त आया कि औरंगजेब के बाद उसके वारिसों की शासन पर पकड़ कमजोर हुई और इस क्षेत्र पर सिरमौर राज्य का कब्जा हो गया मगर सिरमौर के राजा ने इस ओर ध्यान नहीं दिया और प्रकृति प्रेमी – वास्तुकार फिदाई खां की यह घाटी बरसों तक उजड़ी रही। समय ने करवट ली और 1775 में, पटियाला के महाराजा अमर सिंह ने इसे सिरमौर के राजा जगत प्रकाश से खरीद लिया। उनके प्रयास से यह जंगल फिर हरा भरा हो उठा लेकिन इस बाग का जीर्णोद्धार महाराजा यादवेन्द्र सिंह ने कराया। कहा जाता है कि यहां पानी लाने के लिए शिमला के आस पास से उतरते नालों का उपयोग किया गया है इसलिए यहां पानी की कमी नहीं होती है। 1966 में हरियाणा की स्थापना के बाद पर्यटन विभाग ने इसे पर्यटन की दृष्टि से तैयार कराया और पटियाला के पूर्व महाराजा की याद में इसका नाम 'यादवेन्द्र गार्डन' रखा गया है। पहले स्थानीय जनता बाग की लाजवाब खूबसूरती की ओर मुखातिब हुई और आज यहां देश विदेश के सैलानियों की भीड़ देखी जा सकती है।

पिंजौर गार्डन से जुड़ी रोचक बातें

- इस बाग को खासतौर से औरंगजेब के लिए गर्मियों की सैरगाह के रूप में बनाया गया था।
- पिंजौर गार्डन के भीतर बने शीश महल को फिदाई खान के दरबार के रूप में जाना जाता है, वहीं रंग महल को बेगमों के मनोरंजन स्थल के रूप में जाना जाता है। जबकि जल महल बेगमों के स्नानाघर के रूप में मशहूर है।
- ध्यान से देखें तो पिंजौर गार्डन को जापानी पौराणिक शैली में एक शांत जापानी उद्यान के रूप में विकसित किया गया है।
- बाग के दोनों तरफ आम के बागीचे हैं। इस बाग में 'गदा' आम होता है जिसके एक फल

जलमहल के अंदर का दृश्य

का वजन दो किलो भी हो सकता है। आम की किस्मों के अलावा केले, लीची, आड़ू, चीकू, अमरूद, नाशपाती, लोकाट, बिना बीज वाले जामुन, हरा बादाम व कटहल के काफी पेड़ हैं। किसी भी मौसम में जाएं कोई न कोई फल उपलब्ध रहता है।

- बगीचे क्षेत्र के अंदर विभिन्न प्रजातियों के जानवरों और पक्षियों का एक मिनी चिड़ियाघर भी बनाया गया है।
- पिंजौर गार्डन के बगीचे में फूलों और अन्य पौधों की नर्सरी भी बनाई है। पर्यटक यहां से अपने बगीचे के लिए गमले और पौधे भी खरीद सकते हैं।
- यहां आप बगीचे की सैर करने के साथ बगीचे के बाहर ऊंट की सवारी का भी आनंद ले सकते हैं।
- बगीचे के बाहर चक्कर लगाने के लिए अब एक टॉय ट्रेन भी उपलब्ध कराई गई है। बच्चे इसकी सैर का आनंद ले सकते हैं।
- पिंजौर गार्डन जाने का सबसे अच्छा समय फरवरी से अप्रैल और सितंबर से दिसंबर तक है क्योंकि मौसम सुखद रहता है।
- यहां अधिकांश त्यौहार बगीचों में ही आयोजित किए जाते हैं ।

पौराणिक एवं पुरातत्व महत्व...

पुरातत्वविदों के अनुसार भीमा देवी मंदिर व धारा मंडल के अवशेष ईसा पूर्व 9वीं से 12वीं शताब्दी के काल में बने माने गए हैं। यह पुरातत्व प्रेमी पर्यटकों के लिए यहां जिज्ञासा जगाते हैं। जनश्रुति अनुसार पांडव अज्ञातवास में यहां रहे थे और शत्रुओं द्वारा पानी में जहर मिलाने की आशंका से प्रतिदिन एक नई बावड़ी खोद कर जल का प्रबंध करते थे। इसलिए पिंजौर क्षेत्र को 360 बावड़ियों वाला गांव भी कहते हैं लेकिन अधिकांश बावड़ियां धीरे धीरे नष्ट हो गई हैं।

विरासत महोत्सव पर सजावट

अंबाला–शिमला राजमार्ग के किनारे, पिंजौर के मुख्य बाजार में स्थित पांडव कालीन धारा मंडल और द्रोपदी कुंड हैं। यहां हजारों श्रद्धालु वैसाख के अमावस्या मेले में स्नान करने आते हैं। पिंजौर के धारा मंडल में तीज का मेला पूरे सप्ताह चलता है। धारा मंडल में हर साल तीन मेले – वैसाखी, तीज और नवरात्र आयोजित किए जाते हैं। द्रोपदी कुंड में महिलाओं के स्नान के लिए अलग व्यवस्था है। लोगों की मान्यता है कि धारा मंडल में स्नान करने से सारे पापों से छुटकारा मिल जाता है। वहीं, इस दिन धारा मंडल के पानी का स्तर ऊंचा उठ जाता है अधिकतर भक्तजन अपनी बोतलों में पानी भर कर ले जाते हैं। कहा जाता है कि इसका पानी कम से कम एक साल तक खराब नहीं होता है इसके अलावा इस पानी से कई चर्म के रोग ठीक भी हो जाते हैं। शाम तक धारा मंडल में मेला लगा रहता है। श्रद्धालु शिव मंदिर में माथा टेकते हैं और पूजा अर्चना करवाते हैं।

पिंजौर गार्डन में मेले और उत्सव

पिंजौर विरासत महोत्सव

पिंजौर गार्डन में प्रति वर्ष दिसंबर के महीने विरासत महोत्सव यानि हेरिटेज फेस्टिवल मनाया जाता है। इस दौरान यहां विशेष रोशनी की जाती है। पर्यटकों और दर्शकों के मनोरंजन के लिए शाम को कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, यही वजह है कि यहां शाम के समय पर्यटकों की भीड़ देखी जा सकती है। विरासत महोत्सव के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, जैसे बच्चों के लिए ड्राइंग, महिलाओं के लिए रंगोली और मेहंदी प्रतियोगिता। इसके अलावा लोक नृत्य और गीत प्रतियोगिता भी की जाती है। इस कड़ी मे पिछले कुछ सालों से भारतीय शास्त्रीय संगीत तथा नृत्यों का भी आयोजन किया जाता है। पर्यटकों के लिए शानदार व्यंजन और एक हस्तशिल्प बाजार भी लगता है। जहां से स्मृति चिन्ह के रूप में पर्यटक कई सुंदर शिल्प खरीद सकते हैं।

आम खाओ प्रतियोगिता 2019–पिंजोर

बैसाखी का मेला

पिंजौर गार्डन में हर साल अप्रैल में बैसाखी का मेला लगता है। इस अवसर पर, आम तौर पर, पंजाबी भंगड़ा, गिद्दा के नृत्यों का आकर्षण रहता है लेकिन इसके साथ ही लोक संगीत और कवि दरबार आदि भी आयोजित किए जाते हैं। इसके साथ ही खाद्य बाजार और हस्तशिल्प बाजार भी लगाया जाता है। प्रायः रात लगभग नौ बजे तक पर्यटक इनका आनंद उठाते हैं।

आम महोत्सव

पिंजौर गार्डन में 1992 से जुलाई के हर दूसरे सप्ताह के शनिवार और रविवार के दिन, दो दिवसीय आम महोत्सव या मैंगो फेस्टिवल का आयोजन किया जाता है। इस मेले का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है आमों की प्रदर्शनी। यहां भारत में उगाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के आम देखे और खाए जा सकते हैं। हरियाणा, हिमाचल, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और बिहार तक के आम उत्पादक किसान आमों की सैकड़ों स्वादिष्ट किस्में यहां लाते हैं, जो अपनी खुशबू, स्वाद, संकर प्रकृति और गुणवत्ता में बढ़ चढ़ कर होती हैं।

इस मेले में किसान ही नहीं बल्कि आम के अन्य उत्पाद बनाने वाली कई कम्पनियां भी शामिल होती हैं। इस प्रतियोगिता के लिए प्रति वर्ष विभिन्न श्रेणियों में लगभग चार हजार प्रविष्टियां मिलती हैं, जिसमें आम की भिन्न प्रजातियों के लिए लगभग 3,500 तो आम के किसानों से और लगभग 500 प्रविष्टियां आम के अन्य उत्पादों,

हरियाणा के लोक कलाकार

जैसे अचार, चटनी, जैम, पल्प, जूस, स्क्वैश, आम पापड़ आदि के विनिर्माताओं की ओर से भेजी जाती हैं। इन प्रविष्टियों की चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हिसार), महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय (करनाल), पंजाब कृषि विश्वविद्यालय (लुधियाना) और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (मोदीपुरम, उत्तर प्रदेश) के विशेषज्ञ वैज्ञानिकों द्वारा जांच की जाती है।

कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न प्रतियोगिताएं जैसे एकल नृत्य, समूह नृत्य (अधिकतम पांच छात्र), रंगोली बनाना (अधिकतम चार व्यक्ति एक साथ), चित्रकारी (एक व्यक्ति), फेस पेंटिंग (अधिकतम दो छात्र), फैंसी ड्रेस आदि के साथ ही दिन में दो बार ''मैंगो ईटिंग'' प्रतियोगिता अयोजित की जाती है। Mango Eating Competition में 60 सैकंड में कम से कम एक पूरा आम (छीलकर या बिना छीले ही) खाना होता है।

इसमें कोई भी भाग ले सकता है। विजेता को पुरस्कार दिया जाता है। साथ ही, इन उत्पादों

के बाजार की भी व्यवस्था की जाती है। शाम के समय, नॉर्थ जोन कल्चरल सेंटर के कलाकार लोक गीतों और नृत्यों का एक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश करते हैं।

माहौल रहता है। चंडीगढ़ तथा आसपास के शहरों के लोगों के लिए यह पिकनिक–डे होता है। गर्मियों की शाम और सर्दियों की धूप में हर किसी की थकान यहां आकर दूर होती है। अगर आप कभी पिंजौर गार्डन जाएं, तो यहां आने के लिए शाम का समय बहुत अच्छा है क्योंकि सूर्यास्त के बाद गार्डन में होने वाली रोशनी से गार्डन का माहौल पूरी तरह से बदल जाता है। शाम के समय जब यहां बाग में रोशनियां की जाती हैं तो वह एक अलग ही छटा बिखेर देती हैं। आंखों को सुख पहुंचाते बहते पानी में खिलते सतरंगी प्रकाश का माहौल देखने के लिए ही लोग अक्सर शाम

रात में रोशनी का दृश्य

पिकनिक

वैसे तो यहां रोज ही पर्यटक देखे जा सकते हैं, मगर रविवार व अवकाश के दिन मेले जैसा को आना पसंद करते हैं। बाग के अंतिम भाग में ओपन एअर थिएटर बनाया गया है जहां प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम वक्त को और मनोरंजक व यादगार बना देते है।

स्थानीय व्यंजन % यहां आने वाले पर्यटकों को यहां के स्थानीय व्यंजन बहुत पसंद आते हैं। यहां उपलब्ध कई व्यंजन ऐसे हैं, जिनका नाम सुनकर ही मुंह में पानी आ जाता है, जैसे कि छोले– भटूरे, मटर कुलचा, आलू टिक्की, बिहारी लिट्टी चोखा, काठी रोल्स, बीकानेरी कचौरी, भल्ला–पापड़ी, राम लड्डू का स्वाद लिया जा सकता है। लेकिन ज्यादातर व्यंजन मेलों के दौरान ही मिल पाते हैं। बाकी दिनों में गिनी चुनी चीजें ही मिलती हैं।

पिंजौर उद्यान में प्रवेश शुल्क वयस्कों के लिए 25 रु प्रति व्यक्ति है है और पांच साल से कम उम्र के बच्चों के लिए प्रवेश निःशुल्क है। पार्किंग शुल्क 40 रु प्रति कार।

कैसे पहुंचे

पिंजौर गार्डन चंडीगढ़ से लगभग 22 कि.मी. दूर है। चंडीगढ़ से नियमित रूप से बसें मिलती हैं। आप चंडीगढ़ और आसपास से टैक्सी भी ले सकते हैं। निजी वाहनों से यात्रा भी कर सकते हैं। पर्यटकों को ले जाने और वापस लाने के लिए के लिए टूर ऑपरेटरों की सेवाएं भी ले सकते है।

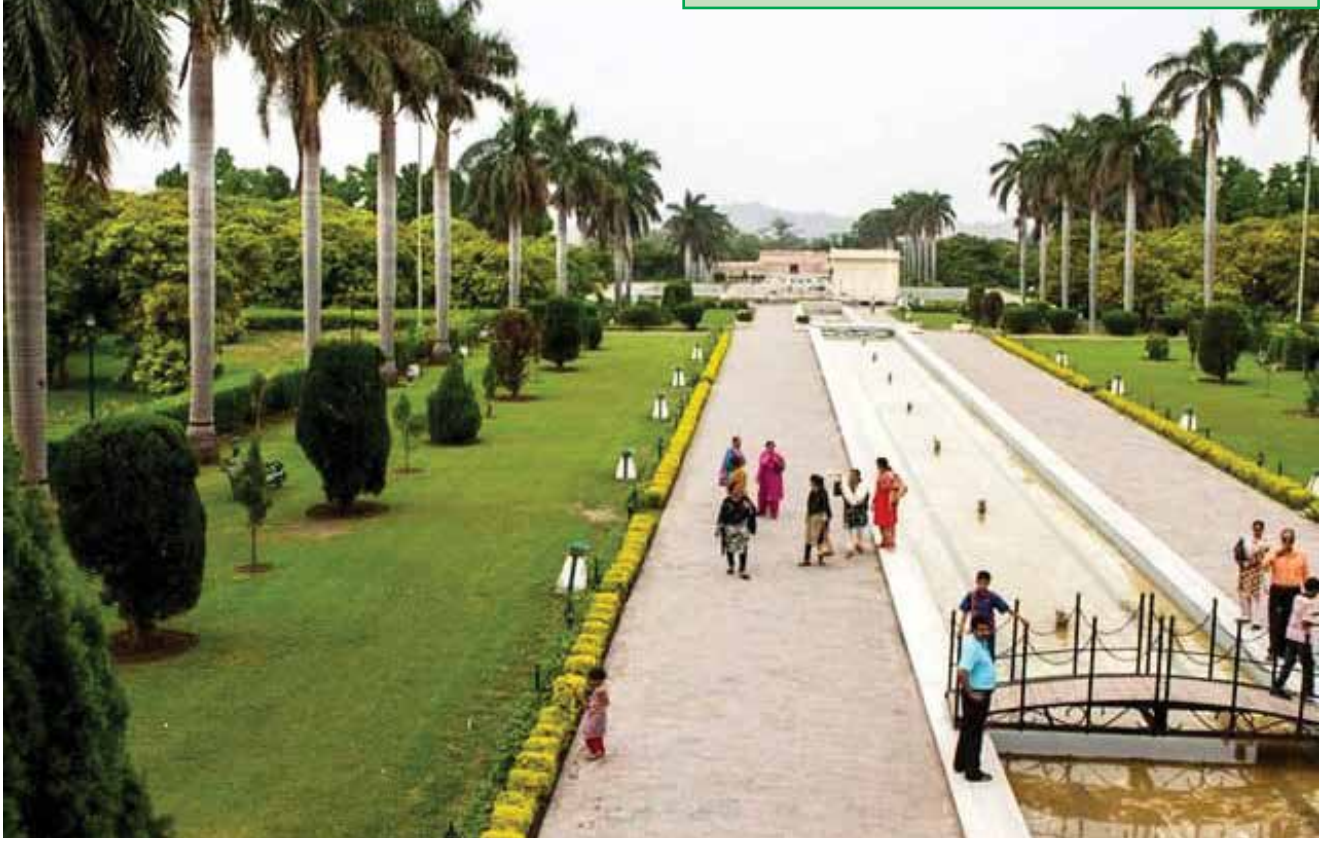

* * *

एक विचार

पर्यटन = H3 + NAC

–डॉ. कौलेश कुमार

दुनिया में को सभी घुमंतु पर्यटकों को सुख चौन और कारोबारियों, राजनेताओं और अधिकारियों को आराम की सुविधाएं प्रदान करने के साथ कुशल और अकुशल जनशक्ति को सबसे अधिक रोजगार देने वाला पर्यटन उद्योग आज खुद अपना अस्तित्व बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है। चारों और निराशा के बादल छाए हैं, पर मैं महान वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिंग एवं अब्दुल कलाम को आदर्श मानते हुए आशावादी हूं। इसलिए मैंने मित्रों और सहयोगियों से काफी सोच विचार किया और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि कोरोना को मात देने के पर्यटन = H3 + NAC लागू कर पर्यटन उद्योग को पुनर्जीवित करना होगा।

पर्यटन तो मनुष्य ही नहीं सारे जीव– जंतुओं, पशु–पक्षियों का अभिन्न अंग है। आपने डिस्कवरी चौनल पर माइग्रेटेड पंछियों के तो नाम सुने ही होंगे, जो हजारों मील का सफर कर एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं .

भगवान श्री कृष्ण भी पर्यटन को बढ़ावा देते हैं कहते हैं–

'' अधिक खाने से उदर (पेट) का विकास होता है और अधिक भ्रमण (पर्यटन) से एक नई सोच (मस्तिष्क) विकसित होती है।'' इसलिए घूमना फिरना चाहिए।

*प्रबंध निदेशक, होटल हंस होलीडे,राजगीर तथा महामंत्री, एसोसिएशन ऑफ बुद्धिस्ट टूर आपरेटर्स,राजगीर

इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने भी एक सूत्र (फार्मूला) अपनाया– बनाया है, जो आने वाले दिनों को ध्यान में रखते हुए पर्यटन उद्योग को पुनः पटरी पर ला सकेगा ।

दुनिया को साथ लेकर, कोरोना को मात दे कर H3 + NAC लागू कर पुनर्जीवित होगा पर्यटन उद्योग

फॉर्मूला हैः पर्यटन – H3 + NAC इसका अर्थ है कि

H3 से

H=होटल

H=हॉस्पिटल

H=हॉस्पिटैलिटी

यानी होटल ऐसे हो जो आपात काल में हॉस्पिटल की तरह सेवाएं दे सकें, जिससे कि कर्मचारी को काम भी मिले और मेंटेनेंस चार्ज भी निकलता रहे।

यहां हॉस्पिटलीटी में पर्यटन के सारे कार्यों जैसे टिकट, ट्रांसपोर्ट,गाइड आदि को एक प्लेटफार्म पर लाना होगा।

N=nature इसका मतलब प्राकृतिक सौंदर्य से छेड़छाड़ ना करें आनंद ले।

A=agriculture यानी कृषि अर्थात हर बड़े होटल को कम से कम एक और हो सके तो अधिक गांवों को गोद लेना चाहिए जिससे कि ऑर्गेनिक भोजन के साथ–साथ किसान भी आत्महत्या से बच सके

C=culture कल्चर से अर्थ है स्थानीय रीति रिवाज पर्व त्यौहार तथा उनके नियम कानून के साथ ही जनजाति संस्कृति का सम्मान और प्रोत्साहन करने में सहयोग करें.

अगर हम इस फार्मूला टूरिज्म– H3+NAC पालन करने लगेंगे, तब वह दिन दूर नहीं जब पर्यटन उद्योग फिर से सबका प्रिय एवं सबसे बड़ा उद्योग धंधा होगा।

***

मनोरंजक सत्य

कैसे कैसे दीवाने - फिल्म वालों के

—मोहन सिंह

बात उन दिनों की है जब सुरैया की शोहरत पूरे देश में फैली थी। उसकी आवाज और अदाकारी का कोई सानी था। पूरे देश में उनके चाहने वाले थे, जो उसे खत लिखते थे। सुरैया को लगभग 50 पत्र रोज मिलते थे। सुरैया की एक सहायिका उन पत्रों को पढ़े बिना ही उनके पते पर उन्हें 'खत के लिए तहे–दिल से शुक्रिया' लिखते हुए सुरैया का एक सुन्दर सा फोटो भेज देती थी। उस खत में किसने क्या लिखा? उसे न तो उसकी सहायिका पढ़ती थी और न ही सुरैया को पता होता था। उन्हीं दिनों एक नौजवान ने उन्हें पत्र लिखा कि उनकी फिल्में देख देख कर वह उनका मुरीद हो गया है और उनसे प्रेम करने लगा है। अब वह उनसे शादी करना चाहता है। पत्र के जवाब में उसे 'खत के लिए तहे–दिल से शुक्रिया' अदा करते हुए सुरैया का एक फोटो मिला। सुरैया का फोटो क्या मिला, वह और उत्साहित हुआ, उसे लगा कि सुरैया भी उसे पसन्द करती है तभी तो उसने अपनी फोटो भेजी है। बस क्या था, अगला खत उसने बाकायदा रजिस्टर्ड कराकर भेजा और पत्र में उसने शादी की तारीख बताने की गुजारिश कर दी। इस पत्र के उत्तर में भी वही स्टीरियो टाइप जवाब मिला।

उसने अगला पत्र सुरैया की नानी के नाम, अपने एक खास दोस्त के हाथ भेजा था। उस पत्र में विवाह की तारीख तय कर दी गई थी और यह भी ताकीद कर दी कि अगर 15 दिन के अन्दर पत्र का उत्तर नहीं मिला तो इसे 'हां' मानते हुए उस तारीख को बारात लेकर आएगा। साथ ही, उसने वही पत्र रजिस्टर्ड डाक से भी भेजा। मगर उसे भी किसी ने नहीं देखा।

एक दिन शाम के वक्त सुरैया अपने घर की छत पर खड़ी बाहर का नजारा देख रही थी कि देखा सामने से एक बारात आ रही है। आम लोगों की तरह वह भी देखने लगी तभी किसी ने आकर बताया कि सुरैया की बारात आ रही थी। बाराती हाथों में तख्तियां लिए हुए थे 'जुल्फी वेड्स सुरैया'।

सच में ही बारात उसके घर के सामने आ पहुंची। गैस के हंडो की रोशनी में बैंड–बाजे की धुनों पर थिरकते लड़कों से कालोनी के लोगों ने पूछा तो पता चला कि दूल्हा भैया शादी करने आए हैं। दूल्हा बने लड़के ने बिफरते हुए कहा कि उसने कितने पत्र भेजे थे, मगर एक का

*अतुल्य भारत पत्रिका के प्रबंध सम्पादक

भी उत्तर नहीं दिया गया। इसका अर्थ है कि सुरैया भी शादी के लिए रजामन्द है। आखिरकार पुलिस बुलाई गई। पुलिस वालों और मोहल्ले के बड़े बुजुर्गों ने किसी तरह समझा बुझाकर बारात को वापस भेजा। समय गुजरता गया बाद में सुरैया गुमनामी के अंधेरों में खो गई और वह लड़का एक देश के बहुत बड़े प्रतिष्ठित पद पर जा पहुंचा। इस बीच उसने एक बहुत ही सुन्दर लड़की से विवाह कर लिया था और उसके पांच बच्चे भी हो गए थे।

इन पंक्तियों के लेखक को एक बार उनसे मिलने का अवसर मिला जब उन्हें वह बात याद दिलाई गई तो उसने हंसते हुए उत्तर दिया, ''अरे भाई वह तो बचपना था, वैसे उसके बाद मैं अपनी पत्नी के साथ सुरैया से मिल चुका हूं और उस दिन की बात याद दिला कर माफी मांग चुका हूं।''

2. सुरैया का बंगला मेन रोड से थोड़ा हटकर लगभग 200 गज की दूरी पर अन्दर की ओर था। इस बीच में चार बड़े–बड़े पेड़ थे। एक दिन शाम को सुरैया घर लौटी तो एक युवक उसकी कार के नीचे आ गया। कार रोक कर ड्राईवर बाहर निकला तो सुरैया भी साथ निकल आई और गुस्से से उफनते हुए कहने लगीं, मरना है क्या''? तब तक वह युवक पास आ गया और बोला, ''मर तो मैं कभी का चुका हूं आप पर, अगर आप चाहें तो मुझे जिन्दा कर सकती हैं'' सुरैया घबराकर कार में बैठने लगी तो उसने उसके हाथ पकड़ लिया और कहने लगा, ''आप शादी कर लीजिए कहने लगा। मुझसे शादी कर लीजिए, मैं आपको पलकों में बिठा कर रखूंगा, मैं आपको बहुत चाहता हूं....., यह भी मंजूर नहीं है तो मुझे अपने घर में नौकर ही रख लीजिए, बस आप..... एक बार.....।'' सुरैया को गुस्सा आ गया, उसने अपनी चप्पल उतार कर युवक के मुंह पर दे मारी। तब तक ड्राईवर ने भी उसे दो थप्पड़ लगा दिए और उठा कर अलग फेंक दिया। सुरैया घर में चली गई।

अगले दिन देखा कि वह युवक वहीं एक पेड़ के नीचे बैठा था। जैसे ही सुरैया की कार वहां से गुजरी हाथ बांधकर सिर झुका कर खड़ा हो गया। शाम को जब सुरैया घर आई तो उसी तरह अदब से खड़ा हो गया। दो दिन बीत गए वह बिना कुछ कहे वहीं बैठा रहता और जब सुरैया निकलती तो हाथ बांध और सिर झुका कर खड़ा हो जाता। सुरैया की नानी ने उसे पुलिस से पकड़वा दिया। पुलिस वालों ने दो दिन थाने में बिठाए रखा। पता चला कि उसका कही कोई क्राइम रिकार्ड नहीं था। वह युवक उल्लास नगर का रहने वाला था। वहां बड़े बाजार में उसके पिता की कपड़े की दुकान थी। उन दिनों पुलिस को किसी शरीफ को गुंडा बताकर जेल में डालने की प्रथा नहीं थी। उसके दो भाई और थे जिन्हें बुलाया गया और पुलिस वालों ने समझा बुझा कर उसे भाईयों के साथ भेज दिया।

मगर दो दिन बाद फिर वह उसी पेड़ के नीचे मौजूद था। उसकी दाढ़ी बढ़ने लगी, बिना नहाए वह गंदा रहने लगा। आस पास के बच्चे उसके पास आकर उसे छेड़ने लगे मगर वह किसी को कुछ नहीं कहता उनकी बातें सुन कर हंसता रहता। बच्चे झूठे भी कह देते कि सुरैया आ रही है तो वह झट से खड़ा होकर सिर झुका लेता।

लोग उसे भिखारी समझकर रोटी दे जाते। वह एक दो रोटी खाकर बाकी एक कपड़े में बांधकर पेड़ पर टांग देता। दिन में इधर–उधर भटकते हुए सुरैया की फिल्मों के पोस्टरों से सुरैया की तस्वीरे काट लेता और उन्हें उसी पेड़ पर लगा देता। सुबह–शाम सुरैया की कार निकलती तो हाथ बांधकर सिर झुका खड़ा हो जाता। लोग कहते थे कि उसने कभी सुरैया के दरवाजे पर या उसके पास आने की कोशिश नहीं की। तेज धूप, सर्दी और बरसात में भी वह उसी पेड़ के नीचे बैठा दूर से सुरैया के घर की ओर देखता रहता था। बताया जाता है कि सुरैया ने अपनी नौकरानी से कह रखा था कि वह सुबह–शाम उसे खाना दे दिया करे। यह भी सुनने में आया कि कभी कोई आदमी पुराना कपड़ा दे जाता तो वह उसे पहन लेता और खाने में जो कुछ मिल जाता खा लेता और बची रोटियां एक गठरी में बांधकर पेड़ पर लटका देता। लगभग पांच–छः महीने तक यही सिलसिला जारी रहा।

माला सिन्हा के विवाह का एक दुलर्भ चित्र

एक बार कई दिन तक जोरो की बारिश होती रही, जब बारिश बंद हुई तो सुबह सुरैया अपनी कार में उधर से निकली वह पेड़ के नीचे ही लेटा था। उस दिन वह उसके सम्मान में अदब से खड़ा नहीं हुआ। शाम को वह वहां नहीं था। सुरैया को चाय देते हुए नौकरानी ने बताया कि घर के सामने जो पागल रहता था, सुबह मरा मिला और दोपहर में म्यूनिसीपैल्टी वाले उसकी लाश उठा ले गए। बताया जाता था कि यह सुनकर सुरैया बहुत देर तक रोती रही और उस रात उसने खाना भी नहीं खाया।

1970 में ऐसी ही एक घटना अभिनेत्री माला सिन्हा के साथ भी हुई थी। एक बार किसी प्रशंसक (यानि आज की भाषा में 'फैन') ने उन्हें बनारस से पत्र लिखा, जिसमें उनके काम की प्रशंसा करने के साथ–साथ उसकी हरेक फिल्म देखने की बात लिखी थी। बाद में लिखा था कि फिल्मों में उसका काम देखकर वह उससे प्रेम करने लगा है और उससे शादी करना चाहता है। इतना ही नहीं, साथ ही अपने व्यापार और जमीन जायदाद आदि के बारे में बताते हुए उम्मीद जताई कि वह उसे निराश नहीं करेंगी। यह पत्र पढ़कर माला सिन्हा खूब हंसी और घर के परिजनों को भी पढ़वाया सभी ठहाके मारकर हंसे। उसने उस पत्र के उत्तर में धन्यवाद देते हुए लिखवाया कि बाकी सब तो ठीक है परन्तु वह उससे शादी नहीं कर सकती क्योंकि वह तो पहले ही शादीशुदा है और उनकी एक छोटी बेबी भी है। उस व्यक्ति ने जो उत्तर दिया उसे पढ़कर माला सिन्हा गुस्से से जल भुन कर रह गई। पत्र में लिखा था, ''मैं आपसे इतना प्यार करता हूं, मैं आपकी बेटी को भी अपनाने को तैयार हूं, उसे अपनी बेटी

समझकर उतना ही प्यार करूंगा। मैं आपके लिए इतना सब करने को तैयार हूं तो क्या आप मेरे लिए अपने पति को तलाक नहीं दे सकती? माला ने चिट्ठी फाड़कर फैंक दी और सारी बात खत्म।

परन्तु उसी दौरान हेमा मालिनी के साथ कुछ अलग घटना हुई। अभी उनकी दो तीन फिल्में ही आईं थी और करीब–करीब सभी हिट रही। उन दिनों रत्नागिरी से किसी 'फैन' ने उन्हें पत्र भेजा, जिसमें अच्छी लगने वाली बात कही। उसने आगे लिखा कि उसने अपने हाथ से उनके लिए एक लहंगा–चोली बनाई है और हेमा एक बार इन कपड़ों को पहनकर दिखा दे। हेमा के सचिव ने लिखा कि आप कपड़े भेजना चाहते हैं तो भेज दीजिए, अच्छे रहे तो उनका किसी फिल्म में इस्तेमाल किया जाएगा। उस व्यक्ति का उत्तर आया कि कपड़े बहुत महंगे हैं, उनमें महंगे सलमे–सितारे लगे हैं। डाक में खो सकते हैं। इसलिए वह खुद यह कपड़े लेकर आएगा। हेमा की ओर से कोई जवाब नहीं दिया गया।

एक दिन एक आदमी ने आकर बताया कि वह रत्नागिरी से आया है। मगर गेट पर खड़े चौकीदार ने उसे रोक दिया। बहुत शोर शराबा करने पर अन्दर से एक नौकरानी ने कहा कि यह कपड़े दे जाओ। लेकिन वह कपड़े देने को तैयार नहीं हुआ। बस, यही जिद करता रहा कि हेमा मालिनी को बुलाओ। बात बढ़ गई और हेमा के पिता ने उसे चुपचाप चले जाने, नहीं तो चौकीदार और नौकरों से पिटवाने और पुलिस के हवाले करने को कहा, यह सब सुन कर उस समय तो वह चला गया। उसी रात हेमा की मां जया को कुछ खटपट सुनाई दी तो वह उठीं, देखा पीछे की खिड़की खोलकर एक आदमी अंदर घुस आया था। वह चिल्लाई तो उस आदमी ने एक चाकू निकाल कर उनकी गर्दन पर रख दिया और चुपचाप हेमा के कमरे की ओर ले चलने को कहा। तब तक हेमा और उसके पिता भी आ गए। उस आदमी ने हेमा की ओर एक बंडल बढ़ाया और वह कपड़े पहन कर आने को कहा। तभी हेमा के पिता ने उसके पांव पर डंडा मारा। मगर वह शायद पहले से ही तैयार था, उसने खुद को बचाने के लिए जो चाकू चलाया वह हेमा के पिता के पैरों में जाकर लगा। वह व्यक्ति खिड़की से कूद कर भाग गया। पुलिस ने खोजबीन की मगर पहला खत, जो उस आदमी ने लिखा था और जिसमें उसका पता ठिकाना मिल सकता था, नहीं मिला और दूसरे खत में उसने केवल अपना नाम लिखा था । ऐसे में बिना सबूत के मामला खत्म कर दिया गया।

भारत के पूर्वी तटीय क्षेत्रों में अक्सर समुद्री तूफान आते रहते हैं। 70–80 के दशकों में आज की तरह, NDRF या मौसम विभाग द्वारा पहले ही चेतावनी देने वाली अच्छी प्रणाली नही थी। ऐसे

में जानमाल की काफी क्षति होती थी और हजारों लोग बेघर हो जाते थे। तूफान पीड़ितों के लिए राहत कार्य चलते चलाए जाते थे। ऐसे में दक्षिण की फिल्म इंडस्ट्री के लोग भी पीछे नहीं रहते थे। बड़े छोटे कलाकार अलग–अलग शहरों में जुलूस बनाकर लोगों से चन्दा और राहत सामग्री एकत्र करते तथा उसे पीड़ितों में बंटवाते थे। सभी कलाकार प्रायः मंचनुमा खुले ट्रकों पर सवार होते थे। उन दिनों कम से कम दक्षिण के फिल्मकारों में प्रशंसकों से हाथ मिलाना कंधे पर हाथ रख देना आमबात थी। ऐसे में लोग उनके (हाथों में लिए हुए) डिब्बों में पैसे डालते, कोई सिर्फ हाथ जोड़ लेता तो कोई उनसे हाथ मिलाता था। कुछ ऐसे भी उत्साही होते जो ऊपर चढ़ जाते 100 रुपए डालते और कलाकारों से हाथ मिलाते या गले लगते थे। 1983 में ऐसे ही एक जुलूस में जयप्रदा भी शामिल थी। एक युवक जयप्रदा के पास आया और उसने डिब्बे में कुछ रूपए डाले और हाथ मिलाने को हाथ आगे बढ़ाया और आगे बढ़कर उसके गले से लिपट गया, वह भी अपने को संभाल नहीं पाई और खुले ट्रक से दोनों नीचे गिर गए। लोगों ने जैसे तैसे खीच खांच कर अलग किया। दोनों को हल्की चोंटे लगी। उस दिन के बाद जयप्रदा अपने प्रशंसकों से काफी दूरी बनाए रखने लगी। आखिर क्यों न दूर रहें ऐसे सिरफिरे प्रशंसकों से?

ऐसी ही 1967 की एक और पुरानी घटना है। निर्माता निदेशक पाछी की एक बहुचर्चित और बड़े बजट की एक फिल्म 'अराउण्ड दी वर्ल्ड', जिसके नायक राजकपूर थे, का नई दिल्ली के एक सिनेमा हॉल पर प्रीमियम शो रखा गया था। इस का खूब प्रचार किया गया और पहले दिन शुक्रवार को''इनविंग–शो'' के यानि प्रीमियर शो के समय अंदर के गेट पर प्रबंधकों के साथ राजकपूर, प्राण, महमूद तथा निर्माता पाछी मौजूद थे। सभी कलाकार हाथ जोड़कर दर्शकों का स्वागत करने लगे। दर्शक उन्हें देखते हाथ हिलाते, लाइन से हॉल में जा रहे थे। एक–दो लोगों ने आगे बढ़कर उनसे हाथ मिलाया। उन्हें हाथ मिलाते देखा तो बहुत से लोग लाइन तोड़ कर कलाकारों से हाथ मिलाने आगे बढ़ आए। अचानक उनके चारों ओर भीड़ लगी तो कलाकार पीछे हट गए। बस क्या था? हाथ न मिलाने से कुछ लोग गुस्से में शोर करने लगे, कुछ खरीदी गई टिकट और लाइन भूल कर बाहर आ गए, पहले शोर–शराबा और कुछ देर बाद पत्थर मारने लगे। इस प्रकार अचानक पथराव देख पुलिस के जवानों ने भी लाठीचार्ज कर दिया। कलाकारों को तुरन्त अन्दर ले जाया गया और बाद में जैसे तैसे उन्हें पिछले रास्ते से भेजा गया। बाहर करीब आधा घंटे तक पुलिस और दर्शकों के बीच पत्थरबाजी होती रही। पूरे सिनेमा हाल का हूलिया बिगाड़ दिया। उस दिन के बाद से उस सिनेमाहॉल ने ही नहीं, रीगल, प्लाजा और ओडियन को छोड़कर, दिल्ली के किसी सिनेमा हॉल ने शायद ही कभी प्रीमियम शो रखा हो या फिल्म स्टारों को बुलाया हो, आजतक सुनने में नहीं आया है।

(व्यक्तिगत रूप से देखी गई घटनाओं तथा विभिन्न पत्र/पत्रिकाओं के पुराने अंको में प्रकाशित समाचारों पर आधारित है।

***

102 वर्ष पुराना दर्द - कोरोना

—नीरज त्यागी

आज पूरी दुनिया कोरोना वायरस से लड़ रही है। यह वायरस दुनिया के लगभग सभी देशों में फैल चुका है। पूरी दुनिया में कोरोना से संक्रमित मरीजों की संख्या लगातार बढ़ती ही जा रही है। कोरोना वायरस कि इस महामारी ने कुछ लोगों को 1918 के स्पेनिश फ्लू की याद दिला दी है। उस दौर में जिस तेजी से यह संक्रमण फैला था और जितनी मौतें हुई थी उससे पूरे दुनिया को हिला दिया था। 102 साल पहले पूरी दुनिया में स्पेनिश फ्लू के कहर से एक तिहाई आबादी इसकी चपेट में आ गयी थी। कम से कम पांच से छः करोड़ लोगों की मौत इसकी वजह से हुई थी। रिपोर्टस के मुताबिक इस फ्लू के कारण भारत में भी कम से कम एक करोड़ 55 लाख लोगों ने जान गवाईं थी।

स्पेनिश फ्लू की वजह से करीब पौने दो करोड़ भारतीयों की मौत हुई है जो विश्व युद्ध में मारे गए लोगों की तुलना में ज्यादा है। उस वक्त भारत ने अपनी आबादी का छह फीसदी हिस्सा इस बीमारी में खो दिया था। मरने वालों में ज्यादातर महिलाएं थीं। ऐसा इसलिए हुआ था क्योंकि महिलाएं बड़े पैमाने पर कुपोषण का शिकार थी। वह अपेक्षाकृत अधिक अस्वास्थ्यकर माहौल में रहने को मजबूर थी। इसके अलावा नर्सिंग के काम में भी वो सक्रिय थी।

*सम्प्रतिः हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक एवं ब्लागर

ऐसा माना जाता है कि इस महामारी से दुनिया की एक तिहाई आबादी प्रभावित हुई थी और करीब पांच से छः करोड़ लोगों की मौत हो गई थी। हिंदी के मशूहर लेखक और कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की पत्नी और घर के कई दूसरे सदस्य इस बीमारी की भेंट चढ़ गए थे।

उन्होंने बाद में इस सब घटना चक्र पर लिखा भी था कि "मेरा परिवार पलक झपकते ही मेरी आँखों से ओझल हो गया था।" वे उस समय के हालात के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं कि गंगा नदी शवों से पट गई थी, चारों तरफ इतने शव थे कि उन्हें जलाने के लिए लकड़ी कम पड़ रही थी। हालात तब और खराब हो गए थे जब खराब मानसून की वजह से सुखा पड़ गया और अकाल जैसी स्थिति बन गई। इसकी वजह से बहुत से लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई थी। शहरों में भीड़ बढ़ने लगी। इससे बीमार पड़ने वालों की संख्या और बढ़ गई। तब भी बॉम्बे शहर इस बीमारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ था।

इन दोनों ही महामारियों के फैलने के बीच भले ही एक सदी का फासला हो लेकिन इन दोनों के बीच कई समानताएं दिखती हैं। संभव है कि हम बहुत सारी जरूरी चीजें उस फ्लू के अनुभव से सीख सकते हैं। उस समय भी आज की तरह ही बार–बार हाथ धोने के लिए लोगों को

उस वक्त मौजूद चिकित्सकीय व्यवस्थाएं आज की तुलना में बहुत ही कम थीं। 1918 में जब फ्लू फैला था। तब एंटीबायोटिक का चलन इतने बड़े पैमाने पर नहीं शुरू हुआ था। इतने सारे मेडिकल उपकरण भी मौजूद नहीं थे जो गंभीर रूप से बीमार लोगों का इलाज कर सकें। पश्चिमी दवाओं का इस्तेमाल भी भारत की एक बड़ी आबादी नहीं किया करती थी और ज्यादातर लोग देसी इलाज पर ही यकीन करते थे।

हालांकि इलाज तो आज भी कोरोना का नहीं है लेकिन वैज्ञानिक कम से कम कोरोना वायरस की जीन मैपिंग करने में कामयाब जरूर हो पाए हैं। इस आधार पर वैज्ञानिकों ने टीका बनाने का वादा भी किया है।

समझाया गया था और एक दूसरे से उचित दूरी बनाकर ही रहने के लिए कहा गया था। सोशल डिस्टेंसिंग को उस समय भी बहुत अहम माना गया था और आज ही की तरह लगभग लॉक डाउन की स्थिति उस समय भी थी इतने सालों बाद भी वही स्थिति वापस आ गई है।

स्पेनिश फ्लू की चपेट में आए मरीजों को बुखार, हड्डियों में दर्द, आंखों में दर्द जैसी शिकायत थीं। इसकी वजह से महज कुछ दिन में बॉम्बे (मुंबई) में कई लोगों की जान चली गई। एक अनुमान के मुताबिक जुलाई 1918 तक 1600 लोगों की मौत स्पैनिश फ्लू से हो चुकी थी। केवल मुंबई इससे प्रभावित नहीं हुआ था। रेलवे लाइन शुरू होने की वजह से देश के दूसरे हिस्सों में भी ये बीमारी तेजी से फैल गई। ग्रामीण इलाकों से ज्यादा शहरों में इसका प्रभाव दिखाई दिया।

बॉम्बे में तेजी से फैलने के बाद इस वायरस ने उत्तर और पूर्व में सबसे ज्यादा तांडव मचाया। ऐसा माना जाता है कि दुनियाभर में इस बीमारी से मरने वालों में पांचवां हिस्सा भारत का था। बाद में असम में इस गंभीर फ्लू को लेकर एक इंजेक्शन तैयार किया गया, जिससे कथित तौर पर हजारों मरीजों का टीकाकरण किया गया। जिसकी वजह से इस बीमारी को रोकने में कुछ कामयाबी मिली।

हालांकि बाद में कुछ बाते सामने आई। सन 2012 की एक रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत के जिन हिस्सो में ज्यादा बसावट थी, उन हिस्सों में इस बीमारी ने ज्यादा कहर मचाया था। इन

उस समय का एक दुर्लभ चित्र इंस्टाग्राम से साभार

हिस्सो में भारतीय इस महामारी में सबसे अधिक मारे गए थे। अब एक बार फिर से कोरोना के बढ़ते कहर की वजह से लोग बेहद आशंकित हैं। फिलहाल सरकार और दूसरी संस्थाएं लगातार लोगों को इस गंभीर वायरस से बचाव को लेकर कोशिश में जुटी हुई हैं।

आखिरकार गैर सरकारी संगठनों और स्वयं सेवी समूहों ने आगे बढ़कर मोर्चा संभाला था। उन्होंने छोटे–छोटे समूहों में कैंप बना कर लोगों की सहायता करनी शुरू की, पैसे इकट्ठा किए, कपड़े और दवाइयां बांटी है। नागरिक समूहों ने मिलकर कमिटियां बनाईं। एक सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, "भारत के इतिहास में पहली बार शायद ऐसा हुआ था जब पढ़े–लिखे लोग और समृद्ध तबके के लोग गरीबों की मदद करने के लिए इतनी बड़ी संख्या में सामने आए थे।

आज की तारीख में जब फिर एक बार ऐसी ही एक मुसीबत सामने मुंह खोले खड़ी है तब सरकार चुस्ती के साथ इसकी रोकथाम में लगी हुई है लेकिन एक सदी पहले जब ऐसी ही मुसीबत सामने आई थी तब भी नागरिक समाज ने बड़ी भूमिका निभाई थी। जैसे–जैसे कोरोना वायरस के मामले बढ़ते जा रहे हैं, इस पहलू को भी हमें ध्यान में रखना होगा और सभी लोगो को मिलकर इस बीमारी की लड़ाई में आगे बढ़ना होगा। (श्री नीरज त्यागी को धन्यवाद सहित : तरूण रथ से साभार)

***

श्री गुलजार, कवि और गीतकार की लॉक डाउन पर एक नज़्म

बेवजह घर से निकलने की जरूरत क्या है,
मौत से आंखें मिलाने की की जरूरत क्या है?
सबको मालूम है बाहर की हवा कातिल है,
यूं ही कातिल से उलझने की जरूरत क्या है?,
जिंदगी एक नेमत है, उसे संभाल के रख,
कब्रगाहों को सजाने की जरूरत क्या है?
दिल बहलाने को घर में वजहें है काफी,
यूं ही गलियों में भटकने की जरूरत क्या है?

***रेख्ता से साभार**

कोरोना

बहुत ही स्वाभिमानी और आत्मसम्मान से भरा हुआ वायरस है। वो तब तक आपके घर नहीं आएगा जब तक आप उसे लेने खुद बाहर नहीं निकलते।

घर पर ही रहें...
उसे बाहर लेने न जाएं।

भारतीय संस्कृति

भारत में वृक्ष-पूजा

—शंकर लाल माहेश्वरी

भारतीय संस्कृति एवं परम्पराओं में पेड़ों को विशिष्ट महत्ता प्रदान की गई है। पेड़ हमारी संस्कृति के संरक्षक भी माने जाते है। हमारे संत और महात्माओं ने पेड़ों की छत्रछाया में ही साधना करते हुए ज्ञान प्राप्त किया था। भारत भूमि पर वृक्षों, वनों, पौधों और पत्तों को देवतुल्य माना जाता है। प्रत्येक मांगलिक अवसर पर घरों के दरवाजों पर आम, अशोक, कनेर तथा केले के पत्तों से सजावट होती रही है। विशेष पर्वों और उत्सवों पर वृक्षों की पूजा अर्चना भी की जाती है।

> परम्परा से आशय उस परिपाटी से है जो निश्चित सांस्कृतिक मूल्यों के निर्वाह तथा उन्हे पीढ़ी दर पीढ़ी आगे से आगे बढ़ाने के उद्देश्य से समाज में एक निश्चित विधि से अपनाई जाती है।

हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों और वेदों में भी उल्लेख है कि मानव शुद्ध वायु में श्वांस ले, शुद्ध जलपान करे, शुद्ध अन्न फल, भोजन करे, शुद्ध मिट्टी में खेले कूदे व कृषि करें तब ही वेद प्रतिपादित उसकी आयु ''शतम् जीवेम् शरदः शतम्'' हो सकती हैं। भारत के कई मन्दिरों में पेड़ को भी देवता का प्रतीक माना जाता है। पीपल, तुलसी, वट वृक्षों की पूजा अर्चना पर्यावरण सुरक्षा का ही परिचायक हैं। हमारे धर्मशास्त्रों में महामनीषियों ने वापी, पाली और जलाशय बनाकर वृक्षारोपण कराने को किसी यज्ञ के पुण्य से कम नही माना है। ऋषि आश्रमों में यज्ञ हवन आदि में जिस समिधा का प्रयोग होता हैं वह भी वृक्षों की देन हैं।

वृक्ष एक ओर जहां हमारें जीविकोपार्जन के साधन है वहीं दूसरी ओर हमारे जीवन के आधार भी है। वृक्षारोपण और जलाशय निर्माण को पुनीत कार्य माना जाता है। पूर्व में हमारे देश में राजा–महाराजा जनता की सुख सुविधा के लिए सड़कों का ही निर्माण कराते समय इनके किनारे छायादार वृक्षों व कूंओं/जलाशयों आदि की व्यवस्था भी कराते थे। सम्राट अशोक ने समूचे राज्य में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में जगह–जगह फलदार व छायादार वृक्ष लगाकर वन्य जीवों और जीव जन्तुओं को आश्रय प्रदान किया था। भारतीय समाज में पेड़ो की पूजा व

*पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी, राजस्थान

नदियों को माता का दर्जा देना प्रकृति के संरक्षण का परिचायक ही हैं। शास्त्रों में गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों को पवित्र बताते हुए पूज्य भाव से उनका उल्लेख किया हैं। रामायण में काण्ड, महाभारत में पर्व और श्रीमद् भागवत् में स्कन्ध शब्दों का प्रयोग हुआ हैं जिसका अर्थ क्रमशः तना, पोर और प्रधान शाखा से हैं।

वृक्ष एवं वनस्पति को रूद्र भी कहा जाता है क्योंकि ये विषैली हवाओं (गैस) को पीकर (सोंख कर) अमृतमयी गैस निकालते है अतः वृक्षों को सींचना महादेव को जल चढ़ाने के समान ही माना गया है। विष्णु पुराण में एक वृक्ष लगाने और उसका पालन पोषण करने को पुण्य–कार्य माना गया है। मत्स्य पुराण में एक बावड़ी और बावड़ी के आसपास वृक्ष लगाने को दस पुत्रों का पालन करने के समान कहा गया है। शास्त्रवेत्ताओं का कथन है कि पथ पर फलदार वृक्षारोपण करने से जीवन में अच्छे परिणामों की प्राप्ति होती है। जीवन में ऐसे सुख जो अग्निहोत्र करने से भी उपलब्ध नहीं होते, वह मार्ग पर पेड़ लगाने से मिल जाते है।

चरक संहिता में प्राकृतिक औषधियां व जड़ी बूटियों का चिकित्सकीय दृष्टि से उपयोग बताया गया है कि नींबू, आँवला, पपीता, सेव, पालक, चंदलाई आदि शरीर के लिए पौष्टिक एवं स्वास्थ्य वर्धक हैं।

कण्व ऋषि की पुत्री शकुन्तला का पूरा बचपन वृक्षों की छाया तले ही व्यतीत हुआ। उसकी विदाई के समय वृक्षों की पत्तियों से आंसू टपक रहे थे। उसने वृक्षों से गले मिलकर विदा ली थी। रामायण काल में राम का वनों में निवास, वृक्षों के निकट आश्रय, लंका में सीता जी का अशोक वाटिका में रहना आदि प्रकृति प्रेम के सूचक और वृक्षों की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं।

हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं में प्रकृति प्रेम की अनेक गाथाएं भरी पड़ी है। वृक्षों के प्रति विशेष प्रेम से प्रेरित होकर राम ने दण्डकारण्य, इन्द्र ने

हमारी परम्पराओं में वृक्षों की पूजा का विशेष महत्व रहा है । वृक्ष पूजा की परम्परा में कार्तिक मास में महिलाएं पीपल व वट वृक्ष की पूजा कर जल अर्पित करती हैं, माना जाता है कि इससे घर पारिवार सुखी व स्वस्थ रहता है। कदम्ब के पेड़ के नीचे परिवार सहित भोजन किया जाए तो परिवार में समृद्धि रहती है। जिस घर में तुलसी की पूजा होती है उस घर में यम प्रवेश नही करता है। प्राचीन काल में प्रत्येक और आज भी बहुत से शिवालयों के पास विल्व पत्र का वृक्ष लगाया जाता था जिसकी पत्तियां शिवजी को अर्पित होती है। तुलसी एकादशी के दिन तुलसी के पौधों की अपनी पुत्री के समान विवाह की रस्म सम्पन्न की जाती है। जो पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन को सुखी व स्वस्थ बनाने की दिशा में सफल है।

नन्दनवन, कृष्ण ने वृंदावन, सौनकादि ऋषियों ने नेमिशारण्य वन तथा पाण्डवों ने खाण्डव प्रस्थ में वनों का निर्माण किया था। वर्षा का आव्हान, भूस्खलन का बचाव, प्राणवायु का दान और जीव जन्तुओं का संरक्षण आदि कार्य भी वृक्षों द्वारा की सम्पादित होते है। जिनके क्रियान्वयन से मानव जीवन को सुखी एवं समृद्ध बनाने हेतु प्रकृति प्रदत्त संसाधनों के संरक्षण की व्यवस्था बनाई गई है।

ब्रह्माण्ड पुराण में लक्ष्मी को कदम्ब वासिनी कहा गया है। कदम्ब के पुष्पों से भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। वृहदारण्यक उपनिषद में पुरुष को वृक्ष का स्वरुप माना गया है। पद्म पुराण में भगवान विष्णु को पीपल वृक्ष, भगवान शंकर को वटवृक्ष और ब्रह्मा जी को पलाश वृक्ष के रुप में प्रतिष्ठापित किया गया है। घर में वास्तु दोषों को नष्ट करने के लिए तुलसी का पौधा सक्षम है। माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए घर में श्वेत आक, केला, आंवला, हरसिंगार, अशोक, कमल आदि लगाने का विधान है। शास्त्रानुसार

वृक्ष पुराण में का गया है, ''वृक्ष हमारे जीवन के सहचर हैं हमारा जीवन वृक्षों के अस्तित्व पर निर्भर है। वृक्षों की छोड़ी गई प्रश्वांस हमारी श्वांस है। वृक्षों के मूल, तना, पत्र, पुष्प, फल हमारे जीवन की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। वृक्षों की छाया हमें शीतलता प्रदान करती हैं। वृक्ष मेघों को आकर्षित कर हमारे लिए प्राकृतिक जल की व्यवस्था करते है''

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की नवमी को आँवला नवमी कहते हैं। कहते हैं कि पीपल के पेड़ को नियम पूर्वक जल चढ़ाया जाए तो शनि का दुष्प्रभाव समाप्त हो जाता है। चौत्र मास की कृष्ण पक्ष की दशमी को''दशामाता'' कहा जाता है। इस दिन स्त्रियां की पीपल पूजा करती हैं। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को स्त्रियां वटवासिनी का व्रत रखती हैं। वट वृक्ष को जल सींचती हैं। हरियाली अमावस्या और बसंत पंचमी आदि पर्वों पर व्रत उपवास के साथ वनस्पति पूजा होती है। छत्तीसगढ़ के ग्रामीण इलाकों में आम के पेड़ से आम तोड़ने से पहले पेड़ का विवाह कराने की परिपाटी है।

ईशान कोण में आंवला नैऋत्य में इमली, आग्नेय में अनार, वायव्य मे बेल, उत्तर में केथ व पाकर, पूर्व में बरगद, दक्षिण में गुगल और गुलाब तथा पश्चिम में पीपल का वृक्ष लगाना शुभ माना गया है। तुलसी को विष्णु प्रिया, केला को बृहस्पति और सन्तान दाता तथा पीपल को बह्मा, विष्णु, महेश के निवास के रुप में पूजा जाता है। चन्दन भक्त और भगवान के माथे की शोभा है।

पीपल बरगद को बृह्मा माना जाता था। उन्हे काटना बृह्महत्या के समान माना जाता है। जिन पेड़ों पर पक्षियों के घोंसले हों तथा किसी देवालय या श्मशान भूमि पर लगे पेड़ों को काटना शास्त्रानुकूल नहीं है। किसी कारण से वृक्ष काटना ही हो तो वृक्ष पर निवास करने वाले जीव जन्तुओं से क्षमा प्रार्थना करते हुए वहां से जाने को कहें और इससे पहले अन्यत्र वृक्षारोपण की व्यवस्था

जोधपुर जिले की खेजड़ली ग्राम आज भी वृक्ष संरक्षण के लिए जाना जाता है। संवत् 1780 में 363 वीर–वीरागंनाओं ने अपने सिर कटवाकर मरुस्थल में खेजड़ी के वृक्षों की रक्षा की थी। आज भी विश्नोई सम्प्रदाय के लोग खेजड़ी के पेड़ की सुरक्षा हेतु समर्पित है।

की जानी चाहिए। साथ ही दूध वाले वृक्ष जैसे बड़, पीपल, बहेड़ा, अरड़, नीम आदि को काटने पर पाप का भागीदार होता है

बढ़ती जनसंख्या और भौतिक वादी व्यवस्थाओं के फलस्वरुप वृक्षों की अन्धाधुंध कटाई हो रही है। प्रकृति से निर्दयता पूर्वक छेड़छाड़ की जा रही है अतः आज प्रदूषण की भयावही समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। गाँधीजी ने कहा था ''प्रकृति सभी जीवों का भरण पोषण तो करती हैं किन्तु एक भी लालची की तृष्णा शांत करने में अक्षम है।

पेड़ो को नष्ट होने से बचाने के लिए ही ओरण, डोली तथा गोचर व्यवस्था की परम्परा का विकास हुआ था। ओरण एक संरक्षित वन हैं जो किसी देव स्थान से जुड़ा होता है। डोली किसी मठ या मन्दिर के पुजारी को व्यक्तिगत सम्पत्ति के रुप में दी जाती है ताकि वनों का संरक्षण होता रहे।

बढ़ती जनसंख्या और भौतिकवादी व्यवस्थाओं के फलस्वरुप वृक्षों की अन्धाधुंध कटाई हो रही है। सड़कों के बढ़ते हुए जाल, उद्योगों की स्थापना, बांधों के निर्माण तथा रेल्वे लाइनों के विस्तार के कारण वृक्षों की अपार कटाई हो रही है । अतः नष्ट हो रहे वृक्षों के स्थान पर नये वृक्षारोपण पर ध्यान दिए जाने हेतु सख्त कानून बनाने और उनका कठोरता से पालन किया जाना आवश्यक हैं अन्यथा वह दिन दूर नही हैं जब प्रकृति प्रकोप से पूरा प्राणी जगत प्रभावित हो जाएगा और हमारे अस्तित्व को खतरा उत्त्पन्न होगा अतः वृक्षों के बचाव हेतु सभी को कृत संकल्प होना ही पड़ेगा

आन्ध्र प्रदेश में तो नीम के पेड़ को राज्य वृक्ष का दर्जा दिया गया है।

याद इन्हें भी कर लें

सतीश गुजराल

भारत के सबसे बहुमुखी कलाकारों में उनका नाम लिया जाता है। उन्हें वास्तुकला और आंतरिक डिजाइन के अलावा, कुछ अति सुंदर पेंटिंग, ग्राफिक्स, भित्ति चित्र और मूर्तियां बनाने के लिए भी जाना जाता है।

25 दिसंबर 1925 को झेलम (अब पाकिस्तान में) में जन्मे सतीश गुजराल भारत के सबसे बहुमुखी कलाकार थे और संयोग से, वह राजनेता तथा 1997–98 में भारत के प्रधानमंत्री रहे श्री इंद्र कुमार गुजराल के छोटे भाई थे । आठ साल की उम्र में पैर फिसलने के कारण इनकी टांगे टूट गई और सिर में काफी चोट आने के कारण इन्हें कम सुनाई पड़ने लगा। सतीश चाहकर भी आगे की पढ़ाई नहीं कर पाए। खाली समय बिताने के लिए चित्र बनाने लगे।

एक कलाकार के रूप में सतीश गुजराल का कला में करियर तब शुरू हुआ जब 1939 में उन्होंने मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स, लाहौर में व्यावहारिक शिल्पकला का अध्ययन करने के लिए प्रवेश लिया। इसके बाद वे 1944 में बॉम्बे चले गए और जेजे स्कूल ऑफ आर्ट्स में दाखिला लिया, लेकिन फिर से बीमार होने के कारण उन्हें छोड़ना पड़ा। 1952 में, उन्हें मेक्सिको सिटी के पलासियो डी बेलास आर्टेस में अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति मिली, जहां उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध कलाकारों डिएगो रिवेरा और डेविड अल्फारो सिकीरोस से अवगत कराया गया था। उनका दृढ संकल्प प्रारंभिक कलात्मक कृतियों में देखा जाता है।

पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के कैम्पस में सतीश गुजराल का एक मुरल

एक कलाकार–वास्तुकार के रूप में, उन्होंने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी कई इमारतों और परिसरों को

डिजाइन किया। इनमें प्रमुख हैं नई दिल्ली स्थित बेल्जियम दूतावास, इंडिया इस्लामिक कल्चरल सेंटर, नई दिल्ली, इंदिरा गांधी सेंटर फॉर इंडियन कल्चर, मॉरीशस, अल–मद्दर फार्म, रियाद, गोवा यूनिवर्सिटी, गोवा, कंप्यूटर मेंटेनेंस कॉर्पोरेशन ऑफिस, हैदराबाद आदि। बेल्जियम के दूतावास के उनके डिजाइन ने उन्हें रातोंरात प्रसिद्ध कर दिया था।

सतीश गुजराल को मैक्सिको का लियोनार्डो डा–विंसी पुरस्कार प्रदान किया गया। इन्हें "ऑर्डर ऑफ क्राउन " सम्मानित किया जा चुका है।

इन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तथा भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया है। इन्हें कला का राष्ट्रीय पुरस्कार तीन बार, दो बार चित्रकला के लिए एवं एक बार मूर्तिकला के लिए, दिया गया है।

सतीश गुजराल का 26 मार्च 2020 को 94 वर्ष की आयु में निधन हो गया।

अतुल्य भारत की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

***

शुभकामनाएं

जनवरी से मार्च, 2020 की तिमाही में सेवानिवृत्त हुए अधिकारी/कर्मचारी

Ø-l-	uke	in	ekg
1.	**श्री एस.आर. चौधरी**	सहायक निदेशक	जनवरी, 2020
2.	**श्री रंजन लाहिरी**	सहायक महानिदेशक	फरवरी, 2020
3.	**श्री जी.सी. भुईयां**	सहायक निदेशक, पटना	फरवरी, 2020
4.	**श्री लक्ष्मी नारायण**	सहायक	फरवरी, 2020

पर्यटन मंत्रालय से सेवानिवृत्त हुए सभी पदाधिकारियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके अच्छे स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन की कामना करते हैं।

–अतुल्य भारत

***

कर्नाटिक संगीत के अग्रदूत

कादरी गोपालनाथ

श्री कादरी गोपालनाथ अल्टो सैक्सोफोनिस्ट थे और कर्नाटिक संगीत के अग्रदूतों में से एक थे।

6 दिसंबर, 1949 को दक्षिण कन्नड़ा जिले के सजीपामूदा गांव में तान्यप्पा के घर जन्मे गोपाल नाथ को संगीत की आरम्भिक शिक्षा पिता से ही मिली। उनके पिता भी नादेस्वरम् वादक थे और विवाह आदि के समय उन्हें बुलाया जाता था, कई बार बड़े कार्यक्रमों में भी शामिल होने के अवसर मिलते थे । करीब 10–11 वर्ष की आयु में ही गोपाल अपने पिता के साथ संगत करने लगे थे। एक बार उन्हें पिता के साथ मैसूर के महल में आयोजित एक संगीत सम्मेलन में जाने का मौका मिला, जहां इस बार भारतीय शास्त्रीय संगीत के कलाकारों के अलावा एक पश्चिमी बैंड भी आमंत्रित था। कार्यक्रम समाप्ति होने पर बालक गोपाल उनके पास गया, सैक्सोफोन उठाकर कर उत्सुकता से देखा और उसने सैक्सोफोन को नादेस्वरम की तरह ही बजाने की कोशिश की तो लोग हंसने लगे। उसे इस नए वाद्य के स्वर कहीं अधिक जीवंत लगे और गोपालनाथ ने इस पवनयंत्र को बजाने की ठान ली। सैक्सोफोन के बारे में कहा जाता है कि यह सपाट यंत्र उसमें शास्त्रीय संगीत के बंधें स्वर को बजाना कठिन था।

पहले गोपाल ने कलानिकेतन के गुरू श्री गोपालकृष्ण अय्यर से सैक्सोफोन बजाने का तरीका सीखा। बाद में, वह चेन्नई में वह जाने–माने कर्नाटिक संगीत के गायक और मृदंगवादक टी.वी. गोपालकृष्णन के संपर्क में आए और सैक्सोफोन पर कर्नाटिक संगीत बजाने की इच्छा जताई। उन्होंने इस युवक की प्रतिभा को पहचाना और इस कार्य में उनकी लगन देख कर टी.वी. गोपालकृष्णन और संगीतकार एस. एमंगुड़ी श्रीनिवास अय्यर ने गोपाल नाथ की सहायता की और यह पाया कि कर्नाटिक संगीत के लिए पारंपरिक अल्टो सैक्सोफोन में कुछ संशोधन किए जाएं और फिर प्रयास किया जाए। यह आसान नहीं था। आखिर तीनो की मेहनत रंग लाई और इस परिवर्तन से सैक्सोफोन में कर्नाटिक संगीत के स्वर उभरने लगे । इस जटिल पश्चिमी वाद्य को जीतने में उन्हें लगभग 20 साल लग गए और

अंततः उन्होंने सैक्सोफोन पर कर्नाटिक संगीत बजाकर संगीत के प्रेमियों को हैरान कर दिया। कादिरी गोपाल ने 1978 में आकाशवाणी, मंगलुरु में अपना पहला संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

उनका पहला लाइव प्रदर्शन चेम्बई मेमोरियल ट्रस्ट के लिए था। 1980 का बॉम्बे जैज फेस्टिवल गोपालनाथ के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। फेस्टिवल में कैलिफोर्निया के एक जैज संगीतकार जॉन हैंडी मौजूद थे। (गोपालनाथ का कार्यक्रम आखिर में रखा गया था)। गोपालनाथ के पवनयंत्र को नाटक कह कर हैंडी ने पूछा कि क्या वह मंच पर उसके साथ प्रदर्शन कर सकता है। एक वाद्य पर भिन्न शैलियों में जुगलबंदी, यानि पश्चिमी जैज शैली हैंडी में और कर्नाटिक शैली में गोपालनाथ। पश्चिमी वाद्य सैक्सोफोन पर गोपालनाथ ने भारतीय कर्नाटिक संगीत ने धूम मचा दी।

श्री गोपालनाथ ने यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका और पश्चिम एशिया सहित दुनिया भर के विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

उन्हें 1994 में लंदन के रॉयल अल्बर्ट हॉल में बीबीसी प्रोमेनेड संगीत समारोह में आमंत्रित होने वाले पहले भारतीय संगीतज्ञ होने का गौरव प्राप्त हुआ था।

मैंगलोर विश्वविद्यालय और बैंगलोर विश्वविद्यालय ने (2004 में) कर्नाटिक संगीत के प्रति उनकी खोज के लिए उन्हें मानद डॉक्टरेट प्रदान की। संगीत को प्रोत्साहित करने वाले देश–विदेश के विभिन्न संस्थानों ने अनेक प्रकार की उपधियों से – जैसे सैक्सोफोन चक्रवर्ती, सेक्सोफोन सम्राट, गणकलाश्री, नादोपासना ब्रह्म, नाद कलारत्न, नाद कलानिधि, संगीत वाद्ध रत्न आदि उपाधियों से सम्मानित किया।

सैक्सोफोन वादक कादरी गोपालनाथ को 2004 में नई दिल्ली में राष्ट्रपति भवन में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे ने पद्मश्री से सम्मानित किया। इस अवसर पर लिया गया चित्र। (फोटो साभारः वी.वी. कृष्णन)

श्री गोपालनाथ को पीठ दर्द के बाद 10 अक्टूबर को मंगलौर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। परंतु 11 अक्टूबर को सुबह करीब 4.45 बजे हृदयाघात ने 69 वर्ष की आयु में उनकी सांसों की कड़ी को तोड़ दिया।

अतुल्य भारत परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित है।

***

पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां एवं समाचार

भारत पर्व-2020

छह दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव

भारत पर्व–2020 लाल किले के सामने के मैदान में 26 से 31 जनवरी, 2020 तक मनाया गया। भारत पर्व का उद्देश्य लोगों को भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों की यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित करना था ताकि लोगों के मन में 'देखो अपना देश' की भावना उत्पन्न हो सके।

इस वर्ष के प्रमुख आकर्षणों में गणतंत्र दिवस परेड की मनोरम झांकियों के प्रदर्शन के अलावा प्रतिदिन सशस्त्र सेना के बैंड द्वारा प्रदर्शन, राज्य सरकारों/संघ शासित प्रदेशों और अन्य मंत्रालयों द्वारा पर्यटन आधारित मंडप, प्रदेशों के हस्तकला और हस्तशिल्प स्टाल, होटल प्रबंधन संस्थानों तथा अन्य संगठनों द्वारा फूड कोर्ट के साथ ही पाक कला के प्रदर्शन शामिल थे। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र और प्रदेशों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

भारत की सांस्कृतिक छवि प्रस्तुत करने के लिए भारत पर्व वार्षिक कार्यक्रम का दिल्ली में लाल किले के बाहर आयोजन किया जाता है। भारत पर्व 2020 का मुख्य विषय 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' और 'महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह' था।

पर्यटन मंत्रालय के विशेष सचिव और वित्त सलाहकार श्री राजीव कुमार चतुर्वेदी ने दिल्ली के लाल किले के मैदान में नगाड़ा बजाकर और तिरंगे गुब्बारों को उड़ाकर भारत पर्व का उद्घाटन किया। उद्घाटन समारोह के बाद सशस्त्र बलों के बैंड ने शानदार प्रदर्शन किया। इसके बाद उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया गया। इस अवसर पर पर्यटन महानिदेशक श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, अपर महानिदेशक (पर्यटन) श्रीमती रूपिन्दर बरार, श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन) और मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

भारत पर्व जनता के लिए 26 जनवरी,

2020 को 5 बजे सांय से लेकर 10 बजे रात तक और शेष दिनों में 27 से 31 जनवरी, 2020 को दोपहर 12 बजे से रात 10 बजे तक खुला था। भारत पर्व में आगंतुकों के पहचान पत्र को दिखाने पर प्रवेश प्रवेश निशुल्क होता है।

31 जनवरी, 2020 को पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी की उपस्थिति में भारत पर्व–2020 का समापन संपन्न किया गया। इस अवसर पर सचिव महोदय ने कहा कि इन छः दिनों में दो लाख से अधिक लोगों ने भारतपर्व का आनंद लिया और 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की सच्ची भावना के साक्षी बने। भारत पर्व का उद्देश्य भारतीय नागरिकों को भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों की यात्रा के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें 'देखो अपना देश' की भावना का संचार करना है।

***

गुजरात में ''गंतव्य प्रबंधन तथा समुदाय भागीदारी'' पर दो दिवसीय संगोष्ठी

पर्यटन तथा संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल तथा गुजरात के मुख्यमंत्री श्री विजय रुपाणी ने 13 फरवरी, 2020 को गुजरात में गंतव्य प्रबंधन तथा समुदाय भागीदारी पर दो दिवसीय बैठक का उद्घाटन किया। पर्यटन मंत्रालय द्वारा गुजरात सरकार के सहयोग से गुजरात के कच्छ के रण में इस संगोष्ठी का आयोजन से किया गया था।

बैठक में पर्यटन क्षेत्र में गंतव्य प्रबंधन तथा समुदाय भागीदारी के महत्व पर चर्चा की गई। इसमें पर्यटन उद्योग के प्रतिनिधि, निजी क्षेत्र के उद्यमी आदि संबंधित क्षेत्रों के हितधारकों सहित विभिन्न प्रदेशों के अधिकारियों ने भाग लिया और श्रेष्ठ व्यवहारों/अध्ययनों के बारे में जानकारियां दी।

इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि समाज को विकास की गतिविधियों में शामिल करके ही समुदाय को सामाजिक–आर्थिक लाभ प्रदान किया जा सकता है। इस आयोजन से स्थानीय समुदाय के लोगों को लाभ होगा क्योंकि उन्हें आतिथ्य–सत्कार उद्योग के लिए आवश्यक कौशल प्रदान किया जाएगा। इस विचार विमर्श से समाज और समग्र अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव तथा क्रियान्वयन की अवधारणाओं, रूपरेखा और चुनौतियों को समझने में मदद मिलेगी। बैठक का उद्देश्य सतत गंतव्य के लक्ष्य को हासिल करने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच सकारात्मक विचार–विमर्श को प्रोत्साहित करना है। सिफारिशों और विचार–विमर्श के आधार पर एक कार्यबल का गठन किया जाएगा जिससे आगे की कार्य योजना के लिए नीति बनाने में सहायता मिल सकेगी।

***

ग्रीस (यूनान) और भारत के बीच पर्यटन सहयोग पर वार्ता

4 फरवरी,2020 : भारत और ग्रीस (यूनान) के बीच पर्यटन के क्षेत्र में सहयोग को आगे बढ़ाने हेतु आज नई दिल्ली में ग्रीस के पर्यटन मंत्री श्री हैरी थियोहेरिस ने पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से भेंट की।

बैठक के दौरान मंत्री जी ने दोनों देशों की प्राचीन और गौरवशाली सभ्यताओं, स्मारकों, कलाकृतियों और समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों का उल्लेख किया। गंतव्य प्रबंधन, समुद्र तट, MICE पर्यटन, मानव संसाधन विकास और आतिथ्य एवं पर्यटन अवसंरचना क्षेत्र में निवेश सहित सूचना क्षेत्र भारत और ग्रीस के बीच सहयोग की संभावनाओं का पता लगाने, अनुभव साझा करने और जानकारी जुटाने के साथ ही दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और हवाई संपर्क के क्षेत्र में सहयोग पर भी चर्चा की गई। दोनों पक्षों ने इस बात पर सहमति व्यक्त की कि इन उपायों से भारत और ग्रीस के बीच पर्यटन को बढ़ावा मिलने के साथ ही उसका विकास होगा।

इस अवसर पर ग्रीस के पर्यटन मंत्री श्री हैरी थियोचौरिस, पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण।

बहुभाषी अतुल्य भारत वेबसाइट का आरम्भ

पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल ने 2 मार्च, 2020 को नई दिल्ली में बहुभाषी अतुल्य भारत वेबसाइट का उद्घाटन किया। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने कहा कि पर्यटन मंत्रालय द्वारा शुरू की गई, अतुल्य भारत वेबसाइट और मोबाइल एप का उद्देश्य पूरे विश्व में भारत को एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में दिखाना है। वर्तमान में पर्यटन मंत्रालय की यह वेबसाइट अंग्रेजी और हिन्दी भाषा में है और आज इसे चीनी, अरबी तथा स्पेनिश भाषा में शुरू किया गया है। वैश्विक प्लेटफॉर्म पर भारत के विभिन्न पर्यटन उत्पादों को प्रदर्शित कर के और पर्यटकों को व्यक्तिगत तथा संदर्भ संबंधी डिजिटल अनुभव प्रदान करके पर्यटकों में भारत के प्रति जागरूकता, आकर्षण तथा अवसर बढ़ाना ही हमारा उद्देश्य है।

बहुभाषी अतुल्य भारत वेबसाइट का दीप प्रज्जवलित कर उद्घाटन करते हुए माननीय पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री।

माननीय मंत्री जी ने कहा कि आज चीनी, अरबी तथा स्पेनिश भाषाओं में अतुल्य भारत वेबसाइट और मोबाइल एप आरम्भ करने का मुख्य उद्देश्य उन देशों के आगंतुकों से जोड़ना है जहां यह भाषाएं मुख्य रूप से बोली जाती हैं। यह वेबसाइट चीनी, अरबी तथा स्पेनिश भाषा में होने से इन क्षेत्रों के पर्यटक भारत के प्रति आकर्षित होंगे। इन देशों से प्रत्येक वर्ष अनेक पर्यटक भारत आते हैं। भारत से भी अनेक लोग पर्यटन तथा दूसरे उद्देश्यों के लिए इन देशों में जाते हैं। इस प्रकार पर्यटकों का आदान–प्रदान एक–दूसरे की संस्कृति को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। 2019 में भारत में 10.9 मिलियन से अधिक विदेशी पर्यटक आए जिसमें से छः लाख चीनी, लगभग दो लाख

लोग अरबी तथा लगभग एक लाख 25 हजार पर्यटक स्पेनिश बोलने वाले थे।

इस वेबसाइट में खानपान और व्यंजन, विरासत, प्राकृतिक तथा वन्य जीव, विलासिता, रोमांचकारी पर्यटन, कला, खरीददारी से संबंधित अनुभवों को शामिल किया गया है।

अतुल्य भारत 2.0 वेबसाइट का उद्देश्य वैश्विक प्लेटफॉर्म पर भारत के विभिन्न पर्यटन उत्पादों को दिखाना और पर्यटकों को व्यक्तिगत तथा संदर्भ संबंधी डिजिटल अनुभव प्रदान करके पर्यटन के प्रति जागरूकता आकर्षण तथा अवसर बढ़ाना है।

वेबसाइट में 2700 से अधिक पृष्ठों में 165 पर्यटन स्थलों की विस्तृत जानकारी दी गई है। इसमें हैं और 28 राज्यों तथा 9 केन्द्र शासित प्रदेशों के विविध आकर्षण समाहित किए गए हैं। इसे चीनी, अरबी तथा स्पेनिश भाषा में भी शुरू किया गया है, ताकि वेबसाइट पर विजिट करने वाले लोगों को भारत को जानने और यहां आने का अवसर मिले। वेबसाइट को निरंतर रूप से नया डिजाइन और विषय दिया जाएगा। यह वेबसाइट अन्य प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में भी उपलब्ध होगी।

इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री योगेन्द्र त्रिपाठी, पर्यटन मंत्रालय की महानिदेशक श्रीमती मीनाक्षी शर्मा तथा मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी, विदेशी प्रतिनिधि और पर्यटन उद्योग के हितधारक उपस्थित थे।

मानव संसाधन विकास,संचार और सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री श्री धोत्रे संजय शामराव 4 फरवरी, 2020 को नई दिल्ली में पर्यटन और संस्कृति राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री प्रहलाद सिंह पटेल से मुलाकात करते हुए

इस अवसर पर ग्रीस के पर्यटन मंत्री श्री हैरी थियोचौरिस को स्मृति चिन्ह के रूप में चरखे की प्रतिकृति भेंट करते हुए माननीय मंत्री जी।

भारत के विभिन्न हिस्सों में फंसे विदेशी पर्यटकों की सहायता के लिए 'स्ट्रैंडेड इन इंडिया' पोर्टल

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार ने भारत में विभिन्न हिस्सों में फंसे विदेशी पर्यटकों को सहायता पहुंचाने के उद्देश्य से एक पोर्टल आरंभ किया है। इस पोर्टल पर अपने देश से दूर भारत में फंसे विदेशी पर्यटकों के लिए विभिन्न सेवाओं से जुड़ी जानकारियां दी गई हैं। इस पोर्टल का नाम 'स्ट्रैंडेड इन इंडिया' है और इसका उद्देश्य विदेशी पर्यटकों के लिए एक सहायक नेटवर्क के रूप में काम करना है।

पूरी दुनिया कोरोना वायरस के चलते अचानक पैदा हुए हालात का सामना कर रही है और यह पर्यटकों विशेषकर दूसरे देशों से घूमने आए पर्यटकों की बेहतरी सुनिश्चित करने की दिशा में किया गया एक प्रयास है। इस क्रम में पर्यटन मंत्रालय लगातार सतर्क बना हुआ है और पर्यटकों की जरूरतों के आधार पर सहायता के लिए विभिन्न पहलों को प्रोत्साहित कर रहा है।

कोविड–19 हैल्पलाइन नं.
91–1123978046 अथवा 1075

हैल्पलाइन ई–मेल
ncov2019@gov.in
ncov2019@gov.com

व्हट्स अप नं. (भारत सरकार की कोविड–19 हैल्पलाइन डेस्क)
+91–9013151515

बी ओ आई हैल्पलाइन
support.covid19-boi@gov.in
011–24300666

पर्यटक हैल्पलाइन
1800 11 1363 अथवा लघु कोड 1363

पोर्टल strandedinindia.com में निम्नलिखित जानकारियां दी गई हैं, जो पर्यटकों की जरूरतों के लिहाज से उपयोगी होंगी :

- कोविड–19 हेल्पलाइन नंबर्स या कॉल सेंटरों से जुड़ी व्यापक जानकारी। विदेशी पर्यटक मदद के लिए इनके माध्यम से संपर्क कर सकते हैं।
- विदेश मंत्रालय के नियंत्रण केंद्रों से जुड़ी विविध जानकारियां और संपर्क के लिए उनके दूरभाष नंबर/
- राज्य आधारित/क्षेत्रीय पर्यटन सहायक संरचना से जुड़ी जानकारियां।
- विदेशी पर्यटकों को ज्यादा जानकारी देने और संबंधित अधिकारियों की मदद करने के लिए हेल्प स्पोर्ट सेक्शन।
- पर्यटन वेबसाइट और पर्यटन मंत्रालय के चैनलों पर यह पोर्टल उपलब्ध है।
- ज्यादा जानकारियों के लिए कृपया strandedinindia.com या incredibleindia.org पर जाएं।

'अतुल्य भारत' पत्रिका में प्रकाशन हेतु पर्यटन क्षेत्र के लेखकों, अनुसंधानकर्ताओं, ब्लॉगर्स, उद्यमियों आदि से लेख आमंत्रित

कृपया ध्यान दें

- लेख का विषय पर्यटन और उससे संबंधित क्षेत्र में किसी सामयिक विषय एवं विकास कार्यों पर आधारित हो।
- साधारणतया लेख अधिकतम लगभग 3,000 शब्दों का हो वस्तुस्थिति के अनुसार अधिक भी हो सकता है। किसी विशेष अवसर पर ऐसे पर्यटन गंतव्य, विशेषकर जिसके बारे में अधिक जानकारी नहीं हो, के लिए भेजे गए लेख में अधिकतम शब्दों का भी स्वागत है। लेख को बोधगम्य एवं सुरूचिपूर्ण बनाने हेतु कृपया लेख के साथ उपयुक्त फोटोचित्र (प्रिंट करने योग्य क्वालिटी के) भी संलग्न करें।
- लेख सरल भाषा में लिखा हो
- ई–मेल से भेजे जाने वाले लेख Open file में तथा फोटोग्राफ, यदि कोई हो .JPG अथवा .PNG में ही भेजें। अन्यथा सामग्री स्वीकार नहीं की जा सकेगी।
- कोई भी लेख/सामग्री PDF में भेजने का कष्ट नहीं करें।
- Whatsapp के द्वारा भेजी गई सामग्री स्वीकार **नहीं** की जाएगी।
- कागज के एक ओर टाइप किया हुआ या स्पष्ट रूप से हस्तलिखित/डाक से भेजे लेख भी स्वीकार्य है।
- लेखक द्वारा भेजे गए लेख एवं फोटोचित्रों/रेखाचित्रों के संदर्भ में कॉपीराइट संबंधी दायित्व स्वयं लेखक का होगा।
- **लेख सामग्री इस पते पर भेजें:**
  प्रबंध संपादक, अतुल्य भारत, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 7वां तल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली–110001,
  ई–मेल: editor.atulyabharat@gmail.com है।

प्रस्तुति- डॉ.विश्वरंजन (Dr. Vishwranjan)
कंसलटेंट, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग
जल शक्ति मंत्रालय भारत सरकार, न्यू दिल्ली
ईमेल- vishwranjan@yahoo.com मो. 9852583535

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग, 36, जनपथ, नई दिल्ली–110001
ई–मेल : editor.atulyabharat@gmail.com
पर्यटक हैल्प लाइन 1800111363 लघु कोड 1363 24x7